पिरामिड के सन्दर्भ से उपाय एवमं प्रभाव

राकेश सी. केजरीवाल

विद्या वचस्पति शोध प्रबंध

Ph.D. Thesis

2020

श्री महर्षी वेदिक महाविद्यालय

उदयपुर—राजस्थान

पिरामिड के सन्दर्भ से उपाय एवमं प्रभाव

विद्या वचस्पति (PhD Thesis) हेतु

शोध प्रबंध प्रस्तुती

श्री महर्षी वेदिक महाविद्यालय

उदयपुर—राजस्थान

विद्यार्थी

राकेश सी. केजरीवाल

द्वारा

प्रा. डॉ. अनिल उपाध्याय

के मार्गदर्शन में

वर्ष २०२०

छात्र द्वारा घोषणा

मै एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि

‘‘पिरामिड के सन्दर्भ से उपाय एवमं प्रभाव’’

शोध प्रबंध विद्या वाचस्पति के **डॉक्टर** की पदवी के लिए प्रस्तुत मेरा मूल काम है और यह प्रबंध किसी भी डिग्री, डिप्लोमा, एसोसिएशन या इसी तरह के अन्य किताब की फेलोशिप के किए आधार नही बनाया है.

यह किसी भी डिग्री या डिप्लोमा के पुरस्कार के लिए किसी भी अन्य महाविद्यालय या संस्थान को प्रस्तुत नहीं कि गई है.

दिनांक: २४/०२/२०२०

स्थान: मुंबई.

....

(राकेश सी. केजरीवाल)

मार्गदर्शक द्वारा प्रमाण पत्र

मार्गदर्शक: **प्रा. अनिल उपाध्याय**

वास्तुशास्त्र विभाग

यह प्रमाणित किया जाता है कि, **''पिरामिड के सन्दर्भ से उपाय एवमं प्रभाव''** शोध प्रबंध विभाग के विभाजन में राकेश सी. केजरीवाल इस छात्र ने **श्री. महर्षि कॉलेज ऑफ वैदिक एस्ट्रोलॉजी** की विद्या वाचस्पति के **डॉक्टर** की पदवी के लिए निर्धारित आवश्यक्ताओं को पुरा किया है.

शोध प्रबंध मार्गदर्शक अनिल उपाध्याय, मेरे द्वारा सीधा पर्यवेक्षण के तहत किया गया है. इस तिथि से पहले किसी भी पदवी या डिप्लोमा के पुरस्कार के लिए ये थीसिस या इसका कोई भी हिस्सा नहीं प्रस्तुत किया गया है.

दिनांक: २४/०२/२०२०

स्थान: मुंबई.

....

(प्रा. अनिल उपाध्याय)

स्वीकृति के लिए अनुमोदन

शोध प्रबंध का शिर्षक

पिरामिड के सन्दर्भ से उपाय एवमं प्रभाव

द्वारा प्रस्तुत

राकेश सी. केजरीवाल

विद्या वाचस्पति की डिग्री के लिए

श्री महर्षि कॉलेज ऑफ वैदिक ऍस्ट्रोलाजी

मुल्यांकन और अनुमोदित है.

....

प्रा. अनिल उपाध्याय
मार्गदर्शक

प्रमुख परिक्षक
श्री. महर्षि महाविद्यालय

अभिस्वीकृति

आज पिरामिड का नाम सात आश्चर्यों में शामिल है. इन पिरामिडो में अनगिनत रहस्य आज भी दफन है और साथ ही साथ दफन है दुनिया के भविष्य को लेकर की गयी भविष्यवाणियां.

वास्तु विद् होने के नाते मैने वैदिक वास्तु (पिरामिड) में शोध किया है. शोध कार्य हेतु मैने कई प्राचिन एवं नवीन विद्वानों द्वारा लिखित किताबों का अध्ययन किया.

मै विशेष रूप से सर्वप्रथम मेरे शोध कार्य को पूरा करने के लिये 'श्री महर्षी वैदिक महाविद्यालय' द्वारा नियुक्त 'प्रा. डॉ. अनिल उपाध्याय' का सहृदय अभिनंदन करना चाहता हुँ जिन्होने मुझे हर क्षण इस शोध कार्य को पूर्ण करने में मेरी सहायता की.

इनके अतिरिक्त मैं प्रोफेसर जितेन भट्ट, डॉ धारा भट्ट, पं. कमल श्रीमाली, डॉ भोजराज द्विवेदी, डॉ. बी. आर. चौधरी, श्री. संजीव अग्रवाल, वास्तुइंटरनेशनल.कॉम, पिरामिडएनिव्हेअर.कॉम, श्री दिलिप शाह, पं.गोपाल शर्मा आदि महानुभावों का भी सहेदिल धन्यवाद करना चाहता हुँ जिन्होने पिरामिड की रहस्यमयी बातों को उन्होने उजागर किया है, इस शोधप्रबंध के दौरान उनका अमूल्य सहयोग भुलाया नहीं जा सकता.

साथ ही साथ मै 'श्री महर्षी वैदिक महाविद्यालय' के डायरेक्टर श्री विकास चौहान का भी सहदिल से आभार प्रकट करना चाहता हुँ जिन्होने मेरे शोध को मंजिल तक पहुँचाने के लिए एक आदर्श मंच दिया जिस के माध्यम से मै इस मुकाम को हासिल कर सका.

राकेश सी. केजरीवाल

मुंबई

विषय सूची

● प्रारंभिक

१. शीर्षक पृष्ठ १

२. छात्र द्‌वारा घोषणा २

३. मार्गदर्शक द्‌वारा प्रमाण पत्र ३

४. अनुमोदन ४

५. अभिस्वीकृती ५

६. विषय सूची ६

७. सार ७

● शोध–पाठ

१. परिचय ३२

२. साहित्य की समीक्षा ७९

३. सामग्री और विधि ८३

४. अवलोकन और परिणाम ९४

५. विचार – विमर्श ११२

६. सार और निष्कर्ष १२३

७. ग्रन्थसूची १२८

८. अनुबंध – शब्दावली १३०

● छात्र परिचय १३५

सार

पिरामिड के सन्दर्भ से उपाय एवमं प्रभाव

पिरामिड–अदृश्य शक्ति केन्द्र

पिरामिड का सरल अर्थ है पायरा + मिड, पायरा अर्थात अग्नि और मिड अर्थात केंद्र. प्राचिन समय में विद्वान एक ही शब्द या वाक्य में पुरा समीकरण रख देते थे. इसलिए वह इतना सरल नही हो सकता है.

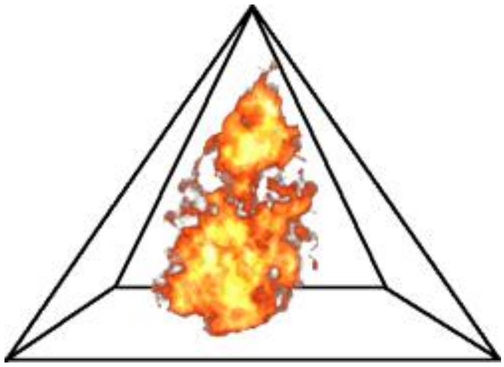

पायरा + मिड

संस्कृत में आग को अग्नी कहते है तथा इसके अनेक अर्थ है. कोशिकाए शरीर की जीवनी शक्ति के संदर्भ से अप्रिका अर्थ प्रारंभिक तेज, ऊर्जा हमारी फ्लापी डिस्क के समान ही उत्पत्ति विषयक सक्रियता वर्धक के समान है. मिश्रवासी विद्वानो ने अग्रि का गम्भीर अर्थ पहले ही समझ लिया था और उसके लिए पिरामिड का सुझाव दिया था. उनके अनुसार पिरामिड दो भागों में बटा है – पायरा और मिड.

पायरा यानी अग्नि मध्य या केंद्र स्थित संचालक मिड यानी मध्य में स्थित केंद्र अति महत्वपूर्ण है जो आंतरिक रहस्यों को प्रकट करने वाली कुंजी है. अद्यपि आज भी पिरामिड के संबंध में बहुत कम जानते हे पिरामिड वैज्ञानिक आधार पर अभिकल्पित ऐसा यंत्र है जिसमें समग्र चिंतन भी है. नक्षत्र, ग्रह, सूर्य, आकाशगंगा, पृथ्वी का अंश, चुम्बकीय उर्जा, शरीर, मन, आत्मा और जिवन शक्ति इन सबका पूर्ण ज्ञान पिरामीड निर्माण में दिखाई देता है. ज्ञान की यह पूर्ण रचना है.

आजकल हमारा विश्वास वैदिक ज्ञान में कम और विज्ञान में ज्यादा हो गया है. लेकिन ३०० वर्षो का वैज्ञानिक अनुसंधान और उसकी धारणा अनंत काल से सार्वभौमिक ज्ञान

के महासागर के सामने सिर्फ एक छोटी बूंद जैसी है. वैज्ञानिक अनुसंधान के पहले एक सार्वभौमिक ज्ञान अस्तिव में था और आज भी यह सार्वभौमिक व्यवस्था को नियंत्रण करता है.

पिरामिड में इतनी शक्ती क्यों है इसको समझने के लिए हमे कुछ मुल वैज्ञानिक तत्वों को समझना जरूरी है जो हमारे वैज्ञानिकोंने अपने परिक्षण द्वारा सिध्द कर दिया है.

आकाशगंगाा अरबो सितारो की एक प्रणाली है. हमारा सौर मंडल भी ऐसी ही एक प्रणाली का हिस्सा है. आकाशगंगा एक अक्ष द्वारा संचालित होता है. इसी तरह हमारे सौर मण्डल में सूर्य का केंद्रिय अक्ष है.

प्रत्येक प्राणी और वस्तु उसके अपने केन्द्रीय अक्ष द्वारा संचालित होता है. सृजन व वास्तु में केन्द्रीय अक्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है. लेकिन आधुनिक वास्तु विद्व इस महत्वपूर्ण कारक पर ध्यान नही देते है. यह समृध्दि को खोलने की सबसे जरूरी सर्वोत्तम कुंजी है. पिरामीड वास्तु की इस उत्कृष्ट अवधारणा में समृध्दि के श्रोत पर ज्यादा ध्यान दिया गया है. हमारे संपूर्ण कल्याण के लिये केंन्द्रिय अक्ष उत्तरदायी होता है. पिरामीड का निर्माण वर्षो पहले शायद इसी मूल अवधारण की वजह से हुआ था. प्रत्येक वस्तु को देखने पर उसके रंग, आकार एवं स्थिति का हमारे शरीर, मन एवं जीवन पर एक विशेष प्रभाव होता है.

वैसे तो हमारे आस पास की वस्तुएं बहुत समय से आपके चारो तरफ उपस्थित है, लेकिन उन्हे निर्जीव एंव प्रभावहीन समझकर हमने उनके अपने उपर पडने वाले प्रभाव पर ध्यान ही नही दिया. हम अपने सभी कार्यो के लिये अपनी बाह्य चेतना अर्थात अपनी इन्द्रियों पर निर्भर करते है. हमारे अन्त:करण को हमारा वास्तु भी प्रभावित करता है.

अपने चारों ओर के वातावरण से जो संकेंत हम ग्रहण करते है, उसी से हमारा अन्त:करण विकसित होता है तथा हमें अपने जीवन को सकारात्मक दिशा में मोडने के लिये प्रेरित करता है. हम सभी पिरामिड की आकृति से परिचित है. यह वस्तु का एक बेजोड नमुना है. इसका विशेष अतुल शक्ति का भण्डार है.

यह शक्ति जीवनदायिनी ऊर्जा से भरपूर है, जो मानव के लिए कल्याणकारी है. अत: हमे आवश्यकता है, उसके विषय मे ज्ञानार्जन की ओर उसे प्रयोग मे लाने के प्रति सकारात्मक सोच की.

पिरामिड बनाने का आसान तरीका

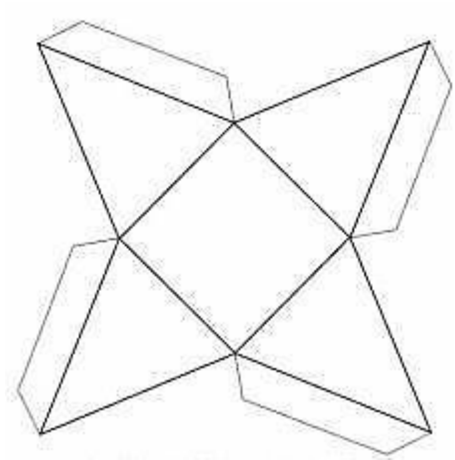

. चार बराबर त्रिकाणो के किनारो को टेप द्वारा जोड दे
. पिरामिड की गुणवत्ता भुजाओं में एक चौडी सतह चिपकाकर बढाई जा सकती है.
. चित्र में दर्शाये गये किसी भी अनुपात को लेकर पिरामिड बना सकते है.
. पिरामिड को रखत समय इस बात का ध्यान देना चाहिये की उसकी कोई भी सतह उत्तर–दक्षिण ध्रुव के समान्तर होनी चाहिये

पिरामिड का आकार तथा आकृति चाहे कोई भी हो उसका मूल ढांचा गीजा के पिरामिड की तरह होना चाहिये. पिरामिड की दक्षिणी भुजा शीत, उत्तरी भुजा उष्णता, पश्चिमी भुजा अंधकार तथा पूर्वी भुजा आलोक का सुचक है. त्रिकोणीय भुजाए, त्रिगुणी आध्यात्मिक शक्ति की सूचक है.

वास्तव में गीजा के पिरामिड आज से १०,००० वर्षो पूर्व ऐसे व्यक्तीयों द्वारा बनाये गये थे जो मिस्रवासी नही थे. इन पिरामीड्स मे आरंभ से लेकर १९९८ तक का मानव जाति का इतिहास छिपा है. यह इतिहास गणित और खगोलीय भाषा में लिखा गया है.

माना जाता है कि पिरामिड का संबंध दोनो प्रकार की ज्यामिति से हो निचे दी गई आकृतियों के अनुसार एक क्यूब को ६ पिरामिडों में बांटा जा सकता है. जिसमे से प्रत्येक की ऊंचाई एक क्यूब के बराबर होगी. विशाल पिरामिड की लंबाई डायनामिक ज्यामिती तथा आकृति स्टेटिक ज्यामिती का सूचक है.

पिरामिड नये जमाने की सोच वाले लोगों के अनुरूप समय की बचत करने और आसानी से प्रयोग मे लाये जाने वाला है. विज्ञान के अनुसार संपूर्ण सार्वभोमिक स्वरूप

वृध्द्र स्तर (जैसे आकाश गंगाए) और लघु स्तर (जैसे अणुओ) पर काम करता है. यह एक गणितीय मॉडल जो समय और स्थान को एक ही साथ जोड देता है.

संपूर्ण ब्रम्हाण्ड समय स्थान और उर्जाकण की परस्पर क्रिया है. हर ब्रम्हाण्ड का सुक्ष्म ब्रम्हाण्ड है.

पवित्र ग्रंथ 'श्रीमत भगवत गीता' में यह कहा गया है कि मानव शरीर सभी भौतिक और आध्यात्मिक लक्ष्यो को पाने का एक माध्यम भर है. प्रत्येक मनुष्य लिये एक दीर्घ कालीन प्रोग्राम है. यहॉ ५०% पूर्व प्रोग्राम है और ५०% बाकी हमारे हाथो में है. बदलाव की अपनी शक्ति का प्रयोग करो. अपने जीवन से बेहतर परिणाम पाने के लिये अपने आप को वास्तु संवृति के अनुकुल बनाना सीखें.

वास्तव में गीजा के पिरामिड आज से दस हजार वर्ष पूर्व मनुष्य का निर्माण प्रबंधन एवं कल्याण के लिए एक संपूर्ण प्रणाली तैयार की गयी है. यह अद्भुत प्रणाली हमारे समझ से परे है. लेकिन वेदिक गुरूओने अपनी अलोकिक शक्तियों की मदत से हमारे बेहतर जीवन और आध्यात्मिक लक्ष्यों को कैसे प्राप्त करना है, यह समझने की कोशिश की है.

पृथ्वी का संचालन दो छारो द्वारा होता है. फाछोर है सूर्य और माछोर है चंद्रमा.

पिरामिड उनकी नक्काशी, सुसज्जित मकतार और मंदिर और प्रकृति के नियमों के संबंध में उनकी गहरी समझ उनके महान ज्ञान और जागरूकता को प्रदर्शित करते है. पौराणिक और आध्यात्मिक विश्वास, प्रतिकात्मकता एवं गुढ रहस्य अंत: दृष्टि के साथ ही उनकी आध्यात्मिक चेतना की गहराई का दिग्दर्शन कराते है. यह उन्होने इसलिए किया गया होगा जिससे कि उनकी प्रतिक भाषा को समझने वाला ही उसे ग्रहण कर सके और इस प्रकार उनके गृढ रहस्यों, जादूई करिष्मों का उपयोग मानवता के हित में किया जा सके.

मिश्रवासी केवल लेखन, जादू, अंकगणित, रेखा गणित, खगोल और औषधि विज्ञान में गहन ज्ञान ही नही रखते थे मगर वे उसे सुरक्षित रखना भी जानते थे. उनके चित्र, पेंटिंग, स्मारक, मूर्तिकला, आभूषण और सुरक्षिंत रखे गये शव या ममी भविष्य की पीढियों को ज्ञान देने के लिए अच्छी तरह से सुरक्षित रखे गए है.

कार्य का स्थान

पाश्चात्य शोधकार्ताओं ने बताया की पिरामिडो को कब्र या मकबरो के लिए बनाया गया, परंतु यह तथ्य काल्पनिक है. बल्कि प्रमाणो के आधार पर मिश्री पिरामिडो का निमार्ण निम्न उद्श्यो से किया गया:

१. आत्म साक्षात्कार कर मोक्ष को प्राप्त के उद्देश्य से पिरामिडो का निर्माण हुआ.
२. पिरामिड के उपरी त्रिकोण के तीनो कोण वर्तमान भुतकाल तथा भविष्यकाल के प्रतीक है. ये कोण कुण्डली के लग्न, पंचम, नवम भाव भविष्य का तथा तवम भाव भुतकाल का प्रतिनिधित्व करता है.
३. मिश्र की अत्यन्त गर्म जलवायु में वेदो में निर्दिष्ट त्रिकाल संध्या संभव नही थी. यह कृत्य पिरामिड मे शांत एवं शीतल वातावरण में सम्यक रूप से संपादित होता था.
४. पिरामिडो की बाहरी संरचना ऐसी है कि उन पर मरूस्थीलय आंधियों का कोई प्रभाव नही होता है. उनमे निवास करने वाले मौसम की बदमिजाजी से सुरक्षित रहते थे.
५. दैत्य गुरू शुक्राचार्य द्वारा अविष्कृत 'मृत संजिवनी' विद्या की साधना पिरामिडो में होती रही है.

ज्यामितीय आकृतियो मे कोई भी आकृति बनाने के लिये तीन सीधी रेखायें चहिये, त्रिकोण एक आधारमुल ढाचा है. त्रिकोण गतिविधि प्रेरणा और ऊर्जा का प्रतिक है.

हम जितना प्रकृति के निकट जाते है, जीवन उतना ही प्रसन्न होता जाता है. अब हम उर्जा के प्रति जागरूक हो चुके है जो हमारे पूर्वजो को विभिन्न आकृतियो के आवासीय स्थलो से मिलती थी.

पिरामिड अपनी एक निश्चित सीमा में काम करता है. हजारों लागों ने इसके प्रयोग से सकारात्मक नतीजे पाएं है. यदि हम सोचते है कि पिरामिड सारे हालात अपने आप बदल देगा तो यह एक अंधविश्वास है.

स्वस्थ रहने के दो आधारभुत मार्ग है.

१. बाह्य ध्रुविय तकनीक – एलोपैथी
२. अंत:ध्रुविय तकनीक – योग, ध्यानश्य प्राकृतिक चिकित्सा.

आधुनिक विज्ञान प्रयोगशाला और भौतिक प्रभाओं पर आधारित ध्रुविय तकनीक के रूप मे विकसित हुआ है.

उपस्कर (फर्नीचर)

घर व कार्यालय में प्रयुक्त अनेक सजावटी व आवश्यक उपकरण अपनी विशेषता अनुसार हम पर अपना प्रभाव डालते है.

चूंकी हम अपने जीवन के ८० प्रतिशत समय में इनका उपयोग करते है, तो इनका हमारे साथ सांमजस्य होना बहुत ही आवश्यक है. ये उपकरण हमारी ऑफिस टेबल, बेड या कंप्यूटर हो सकते है. पायरा वास्तु द्वारा उनके वास्तु दोषो का सुधार संभव है.

वाहन

आज के युग में इलेक्ट्रानिक व स्वयंचालित उपकरण मानव जीवन की प्रमुख अंग बन गये है. अतः इन पर विशेष ध्यान देना अनिवार्य है.

हमारी कार, घर या फॅक्टरी मे उपयोगी किसी भी मशीन की हमारे या अन्य कार्यकर्ताओ के साथ सामंजस्यपूर्ण स्थिति बनाने मे पायरा वास्तु चमत्कारिक कार्य करता है.

मनुष्य

पायरा वास्तु के द्वारा मनुष्य स्वयं को भी नकारात्मक ऊर्जा के दुष्प्रभावों से बचा सकता है तथा नकारात्मक ऊर्जा से भी सामंजस्य व संतुलन स्थापित कर सकता है इस विधि के द्वारा उपचार इतना प्रभावी है कि इससे वह आत्मिक, मानसिक व शारिरिक संतुलन प्राप्त कर सकता है.

पायरा वास्तु, स्वास्थ्य, धन और प्रतिष्ठा मे वृध्दि के उद्देश्य से भाग्योदय, संतान सुख तथा सौभाग्य प्राप्ति के लिए नए रास्ते खोलने वाला बिल्कुल नया दृष्टिकोण है.

भवन

स्थान के अभाव में घरों की आकृति आजकल काफी जटिल एंव सामान्य होती जा रही है. भौतिक रूप से दीवारों को तोडना या उन्हे स्थानांतरीत करना असंभव है.

पायरा वास्तु कमरों की स्थिती परिवर्तन का आभास कर सकती है तथा उनकी आंतरिक ऊर्जा को बढा सकती है.

इनको घर, फॅक्ट्री, विद्यालय, मनोरंजन स्थल या व्यायामशाला इन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है व प्रत्येक की अलग अलग उपचार प्रक्रिया है.

भुमि

यह घर, खेत, बागीचा, आध्यात्मिक स्थान, अस्पताल, औद्योगिक इकाई या श्मशान कुछ भी हो सकता है.

पायरा वास्तु के द्वारा इनमे इनकी उपयोगिता के आधार पर सामंजस्य पाया जा सकता है.

कार्य पद्धत्ती

प्राचीन मिश्र के अंक अत्यन्त महत्व के है. उनमे गुप्त अर्थ छिपे हुए है. मिश्र के लोंगों को वजन और दूरी नापने की कुशल विधि ज्ञात थी. आधुनिक गणित में भी उनकी कुछ गणताएं प्रयुक्त की जाती है. जैसे ३६०˚, ६० सेकन्द का मिनट, ६० मिनट का एक घंटा, आदि. धरती के घुमने की भी उनके पास विकसित जानकारी थी.

इसलिये पृथ्वी के मध्य मे पिरामिड बनाये गये. उन्होने पाई और फाई का भी प्रयोग पिरामिड निर्माण मे किया था जो आज के विशेष रूप से निर्देशित कम्प्युटर्स ही कर पाते है. पृथ्वी का माप पाई (π) के ज्ञान के बिना संभव नही है. पाई रेखा गणित का स्थिर माप है जो वृत भी परिधि की गणना में उपयोग में आता है.

फाई— फाई भी पाई की तरह न समाप्त होने वाला अनुपात है. यह रहस्यपुर्ण अंक भी अत्यंत प्राचीन है और जीवन शक्ति से जुडा हुआ है.

हमारे चारों ओर सैकडो आकृतिया है. सभी का अध्यन करना असंभव है. व्यावहारिक दृष्टि से पंच तत्वों से जुडी हुई पांच आकुतियों को समझने का प्रयास हम करेंगे.

१. नुकीला शंकु समान, पिरामिड आकार का त्रिभुज (अग्नि तत्व)
२. वर्गाकार, गोल, गुंबद, गोलाई युक्त (धातु तत्व)
३. वृत्ताकार, गोल, गुंबद, गोलाई युक्त (धातु तत्व)
४. तरंगे, सर्पाकार, लहरें (जल तत्व)
५. लम्बा आयातकार या स्तम्भ या स्तम्भके समान उंचा (काष्ठ तत्व)

अन्य आकृतियॉ इन्ही आकृतियों के क्रम परिवर्तन और संयोजन से बनती है. स्वास्थ्य और समृध्दि के लिए हम घर या कार्यालय में इन आकृतियो के गुणो का लाभ ले सकते है. इन जीवन इकाइयों से आपके आसपास का आकलन कर उसका परिणाम देखिए.

आदर्श वस्तु कौनसी है जिससे पिरामिड यंत्र बनाया जा सकता है.

चूंकि हम सूक्ष्म स्तर पर ही कार्य कर रहे है, अत: आकाश तत्व अधिक महत्वपूर्ण है बजाय इसके कि किस वस्तु की उपयोग किया गया है. पिरामिड के लिए सबसे उपयुक्त वस्तु वह है जो प्राकृतिक हो जैसे महान पिरामिड के पत्थर, परंतु हमे वास्तु के विभिन्न ९१ खण्डोंकी आवश्यकता है, उन्हे पत्थर से बनना व्यवहारिक रूप से संभव नही है. इसलिए न्यूट्रोन पोलीमर का उपयोग किया जाता हे.

यंत्र धातु के बनाऐ जाते है, फिर पिरामिड यंत्र क्यों नही

पिरामिड यंत्र केवल यंत्र नहीं है बल्कि पिरामिड और यंत्र का शक्तिशाली समुच्चय है. वे आकाश और सुचना के विकासित सिध्दांत पर काम करते हे. साथ ही जब हम पिरामिड का अध्ययन करते है, तो कोई धातु का बना हुआ नही मिलता है. ये या तो पत्थर के है, या कोई कुचलकर वस्तु सके बने हुऐ है. इसलिए परम्परांगत यंत्र धातु के हो सकते है, पर पिरामिड यंत्र नही.

पिरामिड वास्तु काम कर रहा है यह कैसे जानेंगे:

स्थितियां बदलती दिखाई देंगी. वे सूक्ष्म स्तर पर भी हो सकती है. उदाहरणार्थ आपकी प्रसन्नता बढ सकती थी या जीवन के प्रति आपके दृष्टिकोण में बदलाव आ सकता है.

अधिक स्पर्श करने वाले ढंग से आपको अप्रत्याक्षित रूप से कोई दूरभाष संदेश प्राप्त हो सकता है जिसमे नौकरी या पार्टी का आमंत्रण है.

कोई यंत्र है जिससे पिरामिड के प्रभाव का मापन किया जा सके.

हॉ. इसका निश्चित रूप से मापन किया जा सकता है. हमारे पास कई प्रकार के यंत्र, जैसे क्रिलियन फोटोग्राफी मशीन, बायो सेंसर यंत्र, जैव संवेदक यंत्र, जेव नल, मापक यंत्र (बायोर्फोस मोटर) आदि है. साथ ही कुछ सरल यंत्र जैसे डाउजिंग पेंडुलम, एल और वाय आकार की छडों पर इनका उपयोग करने के लिए अच्छे अनुभव और जानकारी की आवश्यकता है.

चूंकि ताम्र सुचालक है, अत: क्या वह अधिक ब्रम्हाण्डीय ऊर्जा को ग्रहण नही करेगा

पहले तो हमें यह समझना चाहिए की आकाश तत्व के स्तर पर काम कर रहें है हमे मूलत: विद्युत चालक गुण नही चाहिए. और सूक्ष्म स्तर को ब्रम्हाण्डीय ऊर्जाएं किसी भी चालक या कुचालक साम्रगी मे प्रवेश कर सकती है. इस लिए ताम्र की सुचालकता की पिरामिड यंत्रों में कोई विशष भुमिका नहीं है.

सभी पिरामिड यंत्र श्वेत रंग ब्रम्हाण्डीय स्तर पर सभी रंगों को ग्रहण कर सकता है. अत: सभी दृश्य या अदृश्य रंग उससे संवाद करते है. इस लिए किसी रंग विशेष की आवश्यकता नही ं है. पर यदि किसी उपचार पध्दति के अनुसार कोई विशेष रंग चाहता है तब वहा रंगीन पिरामिड का यंत्र में कोई विशेष भूमिका नही है.

पिरामिड की ऐतिहासिक पृष्टभुमि.

१. डेजर स्तेप पिरामिड: यह लगभग २६५० ई. पू. में तैयार हुआ है इसकी ऊंचाई ६२ मीटर है और बनाने में चुने के पत्थरों का उपयोग किया गया है.
२. सेन्क बेस्ट पिरामिड: इजिप्ट के डाउसोर में आनेवाले इस पिरामिड की ऊचांई १०१.१ मीटर है. ई.पू. २६०० में बने हूए इस पिरामिड मे चुने के पत्थरों का उपयोग किया गया है.
३. चियोप्सना ग्रेट पिरामिड: गीनिज बुक के अनुसार मेक्सीको के अग्णिकोण में ९०९ की.मी. दूर स्थित है. यह ५४ मीटर ऊॅचा है. इजिप्ट के चियाप्स नामक

पिरामिड का घनफल २,५६,८०० घन मीटर है. सबसे बडा एक खंडीय पिरामिड भवन इजिप्ट के अतर्गाला में आनेवाला तीसरा पिरामिड है इसका वजन २९० टन है. इसका निमार्ण ई.पू. ८०० में हुआ था.

दि ग्रेट पिरामिड ऑफ गिजा:

भारत के तरह ही मिश्र की सभ्यता भी बहुत पुरानी है. युँ तो मिश्र के कुल १३८ पिरामिड है और काहिरा के उपनगर गीजा में तीन लेकिन सामान्य विश्वास के विपरित सिर्फ गीजा का ग्रेट पिरामिड ही प्राचीन विश्व के सात अजूबो की सूची में है. यही एक मात्र ऐसा पिरामिड है जिसे काल प्रवाह भी खत्म नही कर सकता. यह पिरामिड ४५० फीट ऊचा है और ४३ सदियों तक यह दुनिया की सबसे बडी और ऊंची संरचना है. इसका निर्माण करीब २५६० वर्ष ई.पूर्वी मिश्र के शासक खुफु के चौथे वंश द्वारा अपनी कब्र के तोर कराया गया था. इसे बनाने मे करीब २३ साल लगे. इसे लगभाग ४००० लोगों ने ३० वर्षो में बनाया.

ग्रेट पिरामिड को गणित की जन्मकुंडली भी कहा जाता है. जिससे भविष्य की गणना कीया जा सके. इसकी ऊचाई ९१.७ मीटर है और इसका बाहय आवरण चुने के पत्थरों से बना हुआ है.

मिश्रवासियों ने अपनी परम्परा को बहुत संजोग कर रखा है, जिसने आज की पीढी को महान मार्गदर्शन दिया है. उनके अभिलेक, आशा, आभूषण, ममीज, मंदीर, गुंबज आदि पर बने चित्रो ने सदैव अपना उत्कृष्ट कला और वास्तुशिल्प का प्रदर्शन किया है. मिश्रवासियों को सर्वाधिक धार्मिक कहा जा सकता है, जिन्हो ने अपने प्रियजनों के मर जाने पर मंदिर—मस्जिदों का निर्माण किया, क्योंकि वह मृत्यु को जीवन का अंत नही मानते थे.

उन्होने अपने देवी–देवताओं को सम्मान देने के लिए अपने राजा जिसे उस समय में फरोह (Pharoaha) कहा जाता था के मृत शरीर को संरक्षित करने के लिए पिरामिड बनाए गए थे.

प्रचिन मिश्र के सभी मुख्य नगरों व शहरों के अपने–अपने देवी–देवता हुआ करते थे, जिन्हे अक्सर किसी पशु रूप में पूजा जाता था.

प्रमुख ९ पिरामिड्स तृतीय और चर्तुथी शताब्दी के काल में बनाए गये. ९ का अंक मिश्र वासियों के लिये बहुत महत्वपूर्ण था क्योंकि उनकी मान्यता के अनुसार ९ का अंक सृष्टि रचयर्ता का है.

प्रश्न यह भी उठता है कि जब भारतीयों को पिरामिड की जानकारी सर्वप्रथम थी तो उसका निर्माण भारत में क्यों नही हुआ इसके कुछ कारण निम्न लिखित है जिनका तर्क दिया जा सकता है.

१. भारत में वनस्पति एवं परिवर्तनशील जलवायु के कारण इनकी आवश्यकता महसुस नहीं हुई हो.
२. हिमालय जैसे पर्वतों की विशाल कंदराए अध्यात्म चिंतन के लिए अनुकूल रही हो.
३. पिरामिड निर्माण का उद्देशय शव को सुरक्षित रखना माना गया तथा हिन्दू धर्म में शव को जलाया जाता है इसलिए इसकी कम आवश्यकता आंकी गई हो.

पूजा स्थल

पौराणिक विचारधारा भी पूजा–स्थल के ढांचे तथा आकृति विशेष से संबंध रखती है. प्रत्येक आकृति इतनी सावधानी से बनाई गई है ताकि यह ऊर्जा को अपने भीतर लेकर संतुलन तथा तालमेल बना सके. निम्न पूजन स्थलों की आकृतियां हमारे दृष्टिकोण का प्रभाव है.

गूढ अनुभव

सिकन्दर जब राजाके रहस्यात्मक कक्ष में गया तो उसे अवर्णनीय अनुभव हुए. ऐसे ही अनुभव दूसरों को भी हुए पर जब तक राजा के कक्ष को मैने स्वयं नही देख लिया तब तक उन कहानियों में भला मुझे विश्वास कैसे हो सकता था?

मगर उस कक्ष में प्रवेश करते ही स्वाभाविक रूप से मेरा ध्यान लगने जैसी स्थिति हो गई. वहॉ कुछ अलग ही अनुभव और अनुभूति हो रही थी जिसका कि वर्णन नही किया जा सकता. अंदर ही अंदर विचार किया कि ऐसा बहुत कुछ वर्णन अभी नहीं मे कहा गया है.

महान पिरामिड और राजा के कक्ष के सही अनुपात का परिणाम है यह अद्‌भुत प्रभाव.

भूमिका: इस प्रकृति के ऐसे अनेक चमत्कार है, जो लोगों की समझ से परे है, और कई, मानवकृत कार्य भी चमत्कार से कम नहीं है.

ऐसे ही इस संसार में एक मानव निर्मित करिश्मा है, 'मिश्र के पिरामिड', आज इनकी गणना विश्व के सात महान आश्चर्यो में की जाती है.

ये पिरामिड हजारों वर्षो पहले बनाये गये थे, पिरामिड सदैव से उन लोगो के लिये रहस्यमयी एंव आकर्षण का केन्द्र रहे है, जिन्होने इस पर शोध करना चाहा है.

डन सभी के सतत शोध कार्यो एवं अथक प्रयासों से हम जो निष्कर्ष निकाल सकते है. वो यही है की पिरामिड का अर्थ है 'शक्ति' एवं 'उर्जा'.

पिरामिड का आकार शंकु के समान है, इसलिए पिरामिड शिखर ब्रम्हांडीय उर्जा विशेष की खींच लेते है. यह अन्दर प्रविष्ट, ऊर्जा, परिवर्तन के नियमानुसार केंद्रिय उर्जा का निर्माण करती है तथा उन्हे चारों कोणे से बाहर फेंकती है, जिसके कारण वहा पर व्याप्त नकारात्मक प्रभाव को मिटाकर सकारात्मक प्रभाव बढा देती है.

इस लिए पिरामिड में रखी वस्तुऍ अधिक पुष्ट व प्रभावशाली होती है.

मिश्र के महान पिरामिडों में ब्रम्हाण्डीय ऊर्जा का प्रभावशाली ढंग से प्रयोग कर शवों को हजारों वर्षों तक सुरक्षित रखने की कला को प्रयोग में लाया गया था.

पिरामिडों की विशेष संरचना को देखते हुए हमें यह ज्ञात होता है कि उस समय विज्ञान एवं वास्तु शिल्प अपने विकास के चरम पर थे, उस समय के वैज्ञानिकों ने जो पिरामिडो के निर्माण में संलग्न रहे होंगे, पिरामिड के अविष्कार में प्रकृति से प्रेरणा ली होगी.

हम देखते है कि इस प्रकृति में जीवन किसी भी रूप में हो उसमें एक तारतम्य, एक लय है. उसमें उपस्थित आकारो मे एक जयामितीय समानता है. चाहे वह पेड पौधे, फुल—पौधे, फुल—पत्ती, फल हो या जानवर हों या स्वयं मनुष्य हो, सभी के आकारों में जयामितीय संतुलन है.

मानव शरीर इस संतुलन का बहुत बडा उदाहरण है. यदि शरीर के मध्य एक सीधी रेखा खींचे तो शरीर के सभी अंग ज्यामितीय रूप से एक संतुलन में स्थित होते है.

जो भी अंग जोडे में उपस्थित है वह मध्य रेखा से समान दूरी पर एक समान ऊॅंचाई पर स्थित है.

पारांगत चार कोने तथा शिखर के कोने सहित पंचकोणीय पिरामिड में ऊर्जा के लक्षण प्रत्यक्ष देखे जाते है.

पिरामिड के केंद्र स्थान पर या किंग्स चेम्बर में ऊर्जा की विकिरणे एकत्रित होती है और अन्त में तीव्रतम समाप्त संतत्प ऊर्जा उत्पन्न होती है.

अन्य रूप में इसे इस प्रकार समझा सकते है कि इस आकार के पॉचो कोनो से एक विशिष्ट प्रकार की ऊर्जा प्रवाहित होती है जो पिरामिड की एक तिहाई ऊॅंचाई पर आकर इकट्ठी होती है.

जिस श्रेत्र में यह ऊर्जा एकत्रित होती है, उसे 'फोकल ज्वाइंट' कहते है. इसी ऊर्जा से किंग्स चेम्बर में स्थित कण अवशोषित होकर इस ऊर्जा को कई गुणा बढा देते है. यही पिरामिड के कोणों से प्रवाहित होकर, पिरामिड के चारों ओर फैलती है.

यह आकृति उर्जा को विशेष रूप से ग्रहण कर कई गुना बढा देती है, जिससे इसके भीतर तथा इसके चारों और ब्रम्हाण्डीय ऊर्जा का धनत्व बढ जाता है और यह अपने भीतर तथा आस—पास उपस्थित सजीव निर्जीव वस्तुओं पर सकारात्मक प्रभाव डालती है.

मिश्र की प्राचीन संस्कृति ने यह सिध्द किया कि 'पिरामिड' के निचे रखी हुई वस्तुएं विकृत नही होती, वह ज्यों की त्यों बनी रहती है.

हिन्दुओं के मन्दिर के गुम्बज की व्यवस्था भी तो वही है, जो पिरामिड में है. अपितु गुम्बज में ध्वनि विज्ञान की मान्यताएॅ ज्यादा मुखरित होती है.

उसके नीचे रखी हुई प्राण–प्रतिष्ठित मूर्ति सदैव जाग्रत रहती है.

गिरजाघरों एवं गुरूद्वारों का गुम्बज को उल्टा करने पर वह भी इस तथ्य को उद्घाटित करता है.

पिरामिडनुमा मन्दिर के, गुम्बज को उल्टा करने पर यह हवन कुण्ड बन जाता है.

यज्ञकुण्ड के हवन में मन्त्रपूर्वक डाली गई वस्तु अनंत गुणित होकर वायुमण्डल के कण–कण व अणु–अणु को सर्वोत्तम ढंग से प्रभावित करती है.

औचित्य और फायदे

पिरामिड– एक अबुझ रहस्य

सतत शोधकार्यों एवं वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों के बावजूद पिरामिड विषय पर रहस्य की एक पर्त बरकरार है. हम आज भी अनभिज्ञ है कि इनका निर्माण कैसे संभव हुआ. यह भी आश्चर्य का विषय है कि मिश्रवासियों ने अपनी तकनीक और विधि का कोई अवशेष नहीं छोडा. हमारे पास उपलब्ध जानकारी सिर्फ कल्पना पर आधरित है.

यह क्यों बनाए गए? इसी आकृती को ही क्यों चुना गया? यह किस प्रकार कार्य करता है? पिरामिड क्या है?

क्या यह देवी–देवताओं द्वारा दिया गया कोई संदेश है? क्या यह पृथ्वी के भूत और भविष्य का संग्रहालय है? क्या यह अदृश्य अलौकिक शक्ति को संग्रहित करने की कला है या फिर कोई अंतरिक्ष प्रयोगशाला या ज्योतिषीय सर्वेक्षणशाला?

अमेरिका की सरकारी मुहर पर पिरामिड का चित्र अंकित है. का चित्र अंकित है. जिससे पश्चिम में पिरामिड की शक्ति एवं विश्व पर नियंत्रण में लोग इसे शुभ चिन्ह का सहयोग मानते है.

पिरामिड की क्रिया विधि को पूरी तरह से समझाने के लिए निरन्तर वैज्ञानिक अनुसंधान कर रहे है, परन्तु इस अबूझ रहस्य से कोई भी पूरी तरह पर्दा नही उठा सका, परन्तु एक बात से सभी वैज्ञानिक एकमत है कि भले ही पूरी तरह इसकी क्रिया विधी की विवेचना नहीं कि जा सकी, परन्तु इस आकृति में अदृश्य ब्रम्हाण्डिय ऊर्जा के गुणात्मक विस्तार की शक्ति छिपी हुई है, जिसे कई प्रयोगों द्वारा सिध्द किया जा चुका है.

प्रत्येक ऑख से एक अलग चित्र दिख रहा है.

एक से केवल पिरामिड और दुसरी से केवल वास्तुपुरूष. यदि हम आखों को थोडा तिरछा करे और अपनी नाक के साथ ही हम देखेंगे कि दोनो चित्र मिल गये है और वास्तु पुरूष पिरामिड मे दिखाई दे रहा है.

प्रयोगशाला

कल जो रहस्य था वह आज का विज्ञान है तथा आज जो रहस्य है वह कल का विज्ञान हो सकता है.

विभिन्न परिस्थियों और विभिन्न उपकरणो से परीक्षण करने पर पिरामिड ऊर्जा के आश्चर्यजनक परिणाम मिले है.

विभिन्न परिस्थितीयों और विभिन्न उपकरणो से परीक्षण करने पर पिरामिड के प्रयोग से मानसिक, शारिरिक और भावनात्मक रूप से अच्छे परिणाम मिलते है. इसकी पुष्टि लोगों के अनुभव तथा प्रयोग द्वारा हुई है. विभिन्न लोगो तथा अनुसंधान तत्वो के साथ कई प्रकार की प्रविधियों द्वारा जांच की गयी.

पिरामिड के अंदर १५ मिनिट तक बैठने के बाद शरिर पर क्या प्रभाव होता है यह जानने के लिये क्रित्तियन, फोटोग्राफी द्वारा आभामंडल का परिक्षण किया गया है.

परिणाम स्वरूप दोनों चित्रो में क्लीअर अंतर देखा गया है. हमारा संपूर्ण जीवन ही प्रयोग है. जीवन सीखने और विकासित करने के लिये है. प्रत्येक व्यक्ति को नई समस्याओ का सामना करना पडता है और नये समाधान निकालने पडते है.

संभवत: सारे प्रयोग सफल न हो, लेकिन जब एक सफल हो जाता है व हमारा जीवन बदल सकता है.

वैज्ञानिक प्रयोग हमारे शारिरिक आराम और विलासिता को बढाता है. लेकिन जीवन के लिये किये गये पिरामिड वास्तु प्रयोग हमारी खुशियों और कल्याण में बृध्दि करता है.

यह भी हमारे वैज्ञानिक निरिक्षण और कई लोगों के अनुभव से कुछ हद तक तय हो गया है कि पिरामिड वास्तु के माध्यम से हम अपनी आंतरिक क्षमता को बढाने मे सहायक होते है.

पिरामिड हमारे मार्गदर्शक है. हम जानते है कि आकार त्रियामी होते है, अदृश्य ऊर्जा लगातार आकार में परिवर्तन हो रही है. वृत ब्रम्हाण्ड का सबसे स्थिर आकार है. रेखा गणित की दृष्टि से वृत में केंन्द्र से परिधि की दूरी सभी स्थानों पर समान होती है. यह आकार नारी,शांत, नियंत्रित और धैर्य ऊर्जा का रूप है.

विभिन्न प्रकार के नुकीले आकार जैसे शंकु त्रिकोण पिरामिड हीरा, माले, जिनके नोक सूर्य के समान गतिशील आकार का है जिनमे पुरूष समान गतिशीलता और सम्रियता रहती है.

इस प्रोडक्ट का उपयोग किसी भी भवन के किसी भी कोने की कटान बढाव को सही करने के लिए और इस कोने को ९०° पर करने के लिए किया जाता है. इसमें उस कोने से संबंधित सभी शक्तियों का समावेश कराया जाता है. इस प्रोडक्ट को लगाते ही उस कोने की उर्जा १०० प्रतिशत हो जाती है.

हाईट भुमि: ऊर्जा प्रोडक्ट हमेशा किसी भी भवन में फर्श की ढलान के दोष को दूर करने के लिये भवन के नैऋत्य कोण में ही लगाया जाता है, क्योंकि फर्श का लेवल हमेशा नैऋत्य दिशा में ऊचा होना चाहिए. यदि किसी कारण वश उस दिशा का लेवल बाकी दिशाओं से नीचा हो तो वहां हाईट भुमि ऊर्जा प्रोडक्ट लगातार उस दिशा का शुभ ऊर्जा १०० प्रतिशत कर सकते है.

भवन में किसी भी कोने के मेन गेट की नकारात्मक ऊर्जा को खत्म करने के लिए और सकारात्मक ऊर्जा को बढाने के लिये तैयार किया गया है. यह प्रोडक्ट गेट के दोनो स्तंभ के उपर वाली साईड पर लगाया जाता है. यह भी बाहरी बनावट से आम प्रोडक्ट जैसा नजर आता है, पर इसमे भी सभी ग्रहों से संबंधित शक्तियों का समावेश किया होता है. अगर किसी मेन गेट का स्थान गलत हा गया हो तो वहा भी सकारात्मक ऊर्जा बढाने के लिये, यह प्रोडक्ट लगाया जा सकता है.

पार्टीशन उर्जा का उपयोग किसी भी भवन में किसी भी कोने मे बाहरी प्रभाव को खत्म करने के लिये लगाया जाता है. अगर किसी भी भवन का कोना कटा हुआ है, तो उसको बराबर करने के लिये भी वहा पार्टीशन ऊर्जा लगाई जाती है. इसके अतिरिक्त अगर किसी कमरे के साथ बाथरूम जुडा है, तो नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव कम करने के लिये पार्टीशन प्रोडक्ट बाथरूम की चौखट के ऊपर कमरे मे लगा दें.

किसी भी दिशा मे बने बाथरूम/ टॉयलेट के दोष को दुर करने के लिये 'बाथ ऊर्जा' क्र प्रयोग, नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त करके उस स्थान मे शुभ ऊर्जा का निर्माण करता है.

किसी भी दिशा मे 'विथी शुल' दोष के लिये बनाया गया है. भवन के सामने लम्बा रास्ता चाहे किसी दिशा मे हो, जिसे टी.पाईंट भी कहते है, उसे बुरा माना जाता है.

इससे भवन में हवा तत्व का दबाव बढ जाता है और नकारात्मक ऊर्जा पैदा होकर घर की १००% ऊर्जा कम हो जाती है. अगर भवन के बाहर कोई खम्बा, ऊँची इमारत या विरोध तत्व का प्रभाव हो तो भवन में इसे बाहरी दिवार पर लगाया जाता है.

स्टेअर ऊर्जा– किसी भी भवन में किसी भी दिशा में सीढीओं के दोष को दूर करने के लिये बनाया गया है. अगर सीढी गलत दिशा में बन जाये या उलटी घडी चढान हो तो वहॉ की शुभ ऊर्जा बहुत कम हो जाती है.

शिफटींग ऊर्जा– यह किसी भी भवन मे एक दिशा से दूसरी दिशा या ऊपर से निचे और या नीचे से उपर ऊर्जा स्थलांतर करने के लिये लगाया जाता है. जैसे छत पर पानी की टांकी दक्षिण पूर्व मे हो तो उसे दक्षिण पश्चिम कोने मे सरकाने के लिये प्रयोग किया जायेगा.

प्लॉट:

१. प्लॉट के सामने हानिस्पद मार्ग
किसीभी व्यक्ति की भूमी 'टी' अथवा 'वाय' के आकार की सडक सामने होने से भवन दूषित ही जाता है. वास्तु के अनुसार ऐसे भवन मे निवास नही करना चाहिये. इससे नकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति पीडित होता है. इसलिये पिरामिड यंत्र को अंदर से बाहर दोनो स्थानो पर दिवार की तरफ स्थापित करने से दोष दूर हो जाता है. पिरामिड की एक दिवार भवन के अंदर और दूसरी दीवार भवन के बाहर स्थापित करनी चाहिये.

२. छोटा प्लॉट कई बडे प्लॉट्स से घिरा हुआ
यदि बडे भूखंडो के मध्य एक छोटा भूखंड है तो उसे दबा हुआ भूखंड कहते है. ऐसा भूखंड गरीबी लाता है. इसके दोष को कम करने व ऊर्जा के लिये बडे भूखंडो की दीवारों से लगती हुई छोटे भुखंड की दोनो दीवारों के किनारे पिरामिड की पंक्ति जमीन में डेढ फीट नीचे स्थापित करनी चाहिये.

३. रसोई और शौचालय आमने सामने
स्थान संकोच अथवा परिस्थिती के कारण व्यक्ति के भवन में गलत दिशा मे शैचालय की स्थापना उसे हमेशा कष्ट देती है. इसका निवारण उस शौच स्थान के बाहरी दीवार पर कक्ष के सामने ३–३ पिरामिड यंत्र की स्थापना करने मात्र से गलत दिशा मे स्थापित शौच कक्ष का दोष दूर किया जा सकता है.

भुखंड की लंबाई—चौडाई मे अनियमितता

वास्तु की एक विशेषता है की किसीभी भूखंड की लंबाई तथा ज्यादा से ज्यादा १:२ के समीकरण मे होनी चाहिए. अर्थात यदि लंबाई जितनी हो तो चौडाई ज्यादा से ज्यादा उससे दोगुना हो सकती है. यदि यह दो गुना से ज्यादा है तो भूखंड मे वास्तु दोष का निर्माण होता है. इसे सुधारने के लिए पिरामिड का उपयोग किया जाना चाहिए.

उदाहरण: यदि कोई भुखंड की चौडाई ३० फीट है एवं लंबाई १५० फीट है तो दोष का निर्माण करता है क्योकि लंबाई व चौडाई का अनुपात ५:१ है. इसे सुधारने के लिए भुखंड को तीन भाग मे विभाजीत किया जाना चाहिए जिससे की लंबाई व चौडाई का अनुपात ५/३:१ अर्थात १:६६:१ का हो जाये. इसके लिए पिरामिड को भुखंड के प्रत्येक ५० फीट पर लगाना चाहिए. इस प्रकार लंबाई व चौडाई की अनुपात ५०:३० अर्थात १:६६:१ हा जायेगा जो वास्तु सम्मत है.

अगर वास्तु स्थान की भूमि के ईशान्य की तरफ का कोण ९० अंशो से कम होता है, तो धन प्राप्त तो होता है परंतु प्राप्त होने वाला धन अबाधित तत्वो पर खर्च होता है. बीमारियां बनी रहती है और बुरे कर्मो की तरफ प्रवृत्ति रहती है.

इसमे निम्न तरिकेके पिरामिड का उपयोग करके सुधारा जा सकता है. ईशान्य की तरफ फैला हुआ गौमुखी भूमिखंड अत्यंत शुभकर होता है.इसमे निम्न तरिके से पिरामिड का उपयोग करके सुधारा जा सकता है.

व्यक्ति के भवन के निर्माण किये गये किसी भी कक्ष में अनुकुल ऊर्जा का प्रवाह प्राप्त करना चाहते हो, तो निम्नलिखीत क्रम अनुसार पिरामिड यंत्र स्थापित करने से अनुकुलता प्राप्त की जा सकती है.

शयनकक्ष मे ऊर्जा का अभाव हो तो, पिरामीड रखकर अनुकुल ऊर्जा का संचार किया जा सकता है.

भुमि अथवा भवन के किसी भी दिशा मे कटे हुए भाग को पिरामिड यंत्र द्वारा ठीक किया जा सकता है. इसके लिए भवन के अंदर की ओर चारों दिशाओं मे १—१ पिरामिड यंत्र स्थापित करने से कटे हुए कोने का दोष दूर हो जाता है.

पिरामिड को वास्तु दोष दूर करने के लिए उस दिशा एवं क्रम मे रखना चाहिए जिससे आदर्श वास्तु स्थिती पैदा हो सके. पिरामिड का प्रयोग भुमि, भवन, मनुष्य, घर के सामान, वाहन तथा मशीन आदि की स्थिती को सुधारने मे किया जा सकता है.

प्रवेश द्वार के अंदर की तरफ दरवाजे से दो या ढाई फुट दूर एक एक पिरामिड यंत्र करने रखने से तथा भुखंड का आकार यदि अधिक हो तो ९–९ पिरामिड समान दूरी पर स्थापित कर देने से किसी भी प्रकार का प्रवेशद्वार का दोष दुर हो जाता है.

उद्देश

१. जीवन के सकारात्मक और संतोष जनक परिणामों के लिए केवल निर्जीव वस्तुओ पर ध्यान देना अपूर्ण दृष्टिकोण है.
२. वास्तु और कुछ नही बल्कि जीवन की सभी अनुकुल और प्रतिकुल परिस्थितीयों में अपना सर्वश्रेष्ठ करने की कला और विज्ञान है.
३. वास्तु संवृधि का सर्वश्रेष्ठ लाभ प्राप्त करने के तीन प्रमुख कारक है. पहले आकाश (पिता) की ऊर्जा, दुसरा आपकी अपनी गतिशीलता और तीसरा पृथ्वी (माता) की प्रेरक शक्ति. पिरामिड इन्ही तीनों कारको का सर्वश्रेष्ठ मिश्रण है.
४. आजकल के कथाकथित तथाकथित वास्तुशास्त्री वास्तु के बारे मे केवल र्निजिव वस्तुओं के बारे मे ही बातें करते है. इसलिए अधिकतर लोग वास्तु जैसे विषय से दुरी बना लेते है.
५. दृश्य संसार का मूलभूत सूत्र तीन परस्पर क्षेत्र है. पहला आकाश, दूसरा हमारे भीतर और तीसरा हमारे निचे. यह तीनों एक साथ मिलकर उस चिज का निर्माण करते है जो हम चाहते है.
६. वास्तु पर्यावणिक उर्जा, जैव उर्जा और प्रत्येक कण का संयोजन है.
७. मानव शरीर का रेखा गणित भी ब्रम्हाण्ड की उच्च रहस्यमाटकता का दिग्दर्शत है. खडे हुए व्यक्ति को लेकर चित्र मे बताये अनुसार एक वृत उसकी नाभि को केंद्र मानकर बनाया जा सकता है. मनुष्य ब्रम्हाण्ड भी सुक्ष्म आकृती है. यह गहन अनुपात सम्पुर्ण प्रकृति मे है और पिरामिड का भी यह आधारमुल अनुपात है.
८. प्रत्येक आकार एक तरंगित ऊर्जा देता है. हमें उसके धनात्मक ऋणात्मक प्रमाण का पता लगाने चाहिये. हम आकारों और आकृतियों के विश्व में ही रहते है. हमारे आस पास और हमारे भीतर असंख्य आकृतियॉ है. हमारे घर के सजावटी सामान पौधे आदि की आकृतियॉ के बिच हम रहते है. उनका सही या गलत आकार हमें प्रभावित करता है. पर उनके प्रभाव से हम अपरिचित है. आकारक

हमें प्राथमिक ज्ञान है, पर और गहराई से अर्थ जानना अभी शेष है. इसी तरह पिरामिड भी एक आकृति है और हमारे जीवन पर बहुत असर होता है. सही आकार और प्रकार के पिरामिड मे कुदरत की शुभ ऊर्जा का संचय करने की क्षमता होती है.

९. मस्तिष्क, उसके मुख्य अंग और उसका स्वर्ग से तालमेल के बारे मे मिश्र के लोगों ने ५००० वर्ष पूर्व ही समझ लिया था.

कल्पना कीजीए कि हमारी सभ्यता पूरी तरह नष्ट हो जाती है. आज से ४०००–५००० साल बाद कोई इस सभ्यता के अवशेष खोज निकालता है और असे एक वाशिंग मशिन या कंप्युटर मिलता है. उत्खनन प्रमाण के आधार पर तो वे केवल विद्युत उपकरण है. यह उनके लिये एक बडी पुरातात्विक खोज होगी जिससे वे जान पायेंगे कि हम कैसे रहते थे. पर सत्य यह है कि विद्युत का उपयोग पहले हमने प्रकाश के लिए किया बाद मे कंम्पुटर तक उसके बहुविध उपयोग किए.

किसी भी सभ्यता के संबंध मे जानने के लिये हमें उस युग और उस युग के लोगों की आवश्यक्ता व सोच को समझाना होगा.

केवल आज प्राप्त भौतिक प्रमाण के आधार पर ही हम उसे संबंधित नही कर सकते. इसी तरह पिरामिड जैसे रहस्यमयी यंत्र को अधिक विस्तार से समझाना होगा और उसके भौतिक दृष्टिकोण छोडकर आंतरिक गुढतत्व को समझाना होगा.

पिरामिडो मे चुंबकिय तरंगो का प्रवाह अनेक रोगो से छुटकारा दिलाता है. ये चुंबकिय तरंगे गठिया तथा आमवत के रोगीयों के कष्ट को दूर कर देती है. लंबी अवधि तक पिरामिड के भीतर निवास करने से गठिया रोग ठीक हो जाता है.

मानसिक उत्तेजना तथा अधिक क्रोध के कारण परेशान व्यक्तियों को प्रतिदिन दिन मे दो बार पिरामिड में बैठकर ध्यान लगाने से शीघ्र लाभ होता है.

पिरामिड के भीतर रखा हुआ जल पीने से गैस्ट्रिक अल्सर, पेप्टीक अल्सर तथा आम्ल पित्त ठीक हो जाता है.

पिरामिड टोपी पहनने से या पिरामिड में निवास करने से चित्त की एकाग्रता तथा स्मरण शक्ति बढती है और मस्तिष्क के विकार दूर होते है.

पिरामिड में निवास करने वाले शरीर में विटामिन खनिज तथा प्रोटीन का संतुलन बना रहता है.

पिरामिडनुमा विशेषाकृति में पके पकाये भोजन को कुछ घंटे रखने पर उसमें उपस्थित विटामिन की कारक क्षमता में वृध्दि होती है. और वह शरीर को अधिक पौष्टिक प्रदान करता है. फलत: मानव शरीर स्वस्थ व बलवान बनता है.

सुरक्षा एवं पेट्रोल की बचत: पेट्रोल एक ऐसा इंधन है जो प्रत्येक व्यक्ति की दिनचर्या का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है और यह दिन–प्रतिदिन महंगा होता जा रहा है. पिरामिड शक्ति द्वारा उपचारित पेट्रोल सामान्य से अधिक माइलेज देता है. प्रयोग के लिए आप एक मॉडल पिरामिड को इंधन टैंक पर रखे और चमत्कारिक परिणाम देखें. इस प्रकार आप पिरामिड को अपनी गाडी के ईशबोर्ड या मिटर पर रख सकते है, या दूपहिया वाहन की सीट के निचे या इंजन के ऊपर. आप पायेंगे कि आपके वाहन की कार्यक्षमता बढ गई है. गाडी के साथ–साथ गाडी ड्राईवर व अन्य को भी धनात्मकता मिलेगी.

कम्प्युटर इलेक्ट्रॉनिक्स पर पिरामिड:

टेलिविजन, म्युजिक सिस्टम व कम्प्यूटर आदि के ऊपर पिरामिड रखने से इनकी लाईफ बढ जाती है. साथ ही इससे निकलने वाले हानिकारक किरणों से भी हमारा बचाव होता है. शोध द्वारा पता चला है कि, आम कम्प्यूटरों की तुलना में पिरामिड द्वारा उपचारित कम्प्यूटर अधिक क्षमता से कार्य करते है.

गहरी ध्यान साधना:

ध्यान करने के लिए मन का शांत एवं एकाग्र होना परम आवश्यक है. पिरामिड हमारे मन को शांत एवं स्थिर करता है. पिरामिड में बैठ कर ध्यान लगाने से आसानी से एकाग्रता आती है. व्यक्तियों के अनुभव बताते है कि पिरामिडीय इमारत में बैठने से उन्हे आनंद, सुरक्षा तथा आराम का अनुभव होता है. यहॉ तक कि अगर रोजाना बच्चें को ३०–५४ मिनट तक पिरामिड में बिठाया गया तो उनके अंदर अधिक सृजनात्मकता और एकाग्रता पाई गई और यह भी पता चला है कि वह अधिक समय तक अपना ध्यान पढाई में लगा सकते है.

प्रयोग—

१. **शेविंग ब्लेड —** सामान्यत: शेविंग की ब्लेड कुछ समय के बाद बेकार हो जाता है. शोधकर्ताओं के अनुसार यदि अपने मॉडल पिरामिड में ऐसे ब्लेड १/३ ऊचाई पर दक्षिणोत्तर दिशा में रखी जाए तो उसका धार यथावत बनी रहती है और ब्लेड भी २० गुना अधिक समय तक चलता है.

२. **बैटरी सेल —** यदि प्रयोग मे लेने के बाद बैटरी को पिरामिड में एक सप्ताह के लिए दक्षिणोत्तर दिशा में रखा जाए तो यह पुन: कार्य करना शुरू कर देगा.

३. **पिरामिड दूध** — दूध बच्चों व बडों के लिए स्वास्थयवर्धक पैष्टिक पेय पदार्थ है. यदि दूध को पीने से पहले २० मिनट के लिए पिरामिड के नीचे रखा जाए तो उसकी गुणवत्ता कई गुणा बढ जाती है.

४. **ताजा फुल** — पिरामिड के माध्यम से आप अपने पसंदीदा फूलों को लम्बे अर्से तक ताजा रख सकते है. पिरामिड के निचे वह अपनी सुंदरता, रंग और खुशबू को अधिक समय तक संजो कर रख सकते है.

५. **ब्रेड एवं चपाती** — ब्रेड को उसकी वास्तविक पैकिंग के साथ पिरामिड मे ७ सप्ताह तक बिल्कुल ताजा रखा जा सकता है. इससे वे अधिक समय तक नरम और ताजी रहेंगी और ब्रम्हाण्डीय ऊर्जा का अतिरिक्त लाभ भी प्राप्त होगा.

६. **फल एवं सब्जियॉ** — फ्रिज में रखने से पहले फलों एवं सब्जियो को एक घंटे के लिए पिरामिड में रखें. उनका प्राकृतिक स्वाद व रस यथावत रहेगा.

निष्कर्ष:

पिरामिड की रहस्यमयी ऊर्जाओं को जानने का बहुत प्रयास किया गया है. जिससे अनेक सिध्दांत और एक महत्वपूर्ण आकृति वाला यंत्र है जो सूर्य और बाह्य अंतरिक्ष से पृथ्वी तक पहुंचने वाली ब्रम्हांडीय ऊर्जा से स्पंदित होता है.

इस शोध प्रबंध द्वारा विभिन्न ऊर्जा अथवा उनके प्रभाव का अध्यन किया जायेगा.

शोध प्रबंध

पिरामिड के सन्दर्भ से उपाय एवम प्रभाव

पाठ क्र. १

परिचय

मिश्र के लोग ज्योतिष विज्ञान के प्रकांड विद्वान थे, तभी तो उन्होने आज से हजारों वर्षो पहले ही, आज के हालात और अत्यधुनिक युग की भविष्यवाणी कर डाली थी, और उसी के अनुरूप यह सृष्टि नव से नवीनतम होती गई और लोग सुखी, समृध्द बनते गये, धनवान बनते गये.

'पिरामिड' अर्थात कामनापूर्ती का वह साधन जो प्राचिनकाल से अपनी गाथा को बयान कर रहा है और अपने अनुयायियों को धन व सुख समृध्दि का भरपूर उपहार दे रहा है. जब पिरामिड पर किए गए अनुसंधान के निष्कर्ष प्रयोग में लाए गए तो परिणाम चौकाने वाले प्राप्त हुए. यंत्रो में त्रिकोण मुखी, ऊर्ध्वमुखी यंत्र अग्नि तत्व का प्रतीक माना गया है. अग्नि जहॉं जीवन शक्ति है, वहीं ऊर्जा भी है.

पिरामिड का आकार ऊर्ध्वमुखी त्रिकोण की तरह है. जिस प्रकार अग्नि का स्पर्श आप जाने—अनजाने जैसे भी करे, वह अपना प्रभाव दिखायेगी ही, उसी प्रकार जाने—अनजाने

में किए जाने वाले पिरामिड प्रयोग आपके लिए उपयोगी व लाभकारी ही सिध्द होगा. इस यंत्र में जो पिरामिड प्रयोग किया गया है, वह ऋध्दि–सिध्दि पिरामिड है.

जो पाठक ज्योतिष में विश्वास रखते है, थोडी सी जानकारी रखते है, उन्हे मालूम ही होगा कि जन्म कुंडली में बारह भाव होते है. उन बारह भावों में केंद्र के चार भाग का विशेष महत्व होता है और केन्द्र के चार भाग से भी त्रिकोण का महत्व अधिक होता है. जन्म कुंडली में त्रिकोण का अर्थ लग्न, पंचम भाव और नवम भाव से है. इसे और अधिक स्पष्ट करके देखे तो पाऍगे कि जातक के जीवन में इन तीन भावों का अर्थात त्रिकोण का विशेष महत्व है. जिस व्यक्ति का प्रथम भाव अर्थात लग्न शुभ होगा तो उस व्यक्ति को शिक्षा भी उच्च कोटी की प्राप्त होगी.

त्रिकोण में स्थित ग्रह एवं त्रिकोण भाव के अधिपति ग्रहों को परम योगकारक माना जाता है और त्रिकोण में भी पिरामिड का स्थायित्व रचा बसा है.

मिश्र के पिरामिडो को ही ले लो. यदि उस युग मे विज्ञान और तकनीक का विकास नही था तो मिश्र में यह पिरामिड बडे–बडे शहर, मंदिर, सडके, पानी निकास की नालियां, चट्टाने काटकर बनाए गए मकबरे और भयंकर आकार–प्रकार के पिरामिड कहॉ से आ गए.

सच पूछा जाए तो बौध्दिक दृष्टि, विज्ञान, तकनिक, उद्योग, वाणिज्य, वास्तुकला, स्थापत्य, विमान आदि समस्त क्षेत्रो में जैसी प्रगति प्राचिनकाल में हुई ऐसी स्थिति तक पहॅुचने में आधुनिक विज्ञान को कई शताब्दियॉ लग जाएंगी. 'चेरियट्स ऑफ गॉड्स' नामक पुस्तक में सुप्रसिध्द जर्मन इतिहासवक्ता डॉ एचिरेवान एनिकून ने उस समस्त संसार को पर्यटन किया है, जिन्हे इस युग मे आश्चर्य की संज्ञा ही दी जाती है. इस

अध्ययन का निष्कर्ष विद्वान लेखक ने भी इसी तरह के शब्दो मे निकाला है और लिखा है – जहॉ से हमारा इतिहास लिखा गया है, उससे पूर्व के वैदिक युग की सभ्यता संस्कृति और वैज्ञानिक उपलब्धियां आज की अपेक्षा सैकडो गुना अधिक थी. हमारे पूर्वजों की शक्ति, सामर्थ्य, बैाधिक और आत्मिक क्षमताए ऐसी थी जिनका वर्णन कर सकना भी असंभव है. उस युग का तकनिकी ज्ञान भी अब से किसी भी स्थिती में कम नही था.

इसका अर्थ यह है कि २६ लाख पत्थर २ लाख हजार दिनों मे अर्थात ७१२ वर्षो में उसका निर्माण सम्भव है, जबकि पिरामिड मे उसका एक ही निर्माता का नाम 'फराअ खुफू' अंकित है.

१२ टन के पत्थर बनाने के लिए खान से कम–से–कम १५ टन भार के पत्थर तो निकाले ही गये होंगे. यदि उस समय डायनामाइट जैसे तत्व ओर उपकरण न थे तो इतने भारी वजन के ब्लॉक पत्थरों को खानो से निकालना कैसे संभव हुआ? इस विशाल निर्माण पर आश्चर्य करना एक बात हुई, पर विचारक को तो तब तक संतोष नही, जब तक वस्तुस्थिती की समीक्षा न हो. इस आश्चर्य के पीछे निम्नांकित प्रश्न उभरते है.

गुरूत्वाकर्षण शक्ति के बिलकुल मध्य में है. जो यह दर्शाता है कि तब के लोग विद्या में भी पारंगत थे, चुंबकिय बलों से अच्छी तरह परिचित है. च्याप्य के इस दैत्याकार पिरामिड में २६ लाख पत्थर के बीच की अधिकतम झिरी १/१००० इंच से भी कम अर्थात नहीं के बराबर है. एक ब्लाक पत्थर का वजन १२ टन का है.

उस युग में विद्युत नही था, टार्च नही थे जब कि पिरामिड की सैकडों फीट लंबी सुरंगो की विधिवत रंगाई पुताई हुई है. मशालों से वहॉ के मजदूरो का दम घुट सकता था. दिवारें काली हो सकती थी. अत: एवं उनका प्रयोग कदापि न होने की बात एक स्वर मे पुरातत्ववेत्ता भी स्वीकार करते है. फिर इस प्रकार की व्यवस्था कैसे हुई.

पत्थरों की इतनी अच्छी कटाई कैसे हुई कि दो पत्थर जोडने पर झिरी १/१००० इंचे से भी कम अर्थात हर पत्थर एक दुसरे से चिपककर बैठा है.

मिश्र के विशाल पिरामिड दुनिया के सात आश्चर्यो में गिने जाते है और इनका इन आश्चर्यो मे गिना जाना स्वाभाविक भी है. इन विशाल और रहस्यमयी पिरामिडो की गुत्थियों को आज हजारों साल बाद भी दुनिया के आत्याधुनिक देशों के महान और बडे बडे वैज्ञानिक भी पूरी तरह नही सुलझाा पाए है. इन पिरामिड में अनगिनत रहस्य आज भी दफन है और साथ ही दफन है दुनिया के भविष्य को लेकर की गई महान भविष्यवाणियां.

मिश्र के लोग ज्योतिष विज्ञान के प्रकांड विद्वान थे, तभी तो उन्होने आज से हजारों वर्षो पहले ही आज के हालात और आधुनिक युग की भविष्यवाणी कर डाली थी. आधुनिक विद्ववान आज भी इन भविष्यवाणियों को पूरी तरह नही सुलझा पाये है.

पिरामिड के पीछे एक बडा ही महान वैज्ञानिक रहस्य छिपा हुआ है. संशोधक –लेखक मेनली पामर हाल मे अपनी पुस्तक 'दि सिक्रेट टीचींग ऑफ एजीज' में कहा है कि 'ये भव्य पिरामिड विश्व के शाश्वत ज्ञान का जीवन संयोजन है. इनके कोने शांति, गहनता, बुध्दिमत्ता तथा सच्चाई के प्रतिक है. इनके त्रिकेनिया भाग, त्रिस्तरी आत्मिक शक्ति के प्रतिक है. पिरामिड का दक्षिणी हिस्सा ठंडक का उत्तरी हिस्सा गर्मी का पश्चिमी हिस्सा अंधकार का और पूर्व का हिस्सा प्रकाश का प्रतिक है.

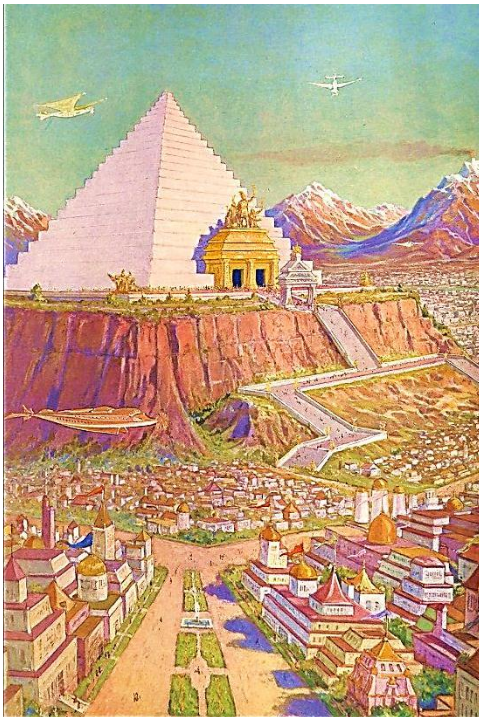

यदि इस तथ्य को स्वीकार कर लिया जाए तो स्पष्ट है कि पिरामिड का निर्माण उच्च स्तर की प्राप्ति के हेतु तथा शरीर मे अंतर्निहित ऊर्जा को जाग्रत करने के लिए ही हुआ. इसी कारण कई अनुभवो से सिध्द हुआ है कि पिरामिड के भीतर बैठने से शांती का अनुभव होता है तथा उनके कारण मानसिक शक्ति में भी वृध्दि की जा सकती है.

डॉ. फ्लेनगन लिखते है– 'पिरामिड विशेष भौमितिक आकर के फलस्वरूप उसके पांचो कोनो (चारबाजू के तथा एक शिखर का) मे एक विशिष्ट प्रकार का सूक्ष्म किरणोत्सर्ग उत्पन्न होता है. यह ऊर्जा पिरामिड की एक तिहाई ऊँचाई पर स्थित 'किंग्स चैम्बर' नामक विस्तार में घनीभूत होती है.

ऐसी प्रचंड ऊर्जा पिरामिड के पांचो कोनो से बाहर फैलती है और पिरामिड के आस पास के क्षेत्र एवं वातावरण आवेशित हो जाता है.

जोसेफ्स के अनुसार बडे पिरामिडों में नक्षत्र विज्ञान संबंधी बहुत सी बातों, सिध्दातों का वातावरण मिलता है. इनमें नक्षत्रो से सम्बंधित विभिन्न चक्रो में बीती घटनाओ अर्थात इतिहास के अतिरिक्त आने वाली घटनाओं का विवरण भी अंकित है. इन पिरामिड के संबंध में यह तथ्य बहुत ही विस्मयकारी है कि, ये मिश्र देश के बिचों बीच तो स्थित है ही, पृथ्वी के भी बिचोबीच भी स्थित है तथा उनकी स्थिति है तथा उनकी स्थिति से यह बात प्रमाणित होती है कि इनके निर्माणकर्ताओ को उत्तरी ओर दक्षिणी घ्रुवों की स्थिति के संबंध में भी पता था. उनकी स्थिती और सूर्य की गतिविधियों के बीच एक सुनश्चित संबंध तो है ही, उन पर जो भविष्यवाणिया अंकित की गई है उनका आधार ध्रुवतारे की स्थिति है.

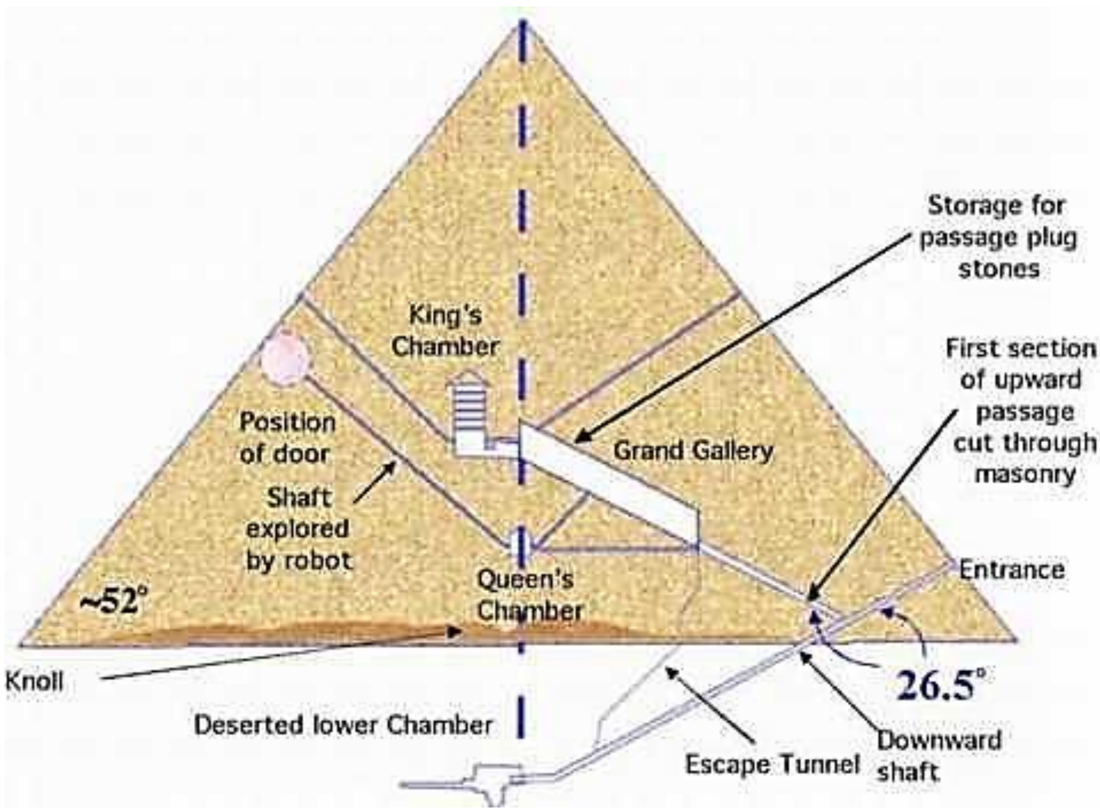

सर क्लिणडर्स पैत्र ने लम्बे समय तक पिरामिडों के प्रतिकों का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला है कि पृथ्वी के मध्य भाग में स्थित ये पिरामिड मापन ज्यामित तथा

खगोल विज्ञान के अनेक मूलभूत सिध्दांतों को उद्घाटित करते है. इन विशालकाय निर्माणों की भितरी कक्षा और भागों के संबंध में यह एक रोचक तथ्य है कि ये परस्पर तो संबंधित है ही, पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों से भी इनका संबंध स्थापित करने में सक्षम है.

डेविडसन ने तो सन् १९२४ में अपनी पुस्तक 'द ग्रेट पिरामिड–इट्स डिवायन मॅसेज' में लिखा था कि इनमें पृथ्वी के जन्मकाल से लेकर अब तक की तथा आगे हजारों वर्षो की घटनाएँ तथा भविष्यवाणियां अंकित है. आरम्भ में जिन भविष्यवाणियों का उल्लेख मिलता है, उनमें पृथ्वी के जन्म, बाढ, भूकंप, महामारियों और युध्दो की घटनाए है जो इतिहास का विषय है. इनमें महान सम्राटों और योध्दाओं का उल्लेख तो है, युध्दों तथा क्रांतियों और विश्व के महान संतों का भी वर्णन है.

पिरामिडों में अनेक निर्माण पूर्व से लेकर अब तक का इतिहास और आगे कि भविष्यवाणियां अंकित है. उन सबका संकलन किया जाए तो एक विशालकाय ग्रंथ तैयार हो सकता है. संक्षेप मे कहा जाता है कि पिरामिडों में पृथ्वी के जन्म से लेकर समाप्ति होने तक का इतिहास या भविष्यवाणी अंकित है.

पिरामिडों के निर्माण के समय में मिश्र के शासकों को फेराओ कहा जाता था. इस काल मे निर्मीत पिरामिडों में गीजा के तीन अद्‌भुत पिरामिड आज भी बहुत प्रसिध्द है. ये राजा चेयोप्स, चेफ्रन तथा गायसेरिन के लिए बनाए गए थे. इनका निर्माण लगभग २५२५–२६०० इ.पू. के आस पास हुआ था. इसमे भी सम्राट चेयोप्स का पिरामिड सबसे विशाल एवं अद्वितीय है. गीजा के पिरामिडों मे ये सबसे प्रसिध्द है. इनके अंदर की संरचना एवं व्यवस्था आज भी स्थापना, कला एवं वास्तुकला के विद्वानों को विस्मय मे डाल देती है.

पिरामिड के प्रकार:

पिरामिड अनेक चमत्कारी शक्तियों से युक्त होता है. इसके द्वारा आप अपना जीवन सुखमय बना सकते है. पिरामिड आठ प्रकार के होते है और इन पिरामिडों को अलग अलग उद्‌देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयुक्त किया जाता है.

१. **पत्थर का पिरामिड:** आज के दौर में प्रत्येक मनुष्य अपने अपने कार्यो में इतना अधिक व्यस्त है कि वह ध्यान लगाने का समय ही नही निकाल पाता. पिरामिड का प्रयोग करके आप अल्प समय में हि यह कार्य आसानी से पूर्ण कर सकते है. इसके लिए पत्थर के पिरामिड का चुनाव अधिक सही होता है. इसके अलावा मृत शरीर को लम्बे समय तक संरक्षण करने के लिए भी पत्थर का पिरामिड उपयोग मे लाया जा सकता है. मिश्र मे राजाओ के शवों को संरक्षित करने हेतु विशालकाय पत्थर के पिरामिड बनाए जाते थे.

२. **लकडी का पिरामिड:** लकडी के पिरामिड का सर्वाधिक प्रयोग पिरामिड जल बनाने में किया जाता है. पिरामिड जल 'मेडिकल क्योर' में उपयोग होता है. सभी मनुष्य अपने शरीर को स्वास्थ्यवर्धक बनाने की चेष्टा करते है. मिट्टी, कांच या तामचीनी के गिलास में स्वच्छ एवं ताजा पानी लेकर उसे १०–१५ घंटे लकडी के पिरामिड मे रखने से उसमे पिरामिड मे एकत्रित ऊर्जा का प्रवाह शुरू हो जाता है. फिर वह जल पिरामिड जल बन जाता है. लकडी के

पिरामिड मे तैयार जल रक्तचाप, लकवा, अनिद्रा, मधुमेह, दमा तथा क्षयरोग मे लाभकारी सिध्द होता है.

३. **कांच का पिरामिड**: कांच के पिरामिड का उपयोग घरों में 'स्पेस एनर्जी' बढाने के लिए अधिक होना चाहिए. शहरों में कॉच के पिरामिड की अधिक आवश्यक्ता होती है. वहॉ मकान एक दुसरे से इतने अधिक सटे होते है कि उसमे सूर्य का प्रकाश ठीक ढंग से प्रवेश नहीं कर पाता. अत एवं पर्याप्त रूप से प्रकाश पाने के लिए कांच के पिरामिड का प्रयोग अपने घरों में करें.

४. **प्लास्टिक का पिरामिड**: प्लास्टिक के पिरामिड का प्रयोग अपनी इच्छापूर्ती के लिए किया जाता है. ऐसे पिरामिड को आप अपनी टेबल पर पलंग पर तथा ऐसे अनेक स्थानों पर रख सकते है. जहॉ आप अपना ज्यादा समय व्यतित करते है. ऐसा करने से आप अपनी इच्छाओं को कम समय में पूर्ण कर सकते है, क्योकि पिरामिड ऊर्जा से आप हर समय प्रभावित रहेंगे.

५. **तांबे का पिरामिड**: विदेशों में तांबे के पिरामिड का प्रयोग ज्यादातर युवक युवतियां करते है. इसका कारण यह है कि तांबे का पिरामिड व्यक्ति में आकर्षण बढाता है.

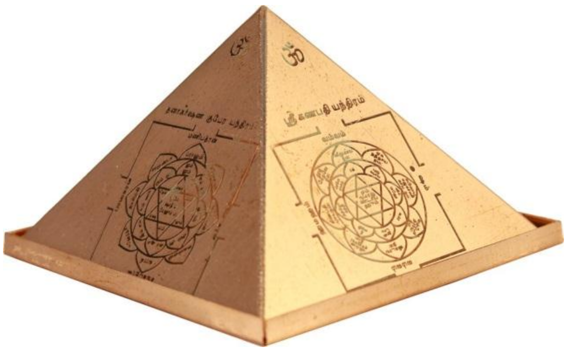

६. **कागज का पिरामिड**: टोपी या कोन के रूप मे कागज का पिरामिड बनाया जा सकता है. इसका प्रयोग अध्यन तथा ध्यान साधना के समय करना चाहिए.

७. **खोखला पिरामिड**: खोखले पिरामिड को 'ओपन पिरामिड' भी कहा जाता है. इसे नीचे से पूरा खोला जा सकता है. इसके नीचे बैठकर ध्यान, अध्ययन या अन्य महत्वपूर्ण कार्य एकाग्रता के साथ किए जा सकते है.

८. **मिश्र धातु पिरामिड**: कई धातुओं से मिलकर बना पिरामिड मिश्र धातु पिरामिड कहलाता है. इसके लिए पांच धातुओ का चयन अनिवार्य है, किंतु वे विद्युत के कुचालक हो, उनको समान अनुपात मे लेकर यह पिरामिड बनाया जाता है. इस पिरामिड का इस्तेमाल तांत्रिक प्रयोगो के लिए होता है.

क्या मिश्र के पिरामिड अभिशापित है?

मिश्र के पिरामिडो के बारे मे अनेक जन मान्यताए प्रचलित है. एक आम धारणा यह भी है कि प्राचिन मिश्रवासियों ने मृतक के शवों को चिरकाल तथा सुरक्षित रखने के लिए तत्कालिन ज्ञान और विज्ञान के अपने अनुसंधान के आधार पर इन संरचनाओं को खडा किया था, परंतु इससे आगे सैकडों मील क्षेत्र में फैले इन विशाल पिरामिडो की वास्तविक उपयोगिता क्या थी आज तक यह अबुझ पहेली बनी हुई है. इतिहासकार भी इस संबंध में मौन है. आरम्भकाल में इसकी उपयोगित चाहे कुछ भी रही हो, अब तो यह भुतही जगह मात्र है. प्रेत–पिशाच स्वच्छंदता पूर्वक विचरण करते देखे जा सकते है. जो भी व्यक्ति इनमे ठहरने और जानकारी हासिल करने का प्रयत्न करता है, वे उसका विनाश करके छोडते है. उनके अनुसार पिरामिडो में कुछ स्थान इतने अभिशापित है, जिनमे पहुँचते पहुँचते काल का ग्रास बन जाता है. तुतनखामेन का मकबरा उनमे से एक है.

पिरामिडों पर अनुसंधान कर रहे मुख्य वैज्ञानिको के अनुसार मिश्र के प्राचिन निवासियों ने अपने मकबरे की सुरक्षा हेतु विषैले प्रासिक अम्ल का प्रयोग किया था. वे इसे नाशपति के बीजों से बनाते थे और ममियों को उसी अम्ल मे भिगोकर रखते थे, जिससे वे सुरक्षित भी रहे व उन्हे कोई चुरा न सके. इस अम्ल को एक प्रकार की तीव्र स्नायु विष कहा जा सकता है. उन्होने मानसिक तनाव फैलाने वाले एक और विष की खोज कि थी, जिसे स्विक सिल्वर के विषैले गंधहीन बाष्पकणों से बनाया जाता था. मकबरे की खुदाई के समय डॉ एवचिन व्हाइट इसी विषाक्त प्रभाव के कारण मृत्यु की गोद में चले गये थे.

पिरामिड में अंकित रहस्यः

मिश्र दुनिया का बहुत प्राचिन देश है. वहॉ कि सभ्यता अति प्राचिन सभ्यताओं में से एक मानी जाती है. यद्यपि मिश्र की सभ्यता और संस्कृति के अब अवशेष ही बचे है, परंतु जो अवशेष बचे है, उनसे सिध्द होता है कि अब से तीन चार हजार साल पहले तक वहॉ के लोग काफी उन्नत जीवन व्यतित करते थे. उस समय वहॉ का कला कौशल्य भी बहुत उन्नत था. इसका परिचय देने वाले पिरामिड इस बात के साक्षी है.

पिरामिडो का निर्माण या तो मिश्र के राजाओं की स्मृति सुरक्षित करने के लिए किया गया है अथवा वे किन्ही धार्मिक स्थलों के रूप में बनाए गऐ है. इसमे जो सबसे बडा स्तूप है वह राजा 'च्याप्स' की कब्र पर बनाया गया है. इसके निचले भाग में तेरह एकड जमीन घेर रखी है और लगभग १३ लाख पत्थरों के बडे बडे टुकडे लगे हुए है. ऐसा माना जाता है कि अधिकांश पत्थर १५०० घन फुट से भी अधिक आकार वाले है और उनका वजन ढाई टन से भी ज्यादा है. इतने भारी और बडे पत्थरों को बीसीयों फुट ऊँचाई तक कैसे पहुॅचाया गया होगा यही एक आश्चर्य का विषय है. उल्लेखनीय है इन पिरामिडो मे सबसे बडा पिरामिड ४५०फीट तथा सबसे छोटा १४० फीट उंचा है.

इनकी बाह्य और आंतरिक रचना को देखने पर इस बात का अनुमान लगा पाना कठिन है कि इनके निर्माण में कितने प्रशिक्षित और दक्ष अनुभवी शिल्पियो का योगदान रहा होगा.

सुप्रसिध्द इतिहास लेखक यहूदि विज्ञान ने इन पिरामिडो के रहस्यों पर प्रकाश डालते हुएॅ सिध्द किया है कि इनका निर्माण बहुउद्‌देशीय प्रयोजनो से किया गया है. इनमे से एक तो तात्कालीन आविष्कारों और ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र मे अर्जित उपलब्धियों का

अंकन था. इन स्मारकों में उस समय की विभिन्न कलाओं, गणित और ज्यामितीय अन्वेषणों तथा नक्षत्र विज्ञान की विविध उपलब्धियों का प्रतीकात्मक चित्रण किया है.

इन पिरामिडों के संबंध में यह तथ्य बहुत ही विस्मकारी है कि मिश्र देश के बीचोबीच तो स्थित है ही, पृथ्वी के भी बिचोबिच स्थित है तथा उनकी स्थिती से यह बात प्रमाणित होती है कि इनके निर्माणकर्ताओं को उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों की स्थिति के संबंध में भी पता था. उनकी स्थिति और सूर्य की गतिविधियो के बिच एक सुनिश्चित सम्बंध तो है हि, उन पर जो भाविष्यवाणिया अंकित की गई है उनका आधार ध्रुवतारे की स्थिति है.

खगोलशास्त्रियों का मत है कि यह भाषा कुछ सार्वभौम सिध्दांतों पर आधारित है, जो पृथ्वी तथा ब्रम्हांड के गणितीय और ज्यामितीय नियमों से सम्बंध रखते है. इस पध्दति का इस्तमाल इस उद्देश से किया गया था कि भविष्य में जो भी कोई इन नियमों को जान और समक्ष सकेगा. वह इन नियमों के आधार पर इन पहेलियों को सुलझा लेगा तथा आने वाले कल की घटनाओं और संभावनाओं के संबंध में संसार को सचेत कर सकेगा.

१९४७ में भारत द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति तथा भारत का दो टुकडो मे बट जाना. १९४८ में इश्राईल की स्थापना, यहुदियो का पुनः स्थापना. १९६० में अफ्रीका के १६ देशो का स्वतंत्र होना. १९७५ में अमेरिका द्वारा विएतनाम पर हमला. भारत और पाकिस्तान के बीच युध्द. १९६९ मे पहली बार मनुष्य द्वारा चंद्रमा पर पहुँचना.

कैसा काम करता है पिरामिड?

पिरामिडो में अज्ञात ऊर्जा का भंडार है जो ज्ञात उपलब्ध साधनो, यंत्रो मापको की पकड में नही आती इसी ऊर्जा को वैश्विक, ब्रम्हांडीय (कॉस्मिक एनर्जी) कहा जाता है. हम इसी ऊर्जा को पराऊर्जा कहते है, जो कि भारतीय आध्यात्मिक भाषा में सटीक, यर्थाथ लगता है. परा–शक्ति को हम भारतीय, ईश्वरीय ऊर्जा पुंज मानते है. पश्चिमी देश इसे ही डिवाईन पॉवर हेवी शक्ति कहते है. सभी इंद्रियो और भौतिक साधनो से परे रहने वाली यह शक्ति 'परा' है. जो कि पिरामिड नाम से 'परा + मित' निश्चित है, झलकती है. पिरामिड वास्तव में परा–मिड यानी परा शक्ति युक्त ही है.

परा–शक्तिजन्य पूरी ऊर्जा को योगी साधक योग साधना के माध्यम से प्राप्त करते थे. इसके लिए वे पर्वतो पर रहकर या पर्वतों की गुफाओं में रहकर साधना करते थे तथा चमत्कारिक ग्रंथो में पढने को मिलते है. सूक्ष्म, रूप से पर्वत के आकार को देखे तो वे त्रिकोणाकार दिखते है. पर्वतो का पिरामिड जैसा होना उनकी अद्‌भुत शक्तिगर्भता संदर्भ में समुचित लगता है अर्थात पुराणो में दर्शित अनेक पर्वत वास्तव में पिरामिड के उद्‌गम स्थल थे.

चार त्रिकोणो से बनी पिरामिड की रचना कृति अपने शिखर केंद्र से ब्रम्हांडीय किरणो की कॉस्मिक रेंज को खींच लेती है. ये ब्रम्हांडीय किरणे १,८६,३०० मोल प्रकाश गति

से पृथ्वी गति से पृथ्वी की ओर जाती है जो कि लघु तरंग विद्युत चुंबकिय बल धाराए निर्मीत करती है. पिरामिड में ये किरण तरंग शिखर से अंदर प्रविष्ट होती है. स्वाभाविक है कि इस प्रकार पिरामिड के अंदर ऊर्जा का अत्यधिक भंडारण हो जाता है. फिर यह अत्याधिक संग्रहित ऊर्जा पिरामिड के पॉच कोणो एवं समस्त अंगो से प्रस्फुटित प्रक्षेपित होने लगती है, जो कि दस नैनो मीटर तक हो सकती है.

पिरामिड ऊर्जा का प्रमाणी करण.

पिरामिड ऊर्जा प्रमाणी करण के लिए विभिन्न देशो मे वैज्ञानिको ने प्रयोग किए है, जिसकी जानकारी रोचक तथ्य प्रस्तुत करती है. एक दल ने पिरामिड में बैठने के बाद शारीरिक तापमान में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन किया. इसमे निष्कर्ष देखने को मिला की पुरूषो के शारीरिक तापमान में गिरावट पाई गई जबकि महिलाओं के तापमान में वृध्दि.

एक अन्य खोजी दल ने किरिलयन फोटो कैमरे से पिरामिड ऊर्जा प्रभाव का चित्रांकन किया. पिरामिड में बैठने के पूर्व में आभामंडल क्षीण, करोना का कतार, बिखरी, टूटी—फूटी तथा रेखावलय धुंधलासा था. पिरामिड में बैठकर १५ मिनिट बाद ली गई तस्वीर आभामंडल प्रखर प्रकाशमान बता रहा था, करोना की कतारें अब जुडी हुई थी तथा समस्त रेखावलय सुस्पष्ट दिख रहे थे.

पिरामिड में समाहित पंचतत्व

पंचतत्वो के सामंजस्य के लिए घर में पिरामिड की स्थापना करें.

- मनुष्य जीवन भर पंचतत्वो का उपयोग करता है, इसलिए ये मनुष्य के लिए अति महत्वपूर्ण है. पांचो तत्वो के उचित सम्मिश्रण से बायो इलेक्ट्रिक एनर्जी उत्पन्न होती है. धरती पर पांचो तत्व अनिवार्य है.
- यदि इनमे से किसी एक में भी कमी आ जाए तो मनुष्य को प्राप्त होनेवाले लाभो मे कटौती हो जाती है. अंत एवं हमें अपने पर्यावरण की देखभाल करनी चाहिए. पर्यावरण संतुलन से ही पंचतत्व संतुलित रह सकते है.
- इसके अलावा घर में पिरामिड की स्थापना करके भी पंचतत्वो में सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है.
- पिरामिड का ऊपरी सिरा आकाश का तथा निचला सिरा पृथ्वी और जल का घातक होता है, जबकि त्रिकोण का मध्य भाग अग्नि का केंद्रबिन्दु होता है. पिरामिड में पंचतत्वो का समावेश माना जाता है. इसके सही उपयोग से मनुष्य सुखी तथा समृध्दशाली बन सकता है.

पिरामिड का निर्माण

पिरामिड किसी वस्तु के बजाय उसके स्वरूप से अधिक प्रभाव होता है. इसको बनाने के लिए पत्थर, लकडी, कांच, प्लास्टिक, तांबा, कागज या किसी अन्य पदार्थ का प्रयोग कर सकते है. यदि आप अधिक शुध्दता तथा लाभ चाहते है, तो लकडी के पिरामिड का प्रयोग करें. अनुसंधानो से पता चला है कि एक इंच का पिरामिड का प्रभाव उपर से ९ इंच तक का होता है.

पिरामिड का आकार

पिरामिड का निर्माण कार्य समझने से पूर्व इसके आकार को जानना बहुत जरूरी है. यह चार त्रिकोणिय आकृतियो से मिलकर बनता है. इसका निचला भाग चार कोनो से शुरू होकर ऊपर तक आते आते एक बिंदु का रूप ले लेता है.

पिरामिड बनाते समय इसके सम आकार, त्रिभुजों को इस प्रकार जोडा जाना चाहिए की चारों त्रिभुजों के शीर्ष एक ही बिंदु पर मिले. चारो त्रिकोणाकार टुकडो को एडिसिव्ह केमिकल टेप या गोंद आदि द्वारा एक–दूसरे के साथ जोड दे. इस प्रकार तैयार आकृति पिरामिड कहलाएगी.

पिरामिड की नाप–तोल

- पिरामिड के भुजाओ की ऊचाई एवं आधार का नाप तोल बहुत आवश्यक है. इसके अलावा इसकी स्थापना का स्थान भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. पिरामिड की एक भुजा को ठिक उत्तर दिशा में निश्चित कर दे. इस प्रकार रखने से अन्य तीनो भुजाएँ स्वत: सही दिशाओ मे स्थिर हो जाऐगी.
- पिरामिड के उपरोह मार्ग का कोण २६:१७ होता है. पिरामिड द्वारा पृथ्वी की दूरी तथा पाई का माप आसानी से ज्ञात किया जा सकता है. यदि आदार की लम्बाई को ऊंचाई के आधे से भाग दे तो संख्या दशमलव में प्राप्त होती है. वह पाई के माप ३.१४२८ के लगभग बराबर होती है.
- छोटी से छोटी तथा हल्की से हल्की वस्तुओं को जोडने पर उनमे जोड नजर आ सकता है. किंतु गीजा के पिरामिड में इन जोडो का कहीं पता तक नहीं चलता.

आवश्यक सामग्री

पिरामिड की शक्ति समझने और अनुभव करने के लिए इसका प्रयोग स्वयं करके देखे. प्रयोग से पूर्व इसका निर्माण आवश्यक है. अगर आप अपना पिरामिड स्वंय बनाना चाहते है तो आवश्यक सामग्री इस प्रकार है – गत्ता या प्लाईवुड, गोंद, काटने का हथीयार आदि सामान्य सामग्री.

निर्माण विधी

पिरामिड बनाने से पहले उसकी काल्पनिक आकृती बनाकर इसके बारे मे विधिवत समझ लेना चाहिए. इसके लिए यदि त्रिभुज का आधार १० से.मी. हो तो दोनो भुजाए ९.५ से.मे. रखे. अगर आधार २० से.मी. हो ता भुजाओं की लम्बाई १९ से.मी. रखनी

चाहिए. पिरामिड हेतु सर्वप्रथम चार त्रिकोनाकार लकडी या गत्ते के टुकडे काटे. फिर इन त्रिभुजों को किनारों से इस प्रकार चिपकाएं कि उन चारो के शीर्ष एक बिंदु पर आकर मिले. इस प्रकार समान माप वाले चार समद्विबाहु त्रिभुजों को गोंद या टेप द्वारा आधार से चिपका दें. बस आपका पिरामिड तैयार है.

पिरामिड और मिश्र के देवी देवता:

प्राचिन इजिप्तवासी सूर्य देवता (रे) के उपासक थे, यह बात पिरामिड नाम से भी स्पष्ट होती है, जिसके मध्य में अग्नि (ऊर्जा) है. ऐसा स्थान यानी पिरामिड. संस्कृत हिन्दी के अनुसार विग्रह करें तो राम+अति या राम+इंद्र प्राप्त होता है, जो कि राम की शक्ति का बोध करता है. अत: पिरामिड में राम है, इसका अर्थ है कि पिरामिड प्राणवान है, ऊर्जावान है, इसलिए पिरामिड से प्राणवान आकाशीय दैवी ऊर्जा प्राप्त होती है, जो कि अनेक प्रकार के चमत्कार दिखाती है.

१. अमोन–रे	४. अनुविस	७. थोथ	१०. मत	१३. खनूम
२. ओसिरिस	५. हाथर	८. प्तह	११. सेट	१४. नेईत
३. इसिस	६. होरस	९. सेवेक	१२. नेपथ्यस	१५. शेलखेत

चमत्कारकर्ता पिरामिड

भूत–प्रेत निवारण

संसार में भूत–प्रेत है या नहीं, इस पर काफी मत मतांतर हो सकते है. हम स्वयं विज्ञानवादी है, अंधविश्वासी नही है. फिर भी भूत–प्रेत की कारगुजारियों से पीडीत लोग जब सम्पर्क में आते है, तब उनकी पीडाओं को नकारा नही जा सकता.

सेना के एक निवृत्त मेजर मोहिते ऐसे अनुभवों से ग्रासित थे. इस पढे लिखे साहसी परिवार के घर में कुछ अजीबो गरिब अनुभव थे. रात में सामानों की उठा पटक, पदचाप की आवाज, उन्हे हमने तांबे के बने मंत्रसिध्द पिरामिड घर में विशेष स्थान पर रखने को दिए. इस प्रकार मोहिते साहब के यहॉ पिरामिड लगाने के बाद लगभग एक पखवाडे के पहले ही परिवर्तन का दौर शुरू हो गया, उनके घर के जिस कमरे में बाधा थी, वह वहॉ से निकल गई.

इसमें जो कुछ कार्य हुआ वह पिरामिड का चमत्कार था, पिरामिड में कोई भी अमंगल/अपवित्र वस्तु मातृत्व नहीं रह सकता. पिरामिड की ऊर्जा उस खराब शैतानी तत्व को निकाल देती हे, दुर्गंध या दूषित हवा निकाल देती है.

मस्तिष्क पर प्रभाव

पिरामिड का दूसरा चमत्कार हमने उसके मस्तिष्क पर प्रभाव के रूप में देखा है. पिरामिड कि ऊर्जा मानव मस्तिष्क पर बहुत ही अच्छा प्रभाव डालती है. जो बच्चे मतिमंदता के शिकार होते है, बौध्दिक दृष्टि से विकलांग होते है, उन पर पिरामिड मस्तिष्क की चेतना संस्था को सक्रिय करता है.

बेहोशी निवाराण

यदि किसी भी कारण से मनुष्य बेहोश हो जाए तो आप बिना विलम्ब किए तत्काल पिरामिड का उपयोग कर उसका चमत्कार देंखें. बेहोश व्यक्ति के सिर पर पिरामिड रख देने से या कलाई पर पिरामिड रखने बांधने से बेहोश व्यक्ति पॉच मिनिट के अंदर होश में आता है, जिन्हे मिरगी के दौरे आते है या जिन्हे अन्य किरणो से मस्तिष्क असंतुलन के झटके आते है उन पर पिरामिड का प्रयोग किया जा सकता है.

मशीन पर प्रयोग

ठंड में प्राय: पानी की मशीन्स बंद पड जाती है, जल्दी शुरू नही होती, हमने उस पर पिरामिड को रखकर चमत्कारी परिणाम देखा है. पॉच मिनिट पिरामिड मशीन पर रखते ही ऊर्जा की गरमाहट के कारण जमा हुआ तेल, ग्रीस लचीला होने से मशीन अपना कार्य शुरू कर देती है.

मृत संजीवन चमत्कार

गर्मी में पौधे सूखना आम बात है. कभी कभी कुछ अन्य कारणों, किटाणुओं के कारण पौधे पेड सूख जाते है, जिन्हे मृत माना जाता है, ऐसे पौधो की पिरामिड में रखकर पुन:जीवित किया जा सकता है.

ऐसा प्रत्यक्ष प्रयोग इंदौर के डॉ. खेतावत ने सिध्द कर दिखाया है. उन्होने मृत घोषित किए गए शहतूत की जड को पिरामिड द्वारा पुन: जीवित करने का चमात्कार सिध्द कर दिखाया है. यह प्रयोग उन्होने बकायादा विधिवत तरीके से कर कृषिवेत्ताओं से परीक्षित प्रमाणित करावाया है. इस तरह पिरामिड 'संजीवनी प्रदाता' सिध्द होता है.

मंगल पिरामिड – एक चमत्कारिक अनुभव

शरीर मे किसी भी तत्व की कमी शारीरिक संतुलन को बिगाड देगी और व्यक्ति बीमार हो जायेगा. समुचा विश्व एक मिली जुली ब्रम्हांडीय प्रतिकृतियों का प्रतिरूप है. जब पूनम की रात में चंद्रमा अपने पूरे प्रभाव में होता है तो तभी ज्वार भाटा आता है, व्यक्तियों का मानसिक चंचलता बढ जाती है. इसी रात में सबसे ज्यादा पागलपन बिखरता है और सर्वाधिक आत्महत्या इसी में होती है.

हमने देखा होगा कि अधिकांश यंत्रो में त्रिकोण का प्रयोग होता है. श्रीयंत्र में नौ त्रिकोणो का प्रयोग किया गया है. काली यंत्र, कनकधारा यंत्र, कुबेर यंत्र आदि मे त्रिकोण यंत्र का प्रयोग होता है. मंगल का चिन्ह भी त्रिकोण ही है. इससे सिध्द होता है कि मंगल अर्थात शुभ त्रिकोण में निहित है.

वैदिक ज्यामिति के अनुसार त्रिकोण स्थिरता सुचक है और इसकी आकाशगामी नुकीली शिखर रचना प्रगति दर्शक होती है. चार त्रिकोणो से मिलकर पिरामिड बनता है, जिससे स्थिरता एवं प्रगतिशीलता चौगुनी हो जाती है. कोई भी आकृति दबाव से गुजरते ही अपना आकार खो देती है. लेकिन त्रिकोण किसी भी परिस्थिती में त्रिकोण ही रहेगा. अत: त्रिकोण की स्थिरता का सूचक कहा जाता है.

इस मंगल पिरामिड को आप भी अपनी प्रगति, स्थिरता के लिए प्रयोग कर सकते है. वे व्यक्ति जो निरंतर मानसिक कार्य करते रहते है, निरंतर दबावमे रहते है, जिन्हे वास्तुदोष सताती रहती है या जो मानते है कि उनका ऑफिस वास्तु अनुसार नही है तो वे इस चमत्कारिक पिरामिड का प्रयोग कर बडे बडे लाभदायक आश्चर्यजनक परिणाम पा सकते है.

ब्रम्हांडीय शक्ति का केंद्र – पिरामिड

पिर + मिड, पिरा का अथ्र अग्नि और मिड का अर्थ मध्य में. अग्नि जीवन ऊर्जा है, वह मध्य में ही रहकर कार्य करती है. इस पृथ्वी पर सूर्य ऊर्जा ही पानी बरसाता है. पानी और मिट्टी मिलकर वनस्पति को पैदा करते है. वनस्पति मनुष्य और सारे शाकाहारी प्राणीयों का आहार है. वनस्पति पेड प्राणवायु को छोडते है. उससे ही प्राणी प्राणवान बनते है.

पिरामिड की आकृति त्रिभुजाकार है. इस आकार के निर्माण से ऊर्जा का शक्तिशाली यंत्र बन जाता है. ध्वनि से अक्षर और अक्षरों से शब्द बनते है. शब्दों से संयोजित यंत्र निर्मित होते है. आकार से व निसृत ऊर्जा से संभव शक्ति को यंत्र शक्ति कहा गया है. जिस तरह से मंत्र शक्ति काम करती है, वैसे ही यंत्र शक्ति काम करती है. मंत्र और यंत्र के सहयोग से बनी ऊर्जा शक्ति को तंत्र कहा गया है.

पिरामिड बनाने के लिए नक्षत्र, तारे, सूर्य, पृथ्वी, हवा, आसमान व पर्यावरण का अध्ययन किया जाता है. उससे ही पिरामिड के आकार, चुम्बकिय शक्ति, शरीर, मन

और भाव प्रभावित होते है. मंदिरो एवं विशिष्ट अनुष्ठानो के समय केवल मंत्र ही नही बोलते, पिरामिड की आकृति की स्थापना भी की जाती है.

उसके लिए पिरामिड के आकार की रचना विशिष्ट अनुष्ठानपूर्वक की जाती है. ऐसे ही मंदिरो की वेदी के मध्य में भी पिरामिड का आकार बना दिया जाता है. जिससे अनायास ऊर्जा का उत्पादन और भी बढ जाता है.

पिरामिड के भीतरी वातावरण का निरंतर अध्ययन करने वाले वैज्ञानिको की राय है कि पिरामिड से निकलने वाली ऊर्जा को अलौकिक ऊर्जा कहते है. उस कौस्मिक ऊर्जा से तथा पिरामिड के आकार से चुम्बकिय वातावरण बनता है. उस वातावरण में जो मंत्रो का उच्चारण किया जात है अथवा मन: की एकाग्र कर समता की साधना की जाती है.

पिरामिड शिखर ब्रम्हांडीय ऊर्जा को खीच लेते है. यह अंदर प्रविष्ट हुई ऊर्जा परिवर्तन के नियमानुसार एक दूसरे से टकराकर केंद्रित ऊर्जा के इलाके का निर्माण करती है तथा उन्हे चारों कोणो से बाहर फेंकती है. फलस्वरूप यह ऊर्जा कहीं पर भी व्याप्त नेगेटिव प्रभाव को मिटाती है एवं पॉजिटिव्ह प्रभाव को बढाती है.

नवग्रह पिरामिड

आप जानते ही है कि हर राशि का कोई न कोई स्वामी ग्रह होता है. वह ग्रह सबसे अधिक आपके जीवन को प्रभावित करता है, क्योकि आपकी राशि अर्थात चंद्रमा आपके मन मस्तिष्क को नियंत्रित करता है. शरीर की सभी क्रियाएं मन एवं मस्तिष्क द्वारा संचालित है. यदि आपका काम करने का मन नही है, तो मस्तिष्क वह बात नहीं मानेगा और आप कार्य नहीं कर पाएंगे.

अत: व्यक्ति के जीवन में राशी का महत्व सबसे अधिक है. उसी राशि के स्वामी ग्रह के शुभ प्रभाव को अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए आप अपनी राशि के पिरामिड का प्रयोग करें. आपकी राशी का स्वामी ग्रह कौन सा है इसे जानने के लिए नीचे सारणी दी जा रही है.

राशि का नाम		**राशि का स्वामी ग्रह**
▪ मेष	Aries	मंगल
▪ वृष	Taurus	शुक्र
▪ मिथुन	Gemeni	बुध
▪ कर्क	Cancer	चन्द्रमा
▪ सिंह	Leo	सूर्य
▪ कन्या	Virgo	बुध
▪ तुला	Libra	शुक्र
▪ वृश्चिक	Scorpio	मंगल
▪ धनु	Sagittarus	गुरू
▪ मकर	Capricorn	शनि
▪ कुम्भ	Aquarius	शनि
▪ मीन	Pisces	गुरू

इसका उपयोग कैसे करें?

अपनी राशि के अनुसार अपने राशि पिरामिड का उपयोग करें. आपकी अपने आप मे बहुत भारी परिवर्तन महसूस होगा. इस पिरामिड को आप अपने कमरे में, अपने ऑफिस के टेबल पर या वहां पर रखें जहां पर आप अधिक समय गुजारते हो.

मनोकामना पूर्ति का यंत्र – पिरामिड

हमें सबसे अधिक आवश्यकता होती है, मन की शांति एवं एकाग्रता की. आज हम सभी साधनों के होते हुए भी अपने आपको अशांत एवं व्यग्र पाते है. हम अपनी पूरी ऊर्जा बाहरी कार्यों में खर्च करते है. बचपन से ही एक मनुष्य जाने अनजाने में अपने चारों ओर की वास्तुओं से वातावरण से प्रभावित होता है तथा उसी से प्ररित अपना जीवन जीता है, तथा इसका उसके अंत:करण पर भी गरहा प्रभाव पड़ता है.

पूरे विश्व में एक आकृति विशेष को इतना महत्व दिया जाना उसके विषय में सोचने पर मजबूर करता है. खोजकर्ताओं ने इस विषय पर कई शोध किए तथा उन्होने विस्मयकारी परिणाम पाए है. उन्होने पाया कि यह आकृति वैज्ञानिक ढंग से मानव शरीर को प्रभावित कर कई रोगों से छुटकारा दिलाती है तथा शरीर को स्वस्थ करती है.

यह आकृति मनुष्य में मानसिक दृढता लाती है तथा उसकी इच्छा शक्ति को बढाती है. इससे कई प्रकार के मानसिक रोग दूर होते है तथा व्यक्ति पहले से अधिक शांत, स्थिर चित्त एवं बुध्दिमान बनाता है. जिससे वह अपने जीवन में सफलता एवं स्थिरता की सीढिया चढता है.

उसके प्रभाव से व्यक्ति को आत्मिक शांति मिलती है, उसका आध्यात्मिक विकास होता है. यह आकार साधक की अपने चित्त को एकाग्र करने एवं ध्यान मे लीन होने में सहायता करता है.

पिरामिड की आकृति का आपके दैनिक जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है. इसके प्रयोग से आपके घर के वास्तु को सुधारा जा सकता है. आपके निवास एवं कार्यालय को अधिक कार्यकुशल आराम दायक, समृध्दिशाली एंव उत्साहवर्ध्दक बनाया जा सकता है.

कई शोधकर्ताओं ने अपने संस्थान को ही पिरामिडनुमा बना दिया है. तो कई विद्द्वानों ने पिरामिडनुमा ध्यान केंद्र विकसित किए है. इस विषय का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने के लिए पूरे विश्व में कई स्थानों पर अनुसंधान संस्थान स्थापित किए गए है. यही कारण है कि ऋषि मुनियों ने भी नगरों से दुर जाकर पहाडी में बनी उन गुफाओं एवं कंदराओ मे ध्यान लगाया जहां उन्हे अपने सूक्ष्म ऊर्जा स्तरों का अभ्यास करने में एकांत मिलती थी तथा उनका मन वहीं विशेष ऊर्जा का अनुभव कर पाता था.

पिरामिड एक चमत्कारिक ऊर्जा के रूप में आज सम्पूर्ण विश्व मे अपना स्थान बना चुका है. पिरामिड की आकृति पर लोगो की आस्था एवं विश्वास जमने लगा है. आज लोग इसके वैज्ञानिक कारणो के साथ साथ इसे धर्म और अध्यात्म का प्रतिक भी मानते है. हम सभी का मानना है पिरामिड ब्रम्हांड से ब्रम्हांडीय ऊर्जा के साथ साथ ईश्वरीय शक्ति को भी अपनी ओर आकर्षित करता है. इसी कारण पिरामिड को सौभाग्य का प्रतिक समझाते है.

त्रिकोण में स्थायित्व है.

हिंदू संस्कृति में महाभारत के समय में पिरामिड की आकृति का वृत्तांत मिलता है. उस काल की स्थापना कला मे भी पिरामिड का प्रयोग किया जाता था. इस आकृति के विशेष प्रभाव के कारण इसका प्रयोग मंदिरो के गर्भगृह को बनाने में किया जाता था. आज हम पुराने मंदिरों के ऊपर गुम्बद को ध्यान से देखे तो उसका आकार पिरामिड की संरचना से प्रेरित लगता है.

ज्योतिष में त्रिकोण का महत्व

१. जो पाठक ज्योतिष में विश्वास रखते है, थोडी सी जानकारी रखते है, उन्हे मालूम होगा की जन्मकुंडली में बारह भाव होते है. उन बारह भावो में केन्द्र के चार भाव भाग का विशेष महत्व होता है और केंद्र के चार भाग से भी त्रिकोण का महत्व अधिक होता है. जन्म कुंडली में त्रिकोण का अर्थ लग्न, पंचम भाव और नवम भाव से है.

२. किसी भी मंदिर, मस्जिद, चर्च एवं गुरूद्वारे पर गुम्बद त्रिकोणनुमा ही रेहेगा. आज से २००० वर्ष पूर्व बना सांची का स्तूप जहां से बौध्द धर्म पूरे विश्व में फैला. दक्षिण के विशाल मंदिर भी इसी का उदाहरण है.

३. उल्टा हवन कुंड भी पिरामिड ही होता है.

४. जब हवन की वेदी बनाई जाती है, तब वह पिरामिड आकार में बनता है.

५. ज्योतिष के साथ ही साथ तंत्र मे भी विभिन्न यंत्र जो प्राय: उपयोग में लाए जाते है, उनमे अधिकतर त्रिकोण का प्रयोग होता है. जैसे श्री यंत्र, अन्य यंत्र आदि. सबसे अधिक त्रिकोण श्री यंत्र में प्रयोग हुए है.

६. अनाज के जो भडांर बनाए जाते थे, वे भी पिरामिडनुमा घरों में रहते थे. जिनमे लम्बे समय तक अनाज सुरक्षित रखा जा सकता था.

७. जिस भू—भाग में सर्दी अधिक रहती है, वहॉ प्राय: मकान पिरामिडनुमा ही बनाए जाते है, जिससे ऊर्जा अधिक संचित रहती है.

८. त्रिकोण में कितनी शक्ति होती है, इसी का प्रमाण फ्रांस का एफिल टॉवर है. जिसमे हजारों त्रिकोणे को आपस में जोडकर विश्व का आश्चर्यजनक निर्माण किया है और वह भव्य टॉवर आज भी उसी प्रकार सुरक्षित रूप में खड़ा है.

९. जब भी कोई व्यक्ति हाथ जोड़ता है त बवह व्यक्ति अपनी हृदय की सद्‌भावनाओं को एक त्रिभुज के माध्यम से सामने वाले व्यक्ति पर प्रहार करता है और यह प्रहार इतना अधिक शक्तिशाली होता है कि सामने वाले व्यक्ति को इसका प्रति उत्तर देना ही पड़ता है.

१०. प्राय: आप जब घर मे पूजा करते है, तब घंटी अवश्य बजाते है. क्या आपने कभी उस घंटी की आकृति पर गौर किया है. जी हा उसका आकार भी पिरामिडनुमा ही है.

११.जब व्यक्ति किसी साधना में लीन होता है, तब भी वह त्रिकोण के रूप में ही साधना करता है. योग करने पर हम त्रिकोण का ही रूप धारण कर लेते है.

उपरोक्त उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि जीवन के हर क्षेत्र में त्रिकोण कितना महत्वपुर्ण है, त्रिकोण का कितना स्थायित्व है.

पिरामिड प्रयोग से वास्तु शांती

हमारे शरीर, मन–मस्तिष्क तथा उनके क्रिया कलाप विचार प्रवाह को चलाने के लिए हम सभी को ऊर्जा की आवश्यक्ता होती है. इस पृथ्वी पर ऊर्जा का मुख्य स्त्रोत सूर्य को माना जाता है. उसका कारण है, उसमे प्रज्वलित अग्नि जो आदिकाल से निरंतर प्रस्फुटन करती रही है. पृथ्वी निरंतर सूर्य की परिक्रमा करती रहती है.

पृथ्वी के चुम्बकीय प्रवाहों, दिशाओ, सूर्य की किरणों, वाय प्रवाह एवं गुरूत्वाकर्षण के नियमो का समन्वय ही पूर्णरूपेण वास्तुशास्त्र है. यदि भवन निर्माण कला में से वास्तु को निकाल दिया जाए तो वह मात्र लोहे, सिमंट, इंट, पत्थर का ढेर ही रह जाएगा. जिस प्रकार मनुष्य के शरीर में आत्मा का होना अनिवार्य है, आवश्यक है, उसी प्रकार किसी भी भवन निर्माण में वास्तु का होना अति आवश्यक है, इसके बिना वह निर्माण अधूरा ही है.

आधुनिक वास्तु रचना तंत्र, अत्याधिक विकसित एवं उन्नत है, फिर भी वह शत प्रतिशत निर्दोष होगा यह कहा नही जा सकता. वास्तु शिल्पी भव्य एवं सुंदरतम वास्तु निर्माण कर सकता है, परंतु जाने अनजाने मे होने वाले दोष मिटाना उसके वश में नही रहता. निर्मित वास्तु मे तोड फोडकर दोष निवारण सुझाना एक खर्चिला एवं अव्यव्हारिक उपाय होगा.

दक्षिण भारत की आकाशगामी शिखर रचना 'पिरामिड' के रूप में पूरे विश्व में फैली थी, जिसका वर्तमान मे हम मिश्र में अद्‌भुत रूपाकार के रूप में दर्शन होता है. इन रचनाओं के पीछे निश्चित सोची समझाी विचारधारा थी जो 'सर्व सुखिनः संतु' अर्थात सर्वप्राणी मात्र के कल्याण का उद्‌देश लेकर प्रचिलित हुई थी.

पिरामिड की आकृति का आपके दैनिक जीवन पर ही प्रभाव पड़ता है. इसके प्रयोग से आपके घर के वास्तु को सुधारा जा सकता है. जिस प्रकार वास्तुकला एवं फेंग शुई में विण्ड चाईम, पात्कुआ दर्पण, पर्दो व प्रकाश आदि का प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार पिरामिड वास्तु के आधार पर सुधारा जा सकता है तथा अपने निवास को अधिक आरामदायक, समृध्दिशाली एवं उत्साहवर्धक बनाया जा सकता है.

पिरामिड वास्तु मूल सिध्दांत वास्तु शास्त्र के अनुसार ही है, परंतु इसमे वास्तु दोष को दूर करने के लिए उस स्थान पर पिरामिड, पिरामिड यंत्र तथा पिरामिड चिप का प्रयोग किया जाता है. जिससे नकारात्मक ऊर्जा घर में प्रभाहित नहीं हो पाती. इस ऊर्जा को पिरामिड गृहण कर सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण करता है. पायरावास्तु का प्रयोग भूमि भवन, मनुष्य तथा घर के सामान एवं उनकी स्थिति सुधारने मे किया जा सकता है.

भवन निर्माण के लिए भूमि का भाग खरीदने के बाद मकान बनाने से पहले आपके उसके केंद्र में पिरामिड यंत्रो को सतह से एक फुट की गरहाई में रखनी चाहिए, जिससे भूमि का वह खंड क्रिया शील हो जाती है. इस प्रकार भुखंड के प्रत्येक कोने मे पिरामिड यंत्र स्थापित करने से भुखंड की रक्षा होती है तथा चारो ओर के बुरे प्रभावों से बचा रहता है.

संक्षेप मे पिरामिड वास्तु को हम इस प्रकार समझ सकते है कि वास्तु के मूल सिध्दांतो के अनुसार आपके घर या भूखंड मे कोई वास्तुदोष है तो उसे पिरामिड यंत्र की सहायता से दूर किया जा सकता है. पिरामिड की शक्ति को नौ की संख्या में यंत्र को लगाकर बढाया जा सकता है. उन्हे वास्तुदोष दूर करने के लिए उस दिशा एंव क्रम में रखे जिससे आदर्श वास्तुस्थिति पैदा हो सके. पिरामिड वास्तु का प्रयोग घर के विशेष क्षेत्र को ऊर्जावान बनाने में कर सकते है.

भुखंड को क्रियाशील करना

भूखंड को क्रियाशील करने के लिए विभिन्न प्रकार से पिरामिड भूमि में लगाए. भूखंड के दलान दोष को दुर करने के लिए– यदि भूमि दलान दोष से दुषित है तो निम्न प्रकार से पिरामिड भूमि में डालकर दलान दोष को दूर कर सकते है.

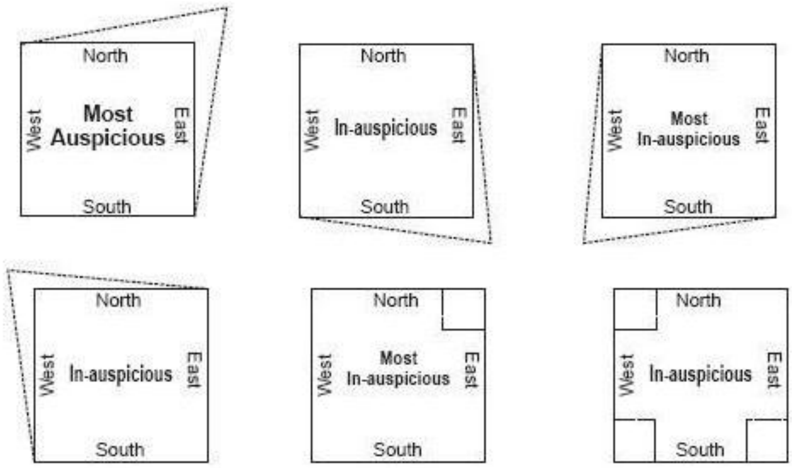

भुखंड के कटे हुए कोनो के दोष को दूर करने के लिए – बहुत से भूखंड ऐसे होते है जिनके कार्नर कटे फटे से होते है. निम्न प्रकार से पिरामिड द्वारा वास्तु दोष दूर करें. घर के सामने स्थित किसी विशेष आकार के कारण पडने वाले दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए.

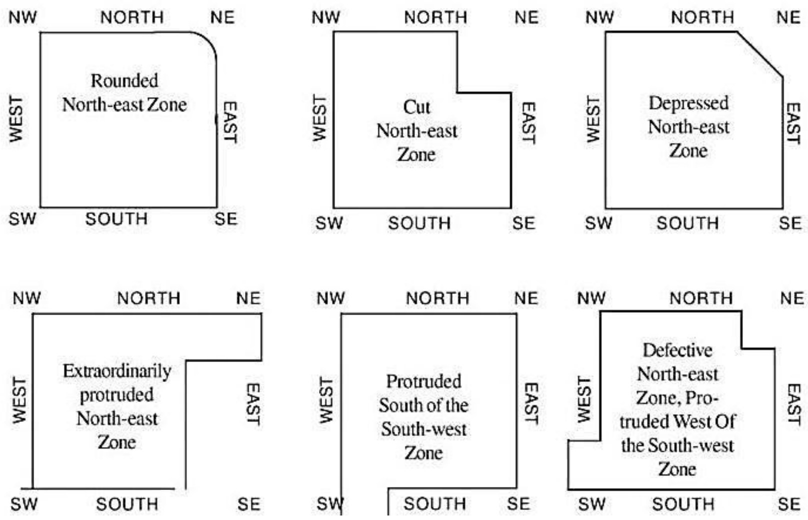

पिरामिड एवं मंदिर वास्तुः

पिरामिड वर्गाकार या बहुभुज आकर का, पर केंद्रीय बिंदु के रूप में शीर्ष पर मिलने वाली रेखाओं से बनी आकृति है. पिरामिड का शाब्दिक अर्थ है– जिसके मध्य में अग्नि हो. ग्रीक भाषा में पाइरो का अर्थ अग्नि और मिड का मध्य है. अर्थात पिरामिड वह आकार या जगह है जिसके मध्य मे अग्नि हो संस्कृत में अग्नि का अर्थ ऊर्जा है.

अपने आप मे सम्पूर्ण ब्रम्हांड को समेटने का हिन्दू वास्तु शास्त्र का यह क्षेत्र और उसकी दृष्टि परिधि इतनी व्यापक है कि विराट प्रभुदर्शन से प्रेरित और आनंदित होकर ऋषियो ने स्तुति मंत्र रचे और उन्हे ही परम इदम कहा. इस तरह पिरामिड परम इदूम का अपभ्रश है जो परब्रम्ह परमात्मा का वास्तु विचार व्यापक और विराट है. इतिहासकार पी. एन. ओक के कथानुसार जिस तरह निर्मीत में प्रथम अक्षर पी का उच्चारण नही किया जाता है, उसी तरह पिरामिड में प्रथम अक्षर शांत हिता है तो वह राम इद्म है जिसका अर्थ है जो राम ही है. राम अर्थात प्राणतत्च सवोच्च ऊर्जा को भी समप्रेरित करते है.

सामान्यत: मंदिरो के दो मुख्य भाग होते है.

नीचे वाला भाग उपपीठ और ऊपरी भाग पिरामिड सदृश्य आकार का शिखर जिसे विभिन्न आकृतियो से सजावटी रूप देकर आकर्षक बनाया जाता है.

उदाहरण के लिए दक्षिण भारत मे तंजोर के बृहदेश्वर मंदिर को देखने से उसका पिरामिडीय आकार स्पष्ट दिखाई देता है.

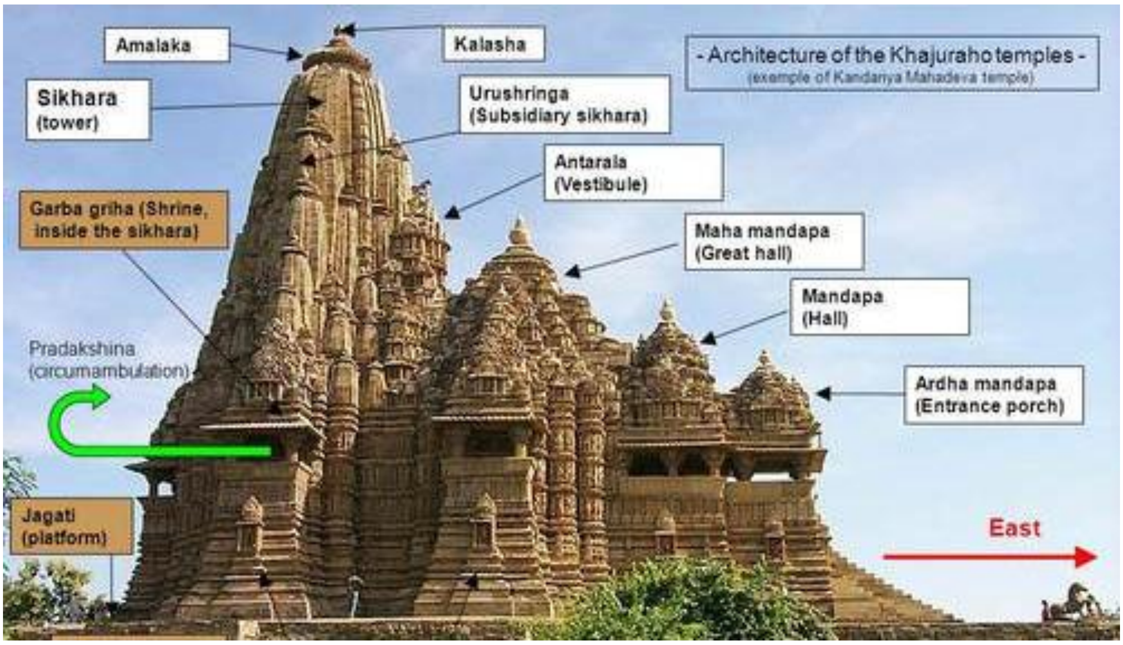

पिरामिड से रोग निवारण

पिरामिड त्रिकोण आकृति वाले स्तूप स्मारक है. ऐसा माना जाता है कि शंकु के आकार के कारण इसमे प्राकृतिक ऊर्जाए संचित है. जिससे इसमे रखी गई वस्तुएं काफी समय तक खराब नही होती है. वैज्ञानिक और खगोल शास्त्रियों ने पिरामिड के इस गुण को पिरामिड पॉवर की संज्ञा दी है. पिरामिडिय चिकित्सा दिनोदिन लोगप्रिय होती जा रही है. पिरामिड से निम्न रोगों से छुटकारा पाया जा सकता है.

- पिरामिड में रखे पानी का सेवन करें तो पेट की सारी बीमारीया दूर हो जाती है.
- चर्मरोग, फोडे फुंसी, मलावरोध आदि पिरामिड के अंदर बैठने से ठीक हो जाते है.
- कई प्रौढ महिलाओं का यह मत है कि यदि पिरामिड के भीतर रखा पानी चेहरे पर लगाए तो वह सनक्रिम ओर ब्लिचिंग जैसा कार्य करता है.
- पिरामिड में रखे पानी से ऑखो को धोने से उसकी ज्योति बढ जाती है.
- पिरामिड के आकार की टोपी पहनने से सारे दर्द दूर हो जाते है.
- पिरामिड में १०–१५ मिनट तक बैठने से इच्छाशक्ति दृढ होती है. एकाग्रता और आनंद की प्राप्ती होती है.
- बीमार सुस्त पौधो को पिरामिड में रखा जाए तो वे उत्तेजित होकर सही हो जायेंगे.
- पिरामिडनुमा भंडार मे अनाज खाद्य सामग्री रखी जाए तो उसमे कीड़े नही लगेंगे.
- पानी, कच्चे–पक्के फल आदि रखने पर वे खराब नही होते.
- किसी बहुत थके हुए व्यक्ति को दस मिनट तक पिरामिड के भीतर बिठाया जाए तो वह चुस्त दुरूस्त हो जायेगा
- पिरामिडनुमा भंडार में यदि फलों को रखा जाए तो न उनकी सुगंध जाएगी और न वे मुरझाएंगे.

शोधकर्ताओं का यह मत है कि पिरामिड का आकार शंकु के समान है, इसलिए पृथ्वी पर आने वाली ऊर्जा उसके त्रिकोण अर्थात छत पर जाकर एकत्रित हो जाती है और सभी ढालो से उतजीत हुई धरातल पर उतरती है और यहीं से इसकी कार्य प्रणाली शुरू होती है. इसमे कुछ विशिष्ट तरंगे होती है जो इसके अंदर के वातावरण को शुध्द बनाए रखती है. इन्ही तरंगो के कारण ये लाभ हमें प्राप्त होता है.

भारतीय दर्शन में पिरामिडो का महत्व

प्राचिन काल से ही भारतीय राजाओं ने पिरामिड उपलब्धियो के अंतर्गत ऐसे महल बनवाए जो वृध्द होने के साथ साथ स्वच्छ और सुंदर भी थे. उन्होने जल भंडार को ध्यान रखते हुए ऐसी बावडीयां बनवाई जिनमे जल काफी समय तक रह सके. इसके कई प्रत्यक्ष उदाहरण आज हमारे सामने है.

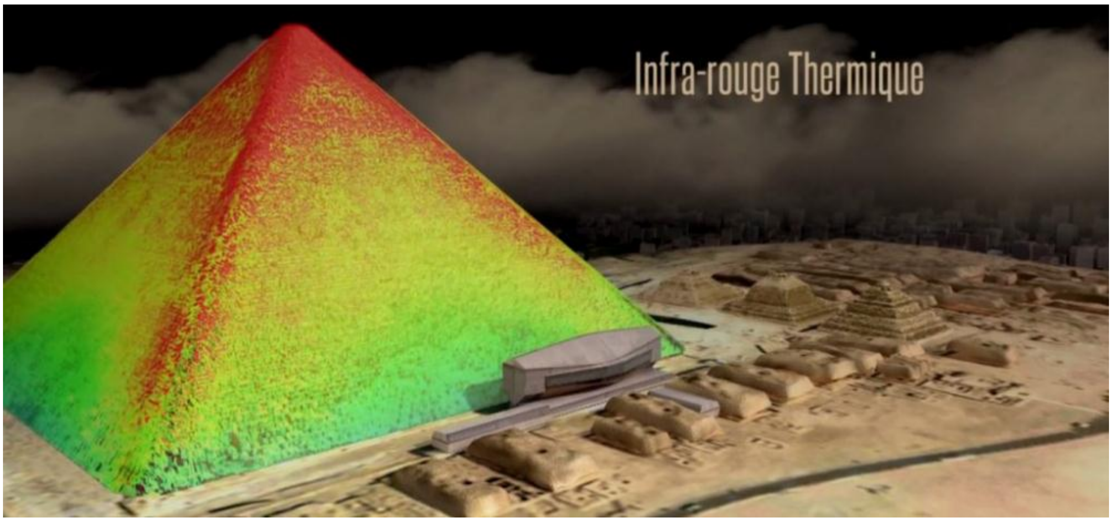

पिरामिड की आकृति ज्यामितीय त्रिकोणात्मक्ता का चमत्कार दर्शाती है. त्रिकोणात्मक आकार गुरू ग्रह से सम्बंधित है, तो चार त्रिकोण मिलाकर बनता चौकोर मंगल ग्रह की अग्नि तत्वीय प्रखरता व शक्तिशाली अग्रता समानहित करते हुए समन्वित प्रभाव देता है. वैदिक दर्शन के अनुसार आकाश का स्वामी इंद्र तथा इसका स्वामी वरूण है. अत: आकाशिय परा ऊर्जा प्रादाता पिरामिड चैतन्यशाली सिध्द होता है. इस चेतना शक्ति का अंक नौ माना गया है. जो अपने गुणांक का संयोग हमेशा अपरिवर्तनीय ही रखता है तथा नवनिव ऊर्जा का प्रस्कुरण दर्शाता है. पिरामिड की संरचना इसी आधार पर की गई है.

वास्तु एवं पिरामिडीय उपचार

यह सार्वभौम स्वीकृत विज्ञान है. हम हमारे प्राचिन समय त्रेता युग एवं द्वापर युग में पाते है कि लोग वास्तु शास्त्र आधारित निर्मीत घरों में अत्यंत प्रसन्नापूर्वक रहते थे.

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि पृथ्वी अपने उत्तर दक्षिण अक्ष पर धुर्णन करती है और वह अपने अक्ष से उत्तर की ओर कुछ झुकी हुई भी है. उत्तर पूर्वी क्षेत्र धन ब्रम्हांड ऊर्जा से युक्त होने के कारण महत्वपूर्ण है, परंतु हम वर्तमान आर सी सी निर्माण मे घुमावदार डिझाइन बनाते समय इसका ध्यान नही रखते एवं प्रत्येक कमरे मे एक कोना भवन के बाहरी उत्तोलन के लिए छोड देते है.

हमने अनेक घरों का अध्ययन किया है जिनके निर्माण में वास्तु सिध्दांतो का पालन नही किया गया. उनमे रहने वाले लोग वित्तीय हानिया, स्वास्थ समस्याएं, चोरियां, दुर्घटनाओं, मुकदमा, अनुपचारीय बिमारियों से ग्रस्त थे.

इन घरों में हमने पूर्व योजित एवं आवेशित पिरामिड यंत्रो हेतु आदि उपचारत्मक उपयोग किए और इसके फलस्वरूप इन्हे तुरन्त लाभ प्राप्त हुआ और अधिकांश वांछित फल प्राप्त हुआ.

ये पिरामिड सौर ऊर्जा पृथ्वी की चुंबकिय ऊर्जा गुरूत्वाकर्षण शक्ति एवं ब्रम्हांण्ड ऊर्जा के समिश्रण से प्राप्त किए जा रहे है.

पिरामिड शक्ति से कोई भी व्यक्ति, जाति, वंश व धर्म के भेदभाव बिना पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकता है. यह अनुभव भी हमारे प्राचिन ऋषियो द्वारा इस क्षेत्र मे किए गए अनुसंधान की ही पुष्टि करते है.

कुछ लोगों की यह धारणा है कि वास्तु का प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर अंशिक मात्र ही होता है, परंतु यह दृढतापूर्वक दिशा स्थिती द्वारा ही नियंत्रित होता है. दूसरे शब्दों मे यदि एक वायुयान चालक गलत दिशा मे जाएगा तो व अपने लक्षित स्थान से अन्यंत्र उतरेगा. अत: दशा के समस्त लाभ प्राप्त करने हेतु घर की सही दिशा में होना भी अत्यावश्यक है.

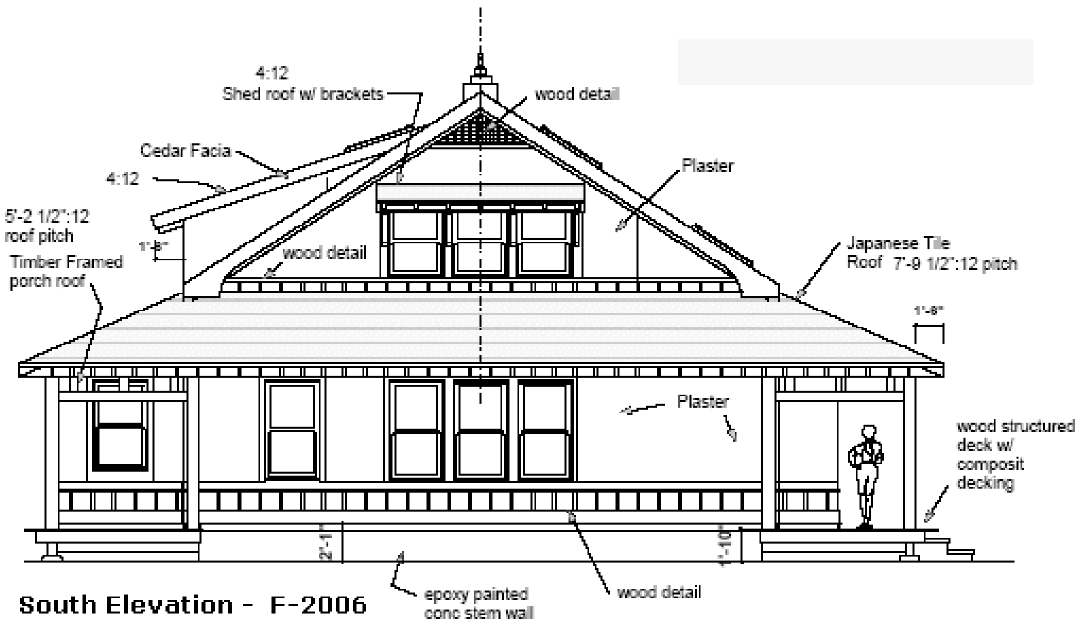

पिरामिड एंव रंग चिकित्सा

पिरामिड तथा रंग चिकित्सा के बारे मे किए गए कई प्रयोगो के परिणाम आशानुसार सामने आए है. काफी अनुभवो से सिध्द हुआ है कि रंग चिकित्सा सबसे स्वाभाविक पध्दति है.

रंगो का अलग अस्तित्व है, क्योकि ब्रम्हांड तथा सभी पदार्थ रंग युक्त है. वे निरंतर भिन्न भिन्न रंगो को अपने अंदर से उत्सर्जित करते रहते है. मनुष्य के सभी बाहरी तथा भीतरी रंग रंगीले है. बाहरी अंगो की तुलना मे आंतरिक अंग अधिक रंग युक्त है. अतः आंतरीक अंगो कि चिकित्सा हेतु विभिन्न रंगों के पिरामिडो का प्रयोग उचित प्रकार से किया जाना लाभप्रद होता है.

रंग चिकित्सा पध्दति मे पिरामिड को अनेक रंगो से रंगकर या उन पर रंगीन कागज चिपकाकर रोगी को उसके अंदर बैठाने से शीघ्र ही स्वास्थ लाभ होता है.

रंगो का वर्गीकरण

सूर्य के प्रकाश से सात रंगो को उनकी प्रकृति के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है.

बैंगनी— बैंगनी रंग आकाश तत्व का वाहक है. यह लकवा, सायटिका, जोडो का दर्द, पागलपन, मिरगी, उल्टी एवं सिर दर्द आदि रोगों के लिए बहुत लाभकारी है. ऐसे रोगों से ग्रस्त व्यक्तियो को बैंगनी के कटैला रत्न या नीलम के पिरामिड का उपयोग करना चाहिए.

जामुनि— इस रंग में आकाश एवं अग्नि तत्व का समायोजन होने से यह अतिशीघ्र रोग मुक्त करने में लाभदायक है. यह शरीर में उत्पन्न गॉठ तथा दर्द भी मिटा देता है.

इसके प्रयोग हेतु एक पिरामिड को जामुनी रंग से रंग दें. फिर उसे सूर्य के प्रकाश में रखकर १० मिनट तक उस पर अपना ध्यान केंद्रीत करें. इससे गांठ तथा दर्द में राहत मिलती है.

नीला– यह रंग ऑख, कान एवं नाक के रोग में बहुत उपयोगी होता है.

हरा– यह रंग मन को शांति प्रदान करने वाला तथा ऑखो को सुहाने वाला है. घर मे हरे रंग का पिरामिड अधिक प्रयोग करने से हृदय एंव रक्त विकारों मे बहुत लाभ होता है.

पीला– पीला रंग मंदाग्नि, कब्ज तथा वात विकार आदि रोगों मे उपयोगी है. उष्ण प्रकृति वाला यह रंग अग्नि तत्व के रोगो मे सहायक होता है. इसके लिए पीला भोजन, दाल आदि ग्रहण करना चाहिए.

नारंगी– यह रंग रक्त संचारण में वृध्दि करके इच्छा शक्ति मे दृढता लाता है. सुबह के समान रागग्रस्त भाग पर नारंगी कांच द्वारा सूर्य की किरण डालकर सिकाई करने से काफी लाभ होता है.

लाल– लाल रंग की प्रकृति उष्ण होने से यह अग्नि तत्व का वाहक है. यह सर्दी, कफ तथा क्षय आदि रोगो के इलाज मे सहायक है. इसके लिए लाल कपडे पर एक पिरामिड रखकर उससे कुछ दूंरी पर लाल कपडा बिछाकर बैठ जाए. फिर सूर्य के मध्दिम प्रकाश मे पिरामिड के मध्य दृष्टि केंद्रित करें. इससे उपरोक्त रोगो में काफी लाभ होता हे.

पिरामिड और ज्योतिष

प्राचिनकाल से ही लोगों को ज्योतिष की पूरी जानकारी थी, इसलिए इस विद्या का प्रयोग कई लोकपियोगी कार्यो में किया जाता रहा है. पिरामिड और ज्योतिष के सम्बंधो तथा विश्व विख्यात पिरामिड निर्माण में ज्योतिषशास्त्र के योगदान पर विवाद चल रहा था. किंतु अब विश्व के प्रसिध्द वैज्ञानिकों के उन प्रश्नों का हल खोजकर इनका सटीक उत्तर दिया है.

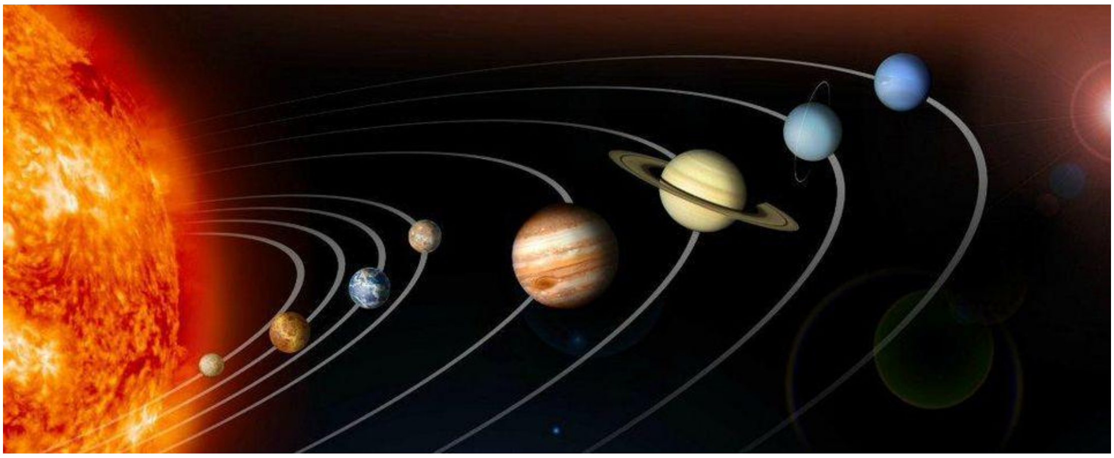

तारों का महत्व

लंबे समय से अरबो विद्वानो ने ज्योतिर्वेधशालाओ द्वारा पिरामिडो को अच्छी तरह समझाने का प्रयत्न किया, किंतु उनके द्वारा दी जाने वाली कई महत्वपूर्ण जानकारी नकारी जाती रही है. काफी समय के अंतराल पर 'द ग्रेट पिरामिड ऑब्जरवेटरी टॅम्बड' नामक पुस्तक ब्रिटिश ज्योतिविज्ञान रिचर्ड एंथोनी ने लिखी. उसमे इस सत्य को उद्घाटित क्रिया गया कि पिरामिड की रचना ठीक भुमध्य रेखा के उत्तर दक्षिणी भाग पर हुई है.

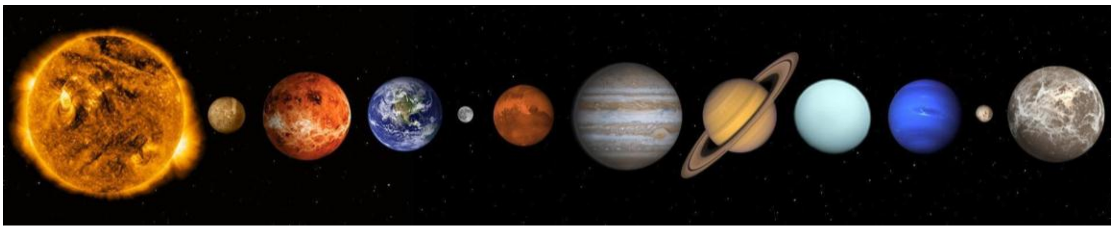

उत्तरी ध्रुव की तरफ से ग्रहों एवं तारो की स्थिती की गणना की जाती रही होगी. करीब ४५०० वर्ष पहले सप्तऋषि मंडल के दो चमकदार सितारे उत्तरी ध्रुव से १० डिग्री पर रहते हुए एक सीधी रेखा बनाते थे. गाजी के विशाल पिरामिडो का आधार स्थल निर्धारित करने में इन्ही तारों ने मदत की जो ध्रुव तारे कि परिक्रमा करते है, परंतु तारों द्वारा कुछ त्रुटियों ने पिरामिड का निर्माणकाल निर्धारित करने में सहायता प्रदान की.

आज के ज्योतिर्विदो का अनुमान है कि कोचा और मिजर तारे ईसा पूर्व २४६७ मे ध्रुव तारे से सीधी रेखा बनाते थे. इस प्रकार ईसा पूर्व २४६७ के बाद पिरामिडो का आधार काल ढुंढने मे सहायक बना. एक महिला ज्योतिर्विद ने पिरामिडो के आधार का कारण सितारों की बदली हुई गति बताया है.

इनके अनुसार मिश्रवासी महान खगोल शास्त्री थे. उन्हे नक्षत्रो के बारे मे बृध्द जानकारी थी. मरने के बाद के जीवन में इनका अटूट विश्वास था. उनकी उम्मीद नक्षत्रो तक पहुॅचने की थी. इसी कारण पिरामिड के आधार स्थल के लिए ध्रुव तारे की सीध में ही अंदर की ओर गहरी सुरंग खोदी गई. इस प्रकार खोदा गया कि धरातल से नीचे प्रकाश का परिवर्तन हो सके. सुरंगों की रचना मे आपाती और परावर्ती कोणो को आरोही एवं अवरोही क्रम में रखा गया.

मिश्र में प्राचीनकाल से ही वैज्ञानिक सभ्यता का विकास हो चुका था. इसका प्रमाण वहां की नगर निर्माण रचना उनके उपकरण तथा पंचांग आदि से मिलता है. कई वैज्ञानिको ने मिश्रवासियों की सभ्यता को अतिविकसित सभ्यता कहा है.

ग्रहो का प्रभाव प्रत्येक मनुष्य पर पडता है. हर मनुष्य की जन्म कुंडली में कुछ अनिष्ट ग्रह होते है, जिनका उपचार कर लेना ही समझादारी है. यह ग्रह मनुष्य के जीवन में

रूकावटो के रूप मे बाधा का काम करते है और मनुष्य से ज्यादा संघर्ष करवाते है. अगर समय पर इनका उपचार कर लिया जाए तो आप अनिष्ट ग्रहो के बुरे प्रभाव से अपने आपको बचा सकते है.

हर मनुष्य की राशि अलग अलग होती है और भिन्न भिन्न ग्रह भिन्न भिन्न रशियों का स्वामी माने जाते है. जैसे चंद्रमा कर्क का, बुध मिथुन एवं कन्या का तथा शनि मकर और कुंभ का.

सूर्य तांबाई, चंद्र श्वेत, मंगल लाल, बुध हरा, गुरू पिला, शुक्र स्लेटी, शनि काला और केतु पारदर्शी रंग का प्रतिनिधित्व करता है. यदि किसी ग्रह के अशुभ प्रभाव के कारण आप परेशान हो तो उस ग्रह से संबंधित रंग का पिरामिड सदैव अपने पास रखे. ऐसा करने से उस ग्रह का अशुभ प्रभाव समाप्त होकर वह शुभ फल प्रदान करता है और आपकी जिंदगी मे आनेवाले संघर्षो मे कमी आती है.

पिरामिड क्या है?

पिरामिड ६३ डिग्री पर चार कोणो का बना हुआ नुकीला गुंबद है, किसी वस्तु विशेष की आवश्यकता नही होती, परंतु निर्माण का स्थान एवं दिशा कोण का विशेष रूप से ध्यान रखना आवश्यक होता है. मिश्र के बने पिरामिड अपने चमत्कारिक प्रभाव के कारण विश्व के सात आश्चर्यों में से एक माने जाते है. कोण विशेष के कारण पिरामिड में एक केंद्रिय ऊर्जा उत्पन्न होती रहती है. जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव मानव के मन–मस्तिष्क पर नही अपितु वस्तुओं पर भी देखने मिलता है. पिरामिड मूलत: भारतीय वास्तुशास्त्र का ही अंग है.

पिरामिड कैसे कार्य करता है?

पिरामिड ब्रम्हांड के पांचो तत्वों–पृथ्वी, जल, वायु, आकाश और अग्नि इनकी ऊर्जावान किरणो को अपनी पिरामिड नोंक या पिरामिड पॉवर पाइंठ के द्वारा अपने अंदर की ओर समाहित कर लेता है. जिससे पिरामिड के अंदर का हिस्सा एवं उसके आस पास का हिस्सा स्वच्छ और ऊर्जा युक्त हो जाता है और वहां पर यदि किसी प्रकार का कोई दोष होता है तो वह स्वत: ही समाप्त हो जाता है.

आप पिरामिड कैसे बनाए?

वैसे तो किसी धातु का बनाया हुआ छोठा पिरामिड, क्रिस्टल का बना हुआ पिरामिड, स्फटीक का बना हुआ पिरामिड अथवा बडी आकृति में बनी हुई पिरामिडनुमा आकृति जिसमे व्यक्ति सरलता से भीतर प्रवेश कर सकता है, उपयुक्त रहता है, लेकिन कुछ प्रतिशत तक इस प्रकार के पिरामिड बनाकर भी आप लाभ उठा सकते है.

उदाहरण:

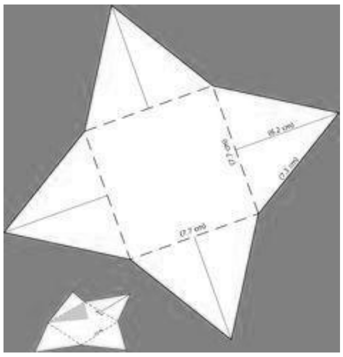

- सफेद रंग का एक हार्ड कार्डबोर्ड लें.
- चार बार त्रिकोण की आकार में मोड दे, ताकि बेस २०० एमएम व लम्बाई १६१ एमएम हो.
- त्रिकोण के दो १०० एमएम भाग मे विभाजित करती हुई एक रेखा खींचे.

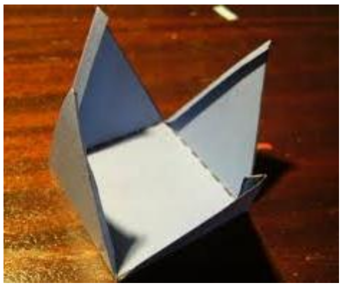

- अब आपके पास चार त्रिकोण तैयार हो जायेंगे. उन्हे मोड कर टेप से चिपका दें.
- सारी बाजुओं को जोड दें, २०० एमएम के वर्गाकार मे बनाकर नीचे रखे.
- एक दिशा से पिरामिड को खुला छोड दे, सामान रखने के लिए.

- पिरामिड बनाने के कागज में कोई दाग नहीं होना चाहिए.
- जो भी वस्तु पिरामिड में रखे, उसका आकार पिरामिड के आकार से १/५ हो.
- पिरामिड सदैव उत्तर दक्षिण दिशा में रखे
- चुंबकीय कंपास लेकर पिरामिड के पास रखे
- पिरामिड को एक साफ सुथरी जगह जहां पर कोई छेड छाड न करता हो, खुला वातावरण हो ऐसी जगह में रखे

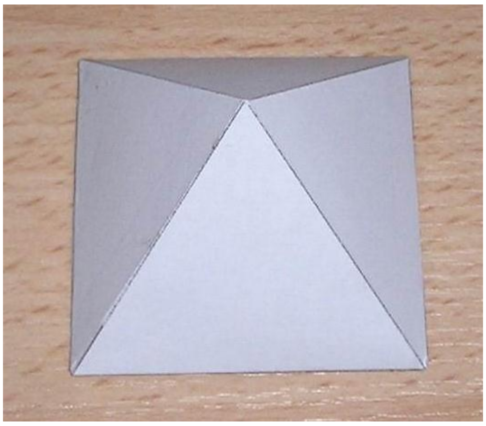

रोचक रहस्य

कई पानी के कुंड पवित्र माने जाते है, क्योंकि उनसे लोगों की विभिन्न बीमारियां नहाने के पश्चात ठीक हो जाती है. दरअसल पिरामिड आकृतिमे बनाए जाते है. जिससे पानी दैवीय शक्ति से भर जाता है. यह पवित्र दैवीय पान अकेला अपना अपने बलबुते पर चर्म रोग इत्यादि ठीक कर देता है.

कहते है कि मंदिरों में मनौती मांगी जाए तो पूरी होती है, परंतु इसके पीछे भी पिरामिड एवं यंत्रो का तथ्य छिपा है. मंदिर का निर्माण वहां की वास्तविक मिट्टी का किस्म, पानी बहाव

एवं पेड पौधो के प्रकार वास्तुशास्त्र को मद्दे नजर रखकर शुरू किया जाता है.

पहले पिरामिड की आकृति का गड्ढा खोदा जाता है. फिर तीन यंत्र – वास्तु पुरूष मंडल, नवग्रह यंत्र और श्री यंत्र ढाले जाते है. मिट्टी से ढक दिए जाते है. फिर उसके ऊपर प्रभु की मूर्ति स्थापित की जाती है. यंत्र की ताकत बढाने के लिए पिरामिड की आकृति का कक्ष बनाया जाता है. चुंबकिय शक्ति अणु ऊर्जा और यंत्र की शक्ति का संगम होता है. इसी कारण जब हम मंदिर में जाकर कोई मनौती मांगते है, वह भी पूरी एकाग्रता से श्वास को भीतर पुरक करते है, तब वह मनौती सफल होती है.

भारतीय ज्योतिष व तंत्रशास्त्र की महानता विराट है. भारतीय ज्योतिष व तंत्रशास्त्र व पाश्यात्य विज्ञान का कोई मुल नही है. पाश्च्यात्य देश के निवासी युगो से ही इस देश की संस्कृति व समृध्दि को मूल स्त्रोत के रूप में देखते है. हमारी यह सभ्यता जब हमारे यहॉ से जाकर विदेशो मे जैसा लिखा है वैसे ही पाया है. अमेरिका ने भारतीय शास्त्र को स्वीकार किया है कि मंगल ग्रह का वर्णन सत्य है.

'श्री यंत्र' भारत ही नही, अपितु विदेशो में भी लोकप्रिय है. विदेशियों ने इसके प्रभाव को जाना है. श्री शब्द में भगवान विष्णु व लक्ष्मी दोंनों का संयुक्त रूप है.

उस विशेष यंत्र में कछुए की पीठ पर १६ यंत्रो नागों के साथ श्री यंत्र स्थापित किया गया है. इसे मात्र अपने घर में लाल कपडे के आसन पर स्थापित करना है और नित्य अष्टगंध का तिलक करना है. चमत्कार आप स्वयं ही देख सकते है.

पिरामिड और कुंडलिनी शक्ति

यह मनुष्य शरीर रूपी पिंड विशाल ब्रम्हांड की प्रतिमूर्ति है और जितनी शक्तियां इस विश्व का परिचालन करती है, वे सभी इस देह मे विद्यमान है. यही कारण है कि स्थान–स्थान पर मनुष्य शरीर की इतनी महिमा कही गई है. इस प्रकार पिरामिड के भीतर सात चक्र स्थित है, उसी प्रकार पिरामिड के भी सात चक्रों में भी त्रिकोण का उपयोग किया गया है.

पिरामिड का सबसे अधिक उपयोग श्रीयंत्र मे हुआ है. श्री यंत्र मे कुल १०८ त्रिकोणो का संख्या बनती है. उसी श्री यंत्र अनुसार शरीरीक सात चक्री की स्थिति को देखे.

१. मुलाधार चक्र
२. स्वधिष्ठान चक्र
३. मणिपूरक चक्र
४. अनाहत चक्र
५. विशुध्द चक्र
६. आज्ञा चक्र
७. सहत्रार चक्र

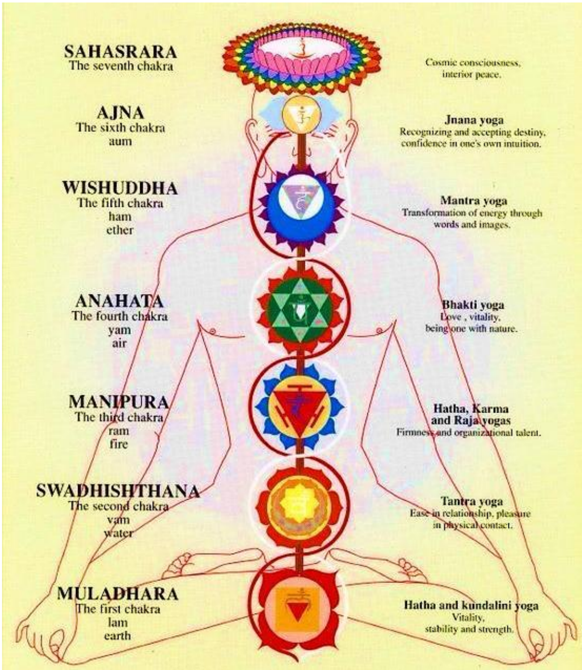

यदि पिरामिड के भीतर बैठकर कुंडलिनी जागरण की साधना की जाए अथवा शरीर पर पिरामिड धरण कर कुंडलिनी जागरण का प्रयोग किया जाए तो सफलता मिलने की सम्भावना अधिक रहती है, क्योंकि जिस प्रकार मनुष्य स्वंय ब्रम्हांड की प्रतिमूर्ति है, उसी प्रकार पिरामिड के भीतर भी ब्रम्हांड का समावेश होने का आभास मिलता है.

पाठ क्र. २

साहित्य की समीक्षा

पिरामिड को लेकर बहुत कम साहित्य लिखा गया है. जो भी साहित्य लिखा गया वो मुलत: विदेशी भाषाओ में उपलब्ध है. विदेशी भाषा में उपलब्ध साहित्य पुरातत्तवीय महत्व का वर्णनात्मक साहित्य है. उसमे उपरोक्त शंकाओं का समाधान नहीं है. हिन्दी में तो पिरामिड के बारे में कुछ भी लिखा नहीं गया. इस संसार सार को पूरा करने में कई ग्रंथों से मैने विशिष्ट रूप से सहायता ली है.

डॉ. भोजराज द्विवेदी द्वारा लिखित पुस्तक जिसका नमा है, ‘‘**पिरामिड एंव मन्दिर वास्तु**’’ यह पुस्तक डायमण्ड पॉकेट बुक्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशित की गई है. डॉ भोजराज ने पिरामिड का सुक्ष्म अध्ययन करने हेतु वे स्वयं मिश्र, इजिप्ट, गाजा, लक्सर, सिंगापुर, हॉगकॉग, अफ्रिका इत्यादि अनेक राष्ट्र भी गये. वे पहले भारतीय वास्तुविज्ञ है जिन्होने पिरामिड की नगरी में रहकर पिरामिडों पर गहन अध्ययन व शोध किया. इस पुस्तक में लेखक ने निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रकाश डाला है:.

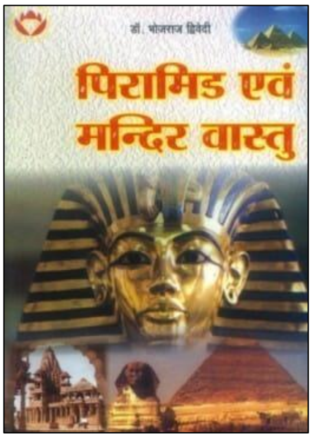

पिरामिड क्या है? एवं उनका स्वरूप, राजा तूतन खामन का बहुमूल्य खजाना, पिरामिडो का सिरमोर मेरू पुष्ठीय श्रीयंत्र, पिरामिड चिकित्सा का नवीन अवधारणाए, वास्तु उपचारो में पिरामिड का स्थान, भवन का ब्रम्हास्थान एवं पिरामिड, अपना पिरामिड किट स्वयं बनाये, पांच तत्वों में पिरामिड का स्थान, वास्तु कला का बेजोड नमूना है गिजा

का पिरामिड, विश्व में पिरामिडों की स्थिति, पिरामिड का ज्योतिषीय विश्लेषण, पिरामिड के प्रकार, पिरामिड मन्दिर

श्री. इ. रामेश्वर प्रसाद द्वारा लिखित पुस्तक जिसका नाम है ''**वास्तु ऊर्जा का प्रकाश**'' यह पुस्तक डायमण्ड पॉकेट बुक्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशित की गई है. इस पुस्तक में लेखक ने निम्नलिखित बिन्दुओं का समावेश किया हे– पिरामिड किस प्रकार उपयोगी हो सकता है, पिरामिड कंप, नकारात्मक ऊर्जा से बचाव, पिरामिड वास्तु, अनेक समस्याओं से निजातर दिलाता है, पिरामिड जल, पिरामिड और रंग चिकित्सा.

प. कमल राधाकृष्ण श्रीमली द्वारा लिखित पुस्तक जिसका नाम है ''**पिरामिड अपनाएं सुख समृध्दि पाएं**'' यह पुस्तक राजा पॉकेट बुक्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशित कि गई है. इस पुस्तक में लेखक नें पिरामिड के बारे में निम्नलिखित विषयों पर प्रकाश डाला है. जादुई पिरामिड विधि से भविष्य ज्ञान, धन समृध्दि प्राप्त करें, पिरामिडीय आकार के बनें अनेक सिध्द यंत्रों से, पिरामिड और ज्योतिष, पिरामिड के प्रकार, राशि पिरामिड से बनाएं बेहतर जीवन, प्राचीन कौशल के साक्षी पिरामिड, पिरामिड से रोग चिकित्सा, पिरामिडों के चौंका देनेवाले रहस्य. पिरामिड में समाहित पंचतत्व, अनिद्रा से मुक्ति देता है पिरामिड, मिश्री सभ्यता की शब्दावली, पिरामिड और मिश्र के देवी देवता, कैसे काम करते है पिरामिड, चमत्कारकर्ता पिरामिड, क्या मिश्र के पिरामिड अभिशप्त है? स्वास्तिक पिरामिड, पिरामिड से मनोकामना पूर्ति कैसे, पारद पिरामिड, त्रिकोण से स्थायित्व है. व्यक्तित्व सवारिए नवग्रह पिरामिड, पिरामिड एंव मंदिर वास्तु, पिरामिड और साधना सिध्दि, पिरामिड प्रयोग से वास्तुदोष शांति, पिरामिड और कुंडलिनी शक्ति, आर्थिक स्थिती को सुदृढ करें.

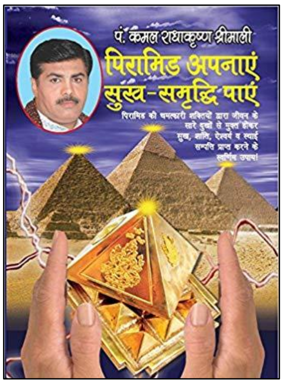

प्रो. डॉ. धारा भट्ट द्वारा लिखित पुस्तक जिसका नाम है ''**पिरामिड वास्तु**''. यह पुस्तक के. प्रकाशक इंडस्ट्रीज, वडोदरा द्वारा प्रकाशित है. इस पुस्तक में लेखक ने पिरामिड के बारे मे निम्नलिखित विषयों पर प्रकाश डालता है. पिरामिड क्यों, पिरामिड का विज्ञान, पिराडि के अद्‌भुत तथ्य, दुनिया भर के पिरामिड, जीवन एक अद्‌भुत वास्तु चमत्कार, स्वर्ण अनुपात, पिरामिड और मनुष्य के बीच संबंध, पिरामिड वास्तु क्या है?, डॉलर के नोट में रहस्यवादी पिरामिड शक्ति, पिराडि वास्तु क्यों, पिरामिड वास्तु में गुंजाइश, अलौकिक पिरामिड यंत्र, पिरामिड और पिरामिड यंत्र सबसे बडा वास्तु सिंक्रोनाइजर, वास्तु संवृत्ति की महत्वपूर्ण कुंजी, बहुउद्देशीय पिरामिड यंत्र

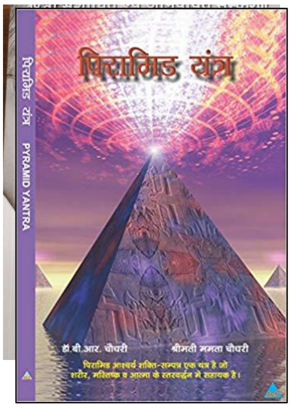

पं. गोपाल शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक जिसका नाम है ''**पिरामिड शक्ति एवं वास्तु**'' यह पुस्तक डायमंड बुक्स, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रकाश डालती है: परिमिड की परिभाषा, गीजा के पिरामिड, पिरामिड शक्ति के प्रयोग, पिरामिड की रचना का मूल कारण, विभिन्न धर्मो के प्रतिक चिन्ह, विशेष माप तथा आकार के पिरामिड, पिरामिड के प्रयोग से वास्तु दोष निवारण 'विश पिरामिड बॉक्स'

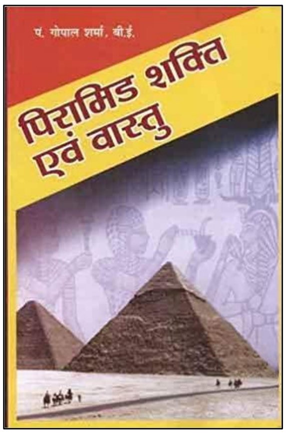

डॉ बी. आर. चौधरी व श्रीमती ममता चौधरी द्वारा लिखित पुस्तक जिसका नाम ''**पिरामिड यंत्र**'' है, यह पुस्तक एक्युप्रेशर हेल्थ केअर सिस्टम, जोधपुर राजस्थान द्वारा प्रकाशित इन विषयों का समावेश करता है– चेतना ऊर्जा शक्ती परिचय, मॉडल पिरामिड, पिरामिड का अर्थ एवं उनका स्वरूप, पिरामिड शक्ति, पिरामिड एक अबुझा

रहस्य, पिरामिड यंत्र उपयोग करने के लाभ, पिरामिड में ९ अंक का महत्व, पिरामिड यंत्र का विस्तार क्षेत्र, पिरामिड शरीर के सात चक्र, पिरामिड और मंत्र चिकित्सा, पिरामिड के विभिन्न माप, रंग चिकित्सा, पिरामिड बनाने की सामग्री, नवग्रह पिरामिड, पिरामिड जल व पिरामिड प्रयोग.

डॉ. धारा भट्ट द्वारा लिखित पुस्तक जिसका नाम है ''**पिरामिड वास्तु के लिए**'', पुस्तक फ्यूचर फोर्स पब्लिकेशन, वडोदरा द्वारा प्रकाशित की गई है. इस पुस्तक में लेखक ने पिरामिड के बारे में निम्नलिखित विषयों पर प्रकाश डाला हे. आकार का प्रभाव, अपना पिरामिड स्वयं बनाएं, अबूझ पहेलियां, पिरामिड रखने की दिशा, मिश्र की नई खोजे, पिरामिड का रखरखाव, रहस्यमय ज्ञान, प्रयोग शुरू कीजिए, पिरामिडः कुछ महत्वपुर्ण तथ्य, जादुई अनुपार—फाई, पिरामिड का गूढ रेखागणित, मानव शरीर का रेखा गणित, ब्रम्हाण्डीय संबंध, पिरामिड चक्र, अदृश्य शक्ति केंद्र, पिरामिड अग्नि.

संजीव अग्रवाल और अश्विनी कुमार लिखित पुस्तक जिसका नाम है, ''वास्तु में बदलते जीवन'', यह पुस्तक बेनटेन बुक्स, भोपाल द्वारा प्रकाशित की गई है. इस पुस्तक में लेखक ने निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रकाश डालाः पिरामिड और वास्तु शास्त्र में गहरा संबंध, नवग्रह पिरामिड, पिरामिड शक्ति व वास्तुशास्त्र ऊर्जा का एक प्राचिन विज्ञान, तरह तरह के पिरामिड, पिरामिड की शक्ति का रहस्य, वास्तु दोष निवारण सहित पिरामिड के अन्य उपयोग.

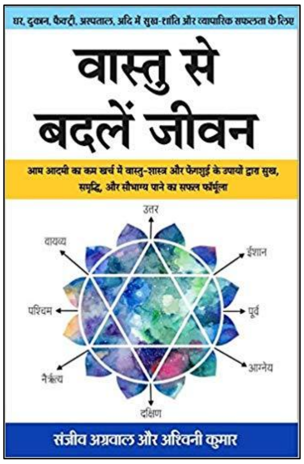

डॉ. धारा भट्ट द्वारा लिखित पुस्तक जिसका नाम है – वास्तु ३६०˚, पुस्तक फ्यूचर

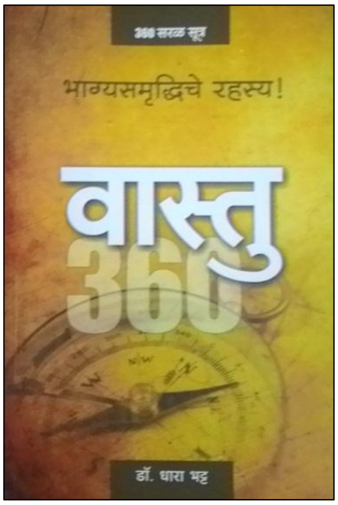

फोर्स पब्लिकेशन, वडोदरा द्वारा प्रकाशित की गई है. इस पुस्तक में लेखक ने पिरामिड के बारे में निम्नलिखित विषयों पर प्रकाश डाला हे: वास्तु संपन्नता के लिए एक आध्यात्मि रास्ता, यह किस प्रकार काम करता है, सर्वोच्च द्विध्रुविय व्यवस्था, आपके सपनों को साकार करने वाली शक्तियां, कामना पूर्ति के लिए मंदिर, मंदिरों का अन्नर्कियात्मक ऊर्जाविज्ञान, प्रकृति का रहस्यमय अनुपात, रहस्यमयी पिरामिड, विकसीत बहुआयामी पिरामिड यंत्र.

पाठ क्र. ३

सामग्री और विधि

इस शोधकार्य के हेतु को आखरी चरम तक पहुँचाने से पहले मेरे जहन में ऐसे अनेक प्रश्न थे जिनके निवारण हेतु मैने कई किताबें पढी और इंटरनेट पर भी काफी वेबसाईट का उपयोग किया.

वास्तु विशेषज्ञ जो पिरामिड का उपयोग करते है उनसे संपर्क किया, छोटे बडे पिरामिड निर्माताओ से बात की, कई ऐसे स्थान पर गया जहां पिरामिडात्मक भवन अथवा साधना केंद्र बने हुऐ है. सामान्य जनमानस जो दिनचर्या में इन पिरामिड का उपयोग वास्तु विशेषज्ञ के दिशा निर्देशानुसार कर रहें है, उनसे बात की.

मैने इन पिरामिड की शक्ति का स्वयं अनुभव करने के लिए इन्हे अपने घर, ऑफिस और फैक्ट्री में स्थापित किया और इनता ही नहीं मैने अपने रिश्तेदारें और आसपास के लोगो के घरों मे भी छोटे बडे पिरामिड को स्थापित किया.

इन माध्यमो के आधार से मुझे इसे जानने, समझने और निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायता मिल सकी. इन माध्यमों का काफी गहरा अध्ययन और मनन करने के बाद मुझे जिन जिन प्रश्नों की जानकारी लेनी थी उसकी मैने अलग अलग प्रश्नावली बनाई ताकि मुझे सटीक और विश्लेषणात्मक जानकारी प्राप्त हो सके.

ये पिरामिड क्या है? इसकी शोध कैसे हुई? इसके रचनाकार कौन है? इनका निर्माण कैसे हुआ? पिरामिड से क्या लाभ है? क्या ये वास्तव में कार्य करता है? क्या

पिरामिड और वास्तुशास्त्र का कोई संबंध है? इसका अधिक से अधिक लाभ कैसे लिया जा सकता है?

ऐसे अनेक प्रश्न मेरे मन मस्तिष्क को प्रभावित कर रहे है. इस शोध हेतु हमारा इन प्रश्नों को जानना और समझाना बहुत जरूरी है. साहित्य और संकेत स्थल का गहण अध्ययन करने के पश्चयात निम्नलिखीत प्रश्नों के उत्तरों को समझने और जानने का प्रयास किया है:

प्रश्नावली

१. पांच तत्वों में पिरामिड का स्थान कहॉ है?

२. ज्योतिष में त्रिकोण का क्या महत्व है?

३. तंत्र में त्रिकोण का क्या महत्व है?

४. क्या पिरामिड द्वारा किए गए परिवर्तन को मापने के लिए कोई उपकरण है?

५. पिरामिड यंत्र और सामान्य पिरामिड के बीच क्या अंतर है?

६. यदि कोई साधना या योग करना चाहता है तो क्या पिरामिड उपयोगी है?

७. अगर मृत शरीर का लम्बा संरक्षण करना चाहते है तो क्या पिरामिड हमारी मदद कर सकता है?

८. क्या स्पेस एनर्जी बढाने में मदत करता है पिरामिड?

९. स्पेस एनर्जी बढाने में किस प्रकार साथ देता है?

१०. पिरामिड ऊर्जा कहॉ से संपादित होती है?

११. असली पिरामिड और पिरामिड यंत्रों में क्या अंतर है?

१२. लकडी के पिरामिडों का ज्यादा उपयोग क्यों नही किया जा सकता?

१३. इसमें पिरामिड ज्यादा प्राचीन है या भारतीय तन्त्र प्रणीत श्रीयंत्र उपचार?

१४. क्या पिरामिड कृषि में लाभप्रद करते है?

१५. पिरामिड बनाने का ऊद्देश्य क्या था?

१६. पिरामिड के ढांचे खडे करने की तकनीकी योग्यता व उपकरण कहॉ से आई?

१७. क्यों मंदिर, मस्जिद पर गुंबज लगाया जाता है? क्या ये प्रभावशाली है?

१८. क्या पिरामिड केवल ऊर्जा उत्पादन के लिए बनाए गए थे?

१९. स्थापत्यकारों ने इस विद्या को कैसे जाना?

२०. पिरामिड को त्रिकोण आकार ही क्यों दिया गया है? ऐसी क्या विशेषताएं है?

२१. क्या पिरामिड का भी ब्रम्हस्थान होता है?

२२. पिरामिड इतना क्यों जादुई और लाभ दायक है?

२३. क्या पिरामिड में शक्तियॉ है?

२४. विश्व में पिरामिडों की स्थिती क्या होगी?

२५. क्या पिरामिड अनसुलझी भविष्य वाणियां करता है?

२६. क्या मिश्र के पिरामिड अभिशप्त है?

२७. पिरामिड में स्थायित्व क्या है?

२८. पिरामिड और मिश्र के देवी–देवता कौन है?

२९. विश्व में पिरामिड की स्थिति क्या होगी?

३०. पिरामिड की परिभाषा क्या है?

३१. पिरामिड की रचना का मूल कारण क्या है?

३२. विशेष माप तथा आकार के पिरामिड क्या है?

३३. पिरामिड का ब्रम्हाण्ड से क्या संबंध है?

३४. क्या आज भी विश्व के अनेक वैज्ञानिक और विशेष यज्ञ पिरामिड्स के जादुई रहस्य को पूर्ण तरह से समझा पाये है?

ठोस शोध कार्य हेतु मैने कई वास्तु विशेषज्ञो से संपर्क किया और उनसे उनका अनुभव जानने का प्रयास किया. कुछ वास्तु विशेषज्ञ निम्नलिखित है:

- श्री दिलीप शाह, गोरेगॉव, मुबई
- श्री अमीत लांबा, चेंबुर, मुंबई
- श्री अनिल अग्रवाल, भाईंदर, मुंबई
- श्री राजेंद्र दुबे, बोरिवली, मुंबई
- श्री संजय मुंगलुनीया, कांदिवली, मुंबई

और ऐसे कई नाम है जिनसे हमने संपर्क किया.

उनके अनुभव एवं सुझाव जानने के लिए और समझने के लिए मैने उनसे कई तरह के प्रश्न किये. इस शोध कार्य को सफल बनाने हेतु वास्तु विशेषज्ञो के लिए प्रश्नाववली तैयार की जो इस प्रकार है.

१. आप वास्तु क्षेत्र में किनते सालों से कार्यरत है?
२. क्या वास्तु दोष समाधान हेतु पिरामिड का भी प्रयोग करते है? यदि हां, तो क्यो करते है?
३. पिरामिड को किस दिशा में लगाने से सबसे अच्छा परिमणाम मिलता है?
४. आपने पिरामिड के उपयोग संबंधी जानकारी कहॉ से और कैसे हासिल कि?
५. आज तक आपने कितने जगहों पर वास्तु दोष निवारण हेतु पिरामिड का उपयोग किया और उसका क्या परिणाम देखने को मिला?
६. ज्योतिष में त्रिकोण के महत्व क्या है?
७. पिरामिड के परिणाम मिलने में कितना समय लगता है?

८. वास्तु दोष निवारण के लिए पिरामिड क्षेत्रो के यंत्रो को कैसे लगाया जाता है?

९. पिरामिड कौन सी धातु का होना चाहिए?

१०. विभिन्न धातुओं के पिरामिड किन उदेश्यों के लिए उपयोग किए जा सकते है?

११. क्या कर्म पृष्ठिय श्रीयंत्र पिरामिड की जगह काम में लिये जा सकते है?

१२. क्या पिरामिड धन समस्या को भी हल करता है?

१३. क्या ब्रम्हस्थान की सुरक्षा हेतु पिरामिड का प्रयोग किया जा सकता है?

१४. क्या पिरामिड का भी ब्रम्हस्थान होता है?

१५. पिरामिड का प्रभाव किस दिशा में ज्यादा लाभदायक है?

१६. क्या पिरामिड से मनोकामना कि भी पूर्ति होती है?

१७. विशेष माप तथा आकार के पिरामिड क्या है?

१८. क्या पिरामिड के प्रयोग से वास्तु दोष का निवारण होता है?

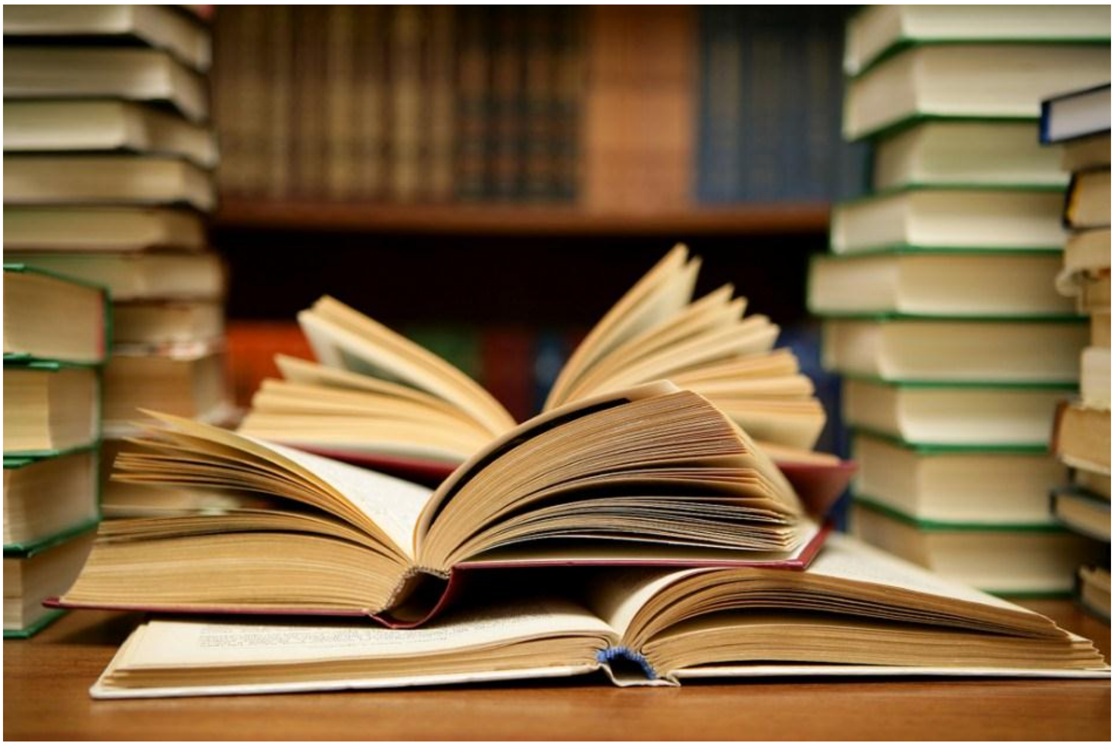

पिरामिड यंत्र निर्माता

कुछ पिरामिड निर्माता, जो अलग अलग धातुओं से पिरामिड यंत्रों का निर्माण करते है.

- ❖ क्रिस्टल रेकि प्रोडक्टस्
- ❖ श्री. अजय भाई, रेकि जेम्स
- ❖ डॉ बी आर चौधरी, ए.सी.आय., अंधेरी मुंबई
- ❖ श्री दिलीप शाह, वास्तु तथास्तु, गोरेगांव मुंबई
- ❖ श्री रविंद्र शर्मा, शुभ ऊर्जा, चंदिगढ, पंजाब

इस शोधकार्य को बडी गहराई से समझने एवं जानने के लिये ऐसे उपरोक्त कई पिरामिड निर्माताओं से बात कि जो विभिन्न धातुओ से निर्मित छोटे बडे कई पिरामिड को वास्तु दोष का निवारण हेतु उनका निर्माण कर रहे है.

उनके अनुभव एवं सुझाव जानने और समझने के लिये मैंने उनसे कई तरह के प्रश्न किए उन प्रश्नों कि सूची इस प्रकार है.

प्रश्नावली

१. आप कितने वर्षो से पिरामिड्स का निर्माण कर रहे है?

२. आपने वास्तु दोष निवारण हेतु पिरामिड का निर्माण करने का ही क्यो सोचा?

३. पिरामिड निर्माण में किन किन धातुओं का आप प्रयोग करते है?

४. किस धातु से बना पिरामिड किस संदर्भ में उपयोग लाया जा सकता है?

५. अलग अलग रंगों के पिरामिड बनाने के पिछे क्या उद्देश है?

६. क्या पिरामिड को जमीन के निचे गाडा जा सकता है?

७. क्या अलग अलग दिशाओं में भिन्न भिन्न माप के पिरामिड का उपयोग करना चाहिए? क्यों?

८. पिरामिड निर्माण करने के पहले आपने किन किन साहित्यों को पढा? उसके बारे में कुछ विवरण करें?

९. इतने सालों से पिरामिड को निर्माण करने का आपका क्या अनुभव है? वे संक्षिप्त में बताईये?

१०. पिरामिड यंत्र बनाने के लिए सबसे उपयुक्त सामग्री क्या है?

११. चूकी तांबा एक उत्तम संवाहक होता है, तो क्या यह अलौकिक ऊर्जा नहीं ग्रहण कर सकता?

१२. पिरामिड यंत्र सफेद रंग के होते है, क्या इसका कोई खास कारण है?

१३. क्यो लकडी के पिरामिड का ज्यादा उपयोग क्यो नही किया जा रहा?

१४. क्या पिरामिड बनाने से पहले कोई यंत्र मंत्र का उपयोग करना पडता है?

१५. विशेष माप तथा आकार के पिरामिड क्या है?

१६. क्या पिरामिड विकसीत बहुआयामी पिरामिड यंत्र है?

१७. पिरामिडों के कितने प्रकार है?

उपयोग करता – साधारण जन मानस

इस शोध का जो सबसे महत्वपूर्ण अंग है, वह इंसान जो इसका उपयोग अपने घर, कार्यालय अथवा अपने फैक्ट्री में कर रहा है. हमें पिरामिड के परिणामों के निष्कर्ष हेतु पहॅुचने के लिए उनका राय उन सभी लोगो का अनुभव, उन्हे पिरामिड, द्वारा प्राप्त लाभ अथवा प्रभाव का जानना बहुत जरूरी था. इसके लिये हमने वास्तु विशेषज्ञो से बहुत से लोगों का नाम इकट्ठा किए जहां पर उन्होने वास्तु दोष निवारण हेतु पिरामिड का प्रयोग किया था.

उन सभी साधारण जन मानस के लिए हमने एक प्रश्नों की जो सूची तयार की गई है, इस प्रकार है:

प्रश्नावली:

१. आपने वास्तुदोष निवारण हेतु पिरामिड का ही चयन क्यो किया?
२. वास्तु विशेषज्ञ ने पिरामिड के बारे में आपको क्या क्या बताया है?
३. आपने पिरामिड लगाने के पहले पिरामिड की जानकारी कहॅा से हसिल की?
४. क्या आपने बिना कोई पिरामिड संबंधी जानकारी होने के बावजूद केवल वास्तु विशेषज्ञ के दिशा निर्देशानुसार इसको अपने घर पर लगवाया?
५. पिरामिड लगाने के पहले और पिरामिड लगा ने के बाद आपने अपने जीवन में क्या क्या बदलाव महसूस किये?
६. क्या आपने पिरामिड संबंधी सहायता के लिय वेबसाईट का भी अध्यन किया?
७. क्या अपने घर अथवा कार्यालय में पिरामिड लगाने से पहले ऐसी जगह का निरक्षण किया था जहां पिरामिड्स लगे हुए थे? क्या आपने उन लोगो से इसके लाभ अथवा प्रभाव की जानकारी ली थी?

८. कैसे पता चलेगा कि पिरामिड वास्तु काम कर रहा है?

९. क्या पिराडि यंत्र नींद दिलवाने में भी सहायक है?

१०. क्या पिरामिड का प्रभाव उपचारों में प्रभावशाली होता है?

११. क्या पिरामिड गुस्सा शांत करने में मदत करता है?

१२. क्या पिरामिड आर्थिक स्थिती को सुदृढ करता है?

१३. क्या पिरामिड के प्रयोग से वास्तु दोष का निवारण होता है?

१४. क्या पिरामिड डिप्रेशन के लोगो के लिये भी लाभदायक है?

१५. क्या ये पिरामिड विद्यार्थीयों को भी पढाई में मदत करता है?

१६. क्या ज्यादातर लोगों को पता है पिरामिड के फायदे?

१७. क्या आपने कभी पिरामिड जल का प्रयोग किया है?
आपको उसकी विधी पता है?

पाठ क्र. ४

अवलोकन और परिणाम

पिरामिड क्या है, इसके रचनाकार कौन है? ये क्यो बनाए गये? पिरामिड से क्या लाभ है? इसकी गणितीय संरचना क्या है? इनमे त्रिकोणो का ज्यामितीयकरण रेखाशास्त्र का महत्व क्या है? क्या इसका कोई ज्योतिषीय महत्व भी है? क्या ये ज्योतिषीय वैधशालाए है? क्या पिरामिड का भारतीय वास्तुशास्त्र या फेंगसुइ से कोई संबंध है?

इनका ऐतिहासिक महत्व क्या है? एवं मानव के व्यवहारिक जीवन में पिरामिड की उपयोगिता क्या है? ऐसे बहुत से प्रश्न है जो उमड–धुमड कर प्रत्येक बुध्दिजीवी प्राणी के मन मस्तिस्क को तीव्रता से प्रभावित कर रहे है.

पिरामिड को लेकर बहुत सारे साहित्य लिखे गये है. जो भी साहित्य लिखा है वह मुलत: विदेशी भाषाओं मे उपलब्ध है. विदेशी भाषा में उपलब्ध साहित्य पुरातत्वीय महत्व का वर्णनात्मक साहित्य है. उसमे उपरोक्त शंकाओ का समाधान नही है. हिन्दी मे तो पिरामिड के बारे मे कुछ भी नहीं लिखा था.

गणित मे शून्य का अविष्कार और रेखागणित मे त्रिकोण का आविष्कार भारतीय विज्ञानिको न किया. मंत्र तंत्र एवं यंत्र शास्त्र मे त्रिकोण शक्ति का प्रयोग प्राचीन वैदिक काल से होता चला आ रहा है. ई.सा. से भी हजारो वर्ष पूर्व बना जंगलो एवं गावों मे जो झोपड़िया बनाई जाती रही है, उसी के आधार पर तो पिरामिड बने है. सभी झोपडीया चतुष्कोणेमक होकर ही तो त्रिकोणावृत होती है. यही स्वरूप जब अलंकारिक हो तो मंदिर बन जाता है.

पिरामिड को हिन्दु शास्त्रो मे मेरू कहा जाता है. दक्षिण भारत के तंजावुर के वृहदेश्वर मंदिर तथा भारत के महाबलीपुरम मे तटीय मंदिर त्रिकोणाकार गुंबज पिरामिड के अनुपम उदाहरण है.

इतना ही नही मेरू पृष्ठीत श्री यंत्र मे १०८ पिरामिडो की शक्ति समाहित है. पिरामिड ज्यामिति के इस रहस्य को अभी तक कोई भी विदेशी विद्वान संस्पर्श नही कर पाया है.

पिरामिड क्या है?

मिश्र 'पिरामिड' का शाब्दिक अर्थ है सुच्याकार ''पत्थर का खंभा''. पिरामिड ग्रीक शब्द पिरामिस से बना हुआ है, जिसका बहुवचन पिरामिड होता है.

पिरामिड के आधार से शीर्ष की ऊंचाई बताने वाली रेखा को मिश्री गणित मे पेरेमअस कह कर व्यक्त किया है.

पिरामिड का शब्दिक अर्थ स्पष्ट है, पर इसका लक्षणिक अर्थ है मृत शरीर का संम्पूर्ण संरक्षण. इसका प्रासंगिक अर्थ है इजिप्त के राजाओं महाराजाओं का ऐश्वर्यशाली कब्रस्थान.

पिरामिड का सुवर्ण मॉडल

इस मॉडल मे गिजा के तीन पिरामिड चित्रित किये गये है. तीनो पिरामिड क्रमशः सबसे बडा, मध्यम एवं सबसे छोटा तीनो साईज में अनुपातिक रूप से है. सबसे नीचे स्फिंग्स को बताया गया है. स्फिंग्स के रूप में राजा खुफ्रु की ताकत को बताया गया है. पिरामिड के सबसे ऊपर नुकीले भाग को सूर्य की ऊर्जा प्राप्त हो रही है.

पिरामिड शक्ति की कार्य कुशलता का रहस्य आकाश की ऊंचाई और जमीन की गहराई दोनो में छिपा हुआ है.

ये दोनो बातें समान रूप से मंदिर के गुम्बज एवं मंदिर के भूगर्भ पर लागू होती है. मंदिर एवं पिरामिड का शक्ति संरक्षण काफी हद तक समानता लिए हुए है.

मिश्र का प्राचीन संस्कृति ने यह सिध्द किया कि 'पिरामिड' के नीचे रखी हुई वस्तुएं विकृत नही होती. वह ज्यो बनी रहती है. हिन्दुओं के मंदिर के गुम्बज का सिस्टिम भी वही है जो पिरामिड में है. अपितु गुम्बज में ध्वनि विज्ञान को मान्यताये ज्यादा मुखरित होती है. उसके नीचे रखी हुई प्राणप्रतिष्ठित मूर्ति सदैव जाग्रत रहती है. हिन्दुओ के मंदिर गुम्बज की इन विशेषताओं की नकल की मीनार के झारोखों के रूप मे मुस्लिम संस्कृति ने हुबहु अपनाया पर केवल सुंदरता की दृष्टि से, उससे असली तत्व एंव सार को वे भी नहीं समझ पाये.

पिरामिड के निर्माण काल एवं इतिहास

अरबी विद्वान अबू जेद अल बाल्खी कार्बन १४ की वैज्ञानिक विधि से वैज्ञानिक शेध का निष्कर्ष निकालते हे कि ये पिरामिड ई.पू. ७००० साल पहले से बने हुए प्रतित होते है. गिजा के इस विशाल पिरामिड को बनाने के लिए लगभग ५ हेक्टेयर अथवा १३ एकड विस्तार बालू मिट्टी की भूमि को समतल करक पत्थरों के माध्यम से कठोर भुभाग का निर्माण किया गया.

इजिप्त के महान सम्राट चियोप्स का पिरामिड ईसा के पूर्व २५८० में बनाया गया था. उस समय लगभग ४००० श्रमिको ने लगातार ३० वर्ष तक काम किया.

गिजा के विशाल रेगिस्तान में पत्थर का नामो निशान नहीं है, पर इन विशालतम पिरामिडो को बनाने के लिए गिजा से लगभग चार सौ मील दूर स्थित आसवान एवं तूरा नामक शहर से ही ये बडे बडे विशालकाय ग्रेनाईट पत्थर नील नदी के माध्यम से छोटे छोटे नावों एवं पानी मे लुडकाते हुए भारी परिश्रम के साथ गिजा के पिरामिड तक पहुँचाये गये.

अधिकतर इजिप्सियन सूर्य के उपासक होते है. उनके प्राचीन मंदिरो मे मूर्ति लगी होती है. जहाँ प्रतिदिन पुजारी चीते की खाल ओढकर पूजा करता है. मूर्ति को प्रतिदिन साफ करके नये वस्त्र पहनाये जाते है एवं भोग के रूप मे भोजन परोसा जाता है.

खुफु जिसे युंनानी लोग चियोप्स भी कहते है. यही एकमात्र कांस्य प्रतिमा है, जो उत्खनन के दौरान पुरातत्व वेत्ताओं को मिली तथा अब मिश्र के काहिरा म्युजियम मे प्रदर्शन हेतु रखी गई है. इस राजा का शासन काल ईसा पूर्व २५६० से २५३७ था. गिजा का सबसे बड़ा पिरामिड इन्ही राजा खुफु की यादगार में बना था. स्वयं राजा खुफु की देखरेख मे यह पिरामिड बना. इस पिरामिड का निर्माण काल प्राचीन की संपूर्ण राजवश का काल ईसा पूर्व २६५८ से २१५० माना गया है.

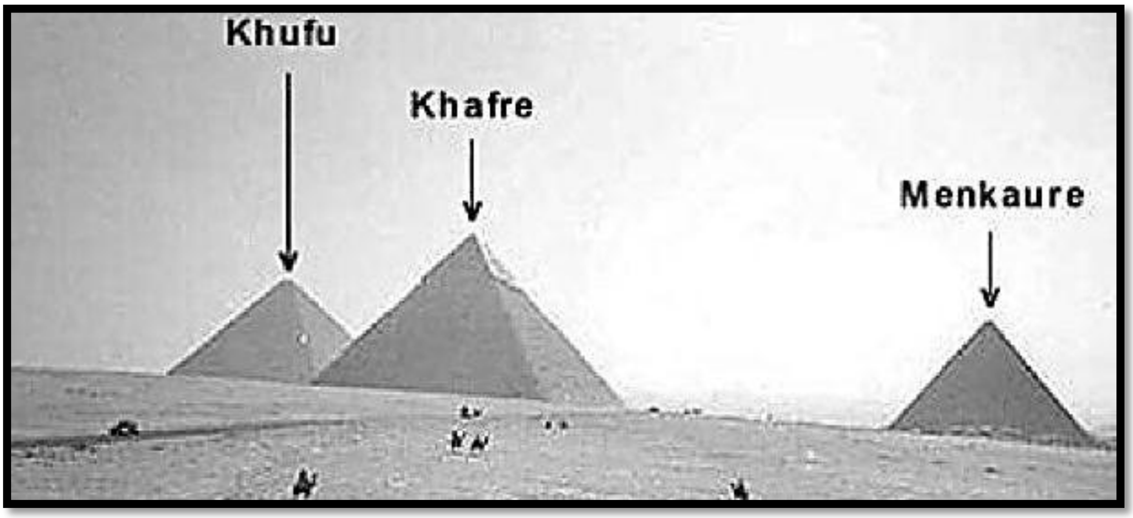

खाफ्रे का महान पिरामिड जो चियोप्स एवं मेकेरियनोरस के पिरामिडोने से ज्यादा कीर्तिमान है, इसका विस्तार २१५ मीटर एंव कोण ५३:१० है. यह गिजा के तीनों पिरामिडो का मुख्य प्राणधार है. इसे चेफरीन का पिरामिड कहते है. इसका निमार्ण समय चतुर्थ राजवंश काल ईसापूर्व २५८४—२४६५ है.

इस पिरामिड के श्माशान मन्दिर से एक मार्ग सीधा वेली (सूर्य) मंदिर तक जाता है. वहीं नरसिंह की आकृति मे महान स्फिगंस दुनिया के सातवे आश्चर्य के रूप मे स्थित है.

मिश्र के पिरामिडो की संरचना

मिश्र के पिरामिड लगभग पॉच हजार वर्ष पुराने है. मिश्र की राजधानी काहिरा से १०–१२ कि.मी. दूर एक चट्टानी पठार स्थित है. जिसकी ऊंचाई भूतल से १२५–१३० फीटे है.

इनमे से पहले पिरामिड का निर्माण मिश्र के राजा पराह जोसर के काल २६०५ से २५६० बी. सी. मे हुआ था. मिश्र में आज भी जगह जगह पर अनेक पिरामिड बने हुए है.

इन तिनों पिरामिडों को मिश्र के कारीगरो ने वहां के सम्राट चेयोप्स चेफेन और मायासीरिन के लिए बनाए थे.

इन तीनों पिरामिडो में सर्वधिक प्रसिध्द और महत्वपूर्ण शेषफल के पुत्र चेयोप्स का पिरामिड है. इसे गीजा के पिरामिड कहते है. मृत्यु के बाद चेयोप्स का शव इसी पिरामिड मे रखा गया. यह वास्तुकला का अद्‌भुत नमूना है. इस एकमात्र पिरामिड को बनाने मे ही लगभग २० वर्षे का समय लगा. सवा लाख मजदूरों ने इस पर रात दिन काम किया.

जब यह पिरामिड बनकर तैयार हुआ तो इसकी ऊंचाई ४८१ फीट थी.

इस अकेले पिरामिड का क्षेत्रफल १३.०१ एकड है. धरती पर एक तरफ बनी दीवार की लंबाई ७५५ फीट है. इसका एक चक्कर लगाने में लगभग १ कि.मी. चलना पडता है. ग्रेनाईट और चूने के पत्थर से बने इस पिरामिड में लगभग २५ लाख पत्थर चौकोर और त्रिकोण आकार में काटे गए है.

विश्व की हजारों रेलगाड़िया अगर जोड दी जाए तो भी वे इस पिरामिड को खींच नही पाएंगी. आज भी इन पत्थरों की चमक ऐसी है कि मानो इन्हे हाल ही मे बनाया गया है. सूर्य की रोशनी में इनकी पॉलिश दूर से ही चमकती है.

चेयोप्स के पिरामिड के अन्दर की संरचना में आठ भाग थे. पहला राजा का कक्ष, दुसरा हवा के आने जाने का मार्ग, तीसरा मध्य में स्थित कक्ष, चौडा बड़ा गलियारा, पांचवा ऊपर जाने का रास्ता, छठा रानी के कमरे तक जाने का सीधा रास्ता, सातवा रानी का निजी कक्ष तथा आठवा तहखाना बना हुआ था. पिरामिड के प्रत्येक दीवार की सतह का क्षेत्रफल उसकी लभवत् ऊंचाई के बराबर है. अत: पिरामिड के ढाल का कोण ६० अंश न होकर ५१ अंश ही है तथा इसके अवरोह मार्ग का कोण २६ अंश १७ है.

कई खगोलविदो ने पिरामिडो की गहराई से निरिक्षण परीक्षण किया है. उनमे से एक चार्ल्स पियाजी स्मिथ के अनुसार पिरामिड से पाई का सही मान पृथ्वी का द्रव्यमान तथा परिधि और सूर्य की पृथ्वी से दूरी का भी पता लगाया जा सकता है.

गीजा के पिरामिड का परिणम पृथ्वी का प्रतिनिधित्व करता है. तथा उसके अर्धवयास को बनाता है. ठीक उसी अनुपात मे पिरामिड की सतह या आधार का क्षेत्रफल पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध का सूचक है. इस प्रकार की ऊचाई तथा अनुपात इस बात का भी द्योतक है कि पिरामिड के निर्माणकर्ता पृथ्वी के गोल होने का सत्य भी जानते थे.

पिरामिडो की स्थिति, उनका माप, उनके आंतरिक और बाहय प्रतिक चिन्ह सभी किसी न किसी प्राकृतिक नियम को अभिव्यक्त करते है. लगता है कि इन पिरामिडों के जरिए प्राचिन मिश्रवासी अंतरिक्ष के अन्य ग्रहों से खगोलीय संबंध स्थापित करते थे.

विश्व में पिरामिडो की स्थिति

विश्व के सात महान आश्चर्यो में से एक पिरामिड का फलावे पूरे विश्व मे अलग अलग धारणाओ से हुआ जिसमे मैक्सिको, दक्षिण अमेरिका, चीन, साईबेरिया, मध्य अमेरिका, कम्बोडिया, अफ्रीका, फ्रांस, इंग्लैण्ड एवं मिश्र देश है.

इन पिरामिडो का प्राचिन इतिहास मिश्र देश से शुरू होता है. मिश्र देश की राजधानी काहिरा से नैऋत्य दिशा मे लगभग दस किलोमिटर दूर अलगिजा में स्थित 'गिजा के तीन पिरामिड' दुनिया में बेमिसाल है.

गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकार्डस में दी गई सुचना के अनुसार विश्व की प्राचिन एंव विशाल इमारतों मे इन पिरामिडो का नाम समाविष्ट है. गिजा के ये तीन पिरामिड तीन अलग अलग आकार में है.

१. इनमे से सबसे बडा पिरामिड चियोप्स सम्राट का है. इसे इजिप्सियन लोग स्थानिय भाषा में खुफु भी कहते है.
२. इसके बाद मध्यम आकार का पिरामिड राजा चेफरिन का है. यह सम्राट चियोप्स का उत्तराधिकारी एवं उसका पुत्र था. इस पिरामिड का निर्माण काल ई.पू. २१००–२१५० था.
३. तीसरा पिरामिड युनान के राजा मैकेरिनोस का है. यह राजा अपना पिरामिड खुद अपने देख रेख में बना रहा था.

विश्व में प्राचिन पिरामिडो की संख्या सैकडो में है. जबकि आधुनिक विश्व में यह संख्या हजारों में है. अब तो प्रतिदिन पिरामिड बिल्डिंग की संख्या बढती ही जा रही है. मिश्र की नील के किनारे किनारे पश्चिम छोर में लगभग ८० ऐतिहासिक पिरामिड है.

पिरामिडो का ज्योतिषीय विश्लेषण

गिजा के पिरामिड और स्फिंग सिंह की आकृति वाले कब्रगाह ही विश्व में अद्वितीय कीर्ती वाले क्यों है? वस्तुत: पिरामिड क्या है? वास्तुशास्त्र से इनका क्या संबंध है और ज्योतिष शास्त्र से पिरामिडो का क्या संबध है.

इजिस्पियन वासी जो कि मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास रखते है. उन्होने सोचा हमारे महान राजा कियोप्स के शरीर को शाश्वत सुरक्षित रखने के लिए उपयुक्त और स्थान क्या होगा? इससे मृत्यु के बाद भी उनका जीवन शाश्वत रहेगा ऐसा सोचकर गिजा के रेगिस्तान में ये पिरामिड बनाये.

सितारों के रास्तो ने बताई पिरामिडों की उम्र

ध्रुव तारे का परिक्रमण कर रहे सप्तऋषि मंडल के दो चमकदार सितारे ने गिजा के विशाल पिरामिड के आधार स्थल को निर्धारित करने मे मदद की.

मिश्र के पिरामिड निर्माताओं ने ध्रुव तारे की परिक्रमा करते तेज चमकदार दो सितारो से इन पिरामिड का उत्तरदर्शी नकाशा तयार किया था. लगभग ४५०० वर्ष पहले इन सप्तऋषियो मे से दो चमकदार तारे ध्रुव से १० अंश पर रहते हुए सीधी रेखा बनाते थे. परिक्रमण के दौरान जब एक तारा दूसरे के ऊपर आ

जाता तो ज्योतिषी दोनो को ध्रुव की सीधमे रखकर एक सरल रेखा की कल्पना करते जो उत्तर दिशा को इंगित करती थी.

बहुत दिनों तक अरबों ने ज्योतिर्वेधशाला के रूप मे पिरामिडो को समझने और समझाने का प्रयत्न किया परन्तु उनकी बात को तब तक गंभीरता से नही लिया गया जब तक ब्रिटिश ज्योतिर्विनी रिचर्ड एन्थोनी प्राक्टर ने अपनी पुस्तक ''द ग्रेट पिरामिड, ऑबजरवेटरी, टुंब ॲण्ड टेंपल'' मे इस सत्य का उद्घाटन नही किया कि ठीक भुमध्य रेखा पर उत्तर दक्षिणी भु—अक्ष पर पिरामिड की रचना की गई है जहां से उत्तरी ध्रुव की ओर के ग्रह नक्षत्र एवं तारों की दूरी स्थिति और गति की गणना करते होंगे.

ध्रुव तारे की सीध में ही अंदर की गहरी सुरंग उन्होने खोदी जिससे किरणो के व्यतिपान कोण २६ अशं १७ मिनट के अनुरूप धरातल से निचे खोदी गई थी.

आरोही और अवरोही सुरंगो की रचना आपाती और परवर्ती कोणो के अनुसार की गई है. मिश्रिओं के प्राचिन पंचांग, उनकी उपकरण, उनकी नगर एवं मार्ग रचना का वास्तुशास्त्र देख कर टाम्फकिन हार्वई के प्रोफेसर जॉर्ज सार्टन को विश्वास दिलाने में सफल रहे थे कि वहॉ कभी अति उन्नत वैज्ञानिक सभ्यता अवश्य थी.

पिरामिड के प्रतिस्पण का गुह्य सूत्र

पिरामिड की रेखा गणितीय रचना की सूत्रधार दो अपरिमय संख्याए है. ये वे संख्याए है जो दशमलव बिन्दु के उपरांत असंख्या होती चली जाती है. अर्थात उसका पूर्ण विभाजन असंभव होता है.

ये दो अपरिमेय संख्यांए है – पाई और फाई. पाई= ३.१४१५ तथा फाई=१.६१८. फाई का पिरामिड को स्वणशि कहते है जिसके द्वारा ही पिरामिड भुजाओं का अनुपात होता है. पिरामिड का आधार चौकोर वर्ग होता है. तथा चारो पार्श्व के झुके पार्श्व रेखाओं की लंबाई प्राप्त करे तो वह फाई के बराबर होगी और शीर्ष से मध्याकार की लबंवत ऊंचाई इसी फाई का वर्गमूल होगा.

इस प्रकार फाई प्रत्येक आधार क्षेत्रफल के बराबर होता है. निम्नलिखित गृहसूत्र से पाई और फाई के बीच संभाव्य समीकरण बनता है.

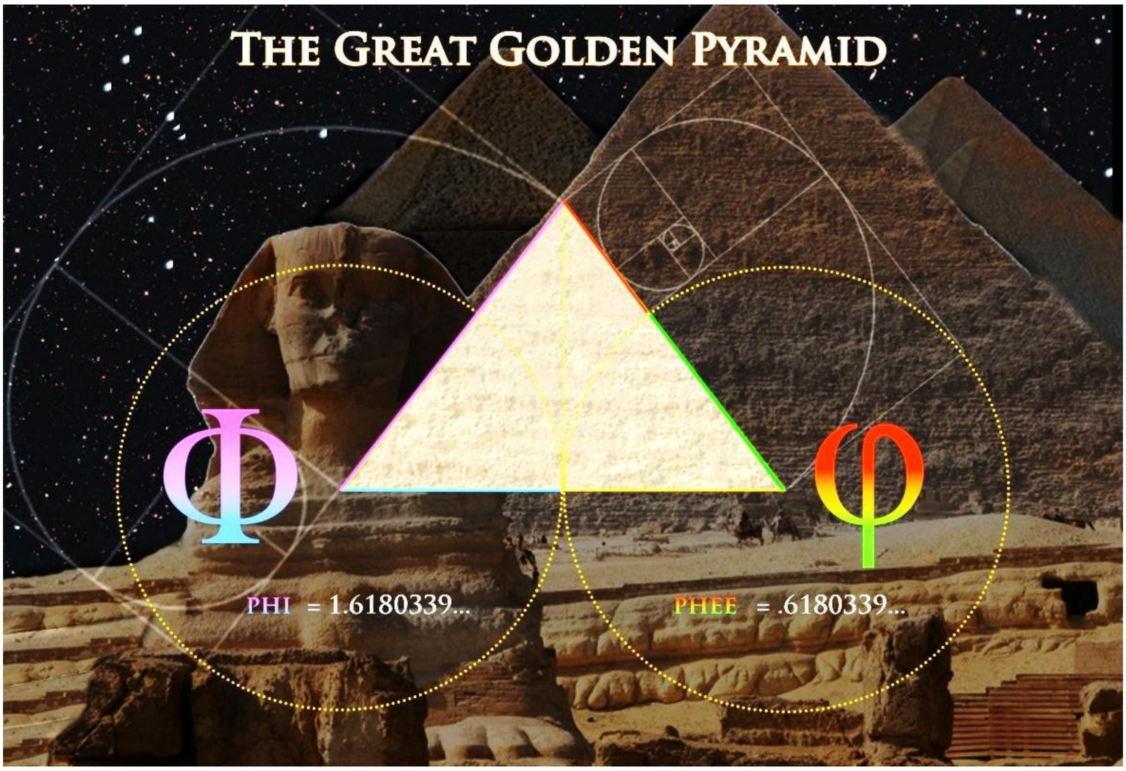

पांच तत्वों में पिरामिड का स्थान

भारतीय वास्तुशास्त्र पंच महाभुत एवं दस दिशाओं पर आधरित एक शास्त्र सम्मत विज्ञान है. पाश्चात्य देशो में प्रचलित 'फॅग सुई' मुख्य रूप से जल और वायु को लेकर बनाया गया शब्द है पर जो पंचमहाभूत पाश्चात्य देशो मे माने गए है उस मे वायु का स्थान नही है. फेंग सुई के अनुसार पृथ्वी, जल, अग्नि, लकडी और धातु ये पंचमहातत्व सृष्टि के आधारभूत कारन है.

जबकि भारतीय दर्शन शास्त्र ने पंचमहाभूतों का आधारभूत कारण दिया है. १. पृथ्वी, २. जल, ३. आकाश, ४. अग्नि एवं ५. वायु को माना है. यही वास्तुशास्त्र के आधारभुत चिन्तन का विषय है.

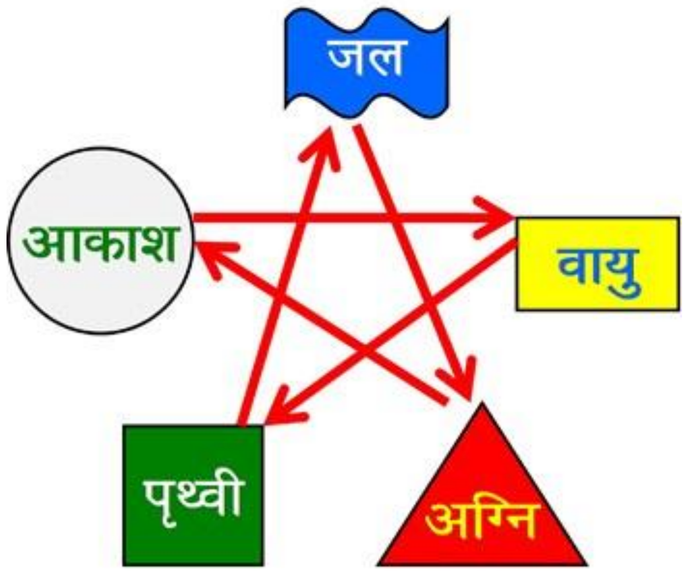

इन पांच महातत्वों के अनुपातिक सही सम्मिश्रण से बायो इलेक्ट्रिक मैगनेटिक एनर्जी की उत्पत्ति होती है जिससे मनुष्य को उत्तम स्वास्थ्य, धन एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है.

विचार:

पांच तत्वो में पिरामिड आकाश तत्व का प्रतिनिधित्व करता है. अत: जब किसी भवन में आकाशीय शक्ति को बढाना हो तब पिरामिड स्थापना पर विचार किया जा सकता है.

भारतीय ज्योतिष गणना एंव फलादेश का सशक्त माध्यम जन्मकुंडली है. जन्म कुंडली में द्वादशा कोष्टक द्वादश भावो के होते है. उनमे त्रिकोण १, ५ व ९ भाव का महत्व सर्वोपरि है. जन्मकुण्डली मे जो भी राशि त्रिकोण की स्वामी हाती है. उनका स्वामी कुंडली का परम योग कारक ग्रह होकर बहुत ताकतवर होता है.

यदि कोई ग्रह स्वगहृ ही उच्च होकर केंद्र त्रिकोण में पडा है तो उसके कारण पांच महापुरूष योगो मे क्रमश: १. हंसयोग, २. भद्रयोग, ३. मालव्य योग, ४. शशयोग एवं ५. रूचक योग की सृष्टि होती है.

तंत्र शास्त्र में त्रिकोण 'योनि' को प्रतिबिंबीत करता है. योनी सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पादक एवं प्रजनन शक्ति की द्योतक है. यज्ञमण्डप में त्रिकोणाकार यज्ञकुण्ड का बडा महत्व है. यंत्र शास्त्र से सभी शक्ति प्रधान यंत्रो की शुरूआत ही त्रिकोण से होती है. इसमे श्रीयंत्र का उदाहरण सर्वोपरि है.

इस यन्त्र में मूल त्रिकोण ४३, चतुष्कोण १६, ऊर्ध्वमुखी एवं निम्नमुखी संयुक्त त्रिकोणो की संख्या १०८ बनी है.

फलत: इस यंत्र में १०८ पिरामिडो की शक्ति समाहित है.

पिरामिड के प्रयोग पर निर्धारिह कि वह किस धातु का होना चाहिए;

१. साधना: यदि आप साधना, ध्यान व योग करना चाहते है, तो पिरामिड पत्थर का ही होगा.
२. वातावरण ऊर्जा: यदि घर मे स्पेस ऊर्जा बढानी हो तो प्रकाश की बहुलता चाहते हो तो पिरामिड प्लास्टिक या कांच का होगा.
३. चिकित्सा समाधान: यदि चिकित्सा संबधी समाधान की आवश्यकता हो तो, जल का प्रयोग करने के लिए तांबे या अनुकुल धातु का पिरामिड होना चाहिए.
४. तांत्रिक प्रयोग: विभिन्न तांत्रिक प्रयोगो हेतु पिरामिड मिश्र धातु का होना चाहिए.
५. मनोकामना पूर्ति: मनोकामना की पूर्ति के लिए प्लास्टिक एंव धातु का पिरामिड बराबर मात्रा में काम करेगा.

पिरामिड कभी ठोस नहीं होता. ठोस पिरामिड तो पृथ्वी पर भार है. उसका कोई महत्व नही. ऐसे तो बडे बडे त्रिकोनी पर्वत पृथ्वी पर खडे है. उनमे कोई चमत्कार नही. पिरामिड का असली सम्बंध तो अन्दर का रिक्त तत्व एवं उसमे प्रभावित होने वाली ऊर्जा से है. फिर पिरामिड ज्यामितीय सिध्दांतो एवं वास्तु सिध्दांतो पर खरे उतरने चाहिए तभी उनमे चमत्कारी शक्ति आएगी.

पिरामिड की ऊर्जा भुगर्भ के चारो कोनो की चार भुजा से उर्ध्वगामी होता है तथा पिरामिड पावर पाइन्ट ऊपरी नोक की ओर बढती है. उधर सूर्य की ऊर्जा पिरामिड की उपरी नोक से नीचे की ओर उतरती है.

इस प्रकार से पिरामिड ऊर्जा भूगर्भ एवं ऊपर आकाश द्वारा दोनो ओर से सम्पादित होता है.

असली पिरामिड बडे बडे पत्थरो से मृत शरीर को सुरक्षित रखने के लिये बनाये जाते है. ये एक प्रकार से आवासीय मकान की तरह होते है. पर छोटे पिरामिड यन्त्र भारतीय पध्दति से मंत्र एवं तंत्र शक्ति के माध्यम से बनाये जाते है. ये मंत्रो से प्राण प्रतिष्ठित होते है. अत: ये छोटे होते हुए भी चमत्कारी शक्ति से ओतप्रोत बडे प्रभावशाली होते है. ये पिरामिड प्राय: धातु के होते है. शास्त्रविहत पवित्र वृक्षो की लकडियां भी पिरामिड हेतु प्रयोग मे लाई जाती है.

लकडि की आयु धातु की तुलना मे नगण्य है. फिर लकडि सड जाती है. इसमे किडे लग जाते है. इसमे दिमक लगने से इसका भूसा बन जाता है. अत: लकडि के पिरामिडो का विकृत होने का खतरा बना रहता है. फिर यह विद्युत कुसंचालक होती है. अत: इसकी नोक से सूर्य की ऊर्जा शिघ्रता से पिरामिड के भीतरी भाग में प्रवेश नहीं कर पाती.

कूर्म पृष्ठीय श्रीयंत्र पिरामिड काम में लाया जा सकता है, क्योंकि ये अनन्त पिरामिड शक्ति से युक्त होता है और पिरामिड थेरेपी के आधार पर ही बना होता है. स्वयं इजिप्तवासी पिरामिडो को ईसा पूर्व २६०० वर्ष पुराना मानते है, अत: निश्चित है कि पिरामिड इससे अधिक पुराने नही है. जबकि भारतीय तन्त्र शास्त्र वेद प्रणित है. वेदों का काल आज तक कोई विद्वान निश्चित नही कर पाया.

पिरामिड यन्त्र को यदि पलंग की सीट के नीचे रख दिया जाये तो निंद ठीक से आती है. ऐसा अनुभव अनेक जिज्ञासुओं ने किया है.

कॅनेडा का शोध दल

टोरंटो शिल्प विश्वविद्यालय के युवा शोधर्थी इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि घर का पिरामिड आकार तथा गोला दिवारों वाले घर शुभ और कल्याणकारी होते है. जबकि चौकार दिवारों वाली या अर्ध चंद्रकार घर तनावग्रस्त रखते है. समस्याओं में उलझते रहते है. इस प्रकार तो हम सबके पक्के मकान वास्तव में बेकार है.

त्रिकोणीय झुकी दीवारों के झुकाव कोण में अंतर के अनुसार उसकी उपयोगिता निम्न प्रकार में रेखांकित की गई है.

१. आधार रेखा ५५° कोण, शीर्ष ७०° कोण तथा ऊंचाई आधार रेखा से २० प्रतिशत कम वाला पिरामिड रक्तचाप, शिरशूल, तनाव, अनिद्रा, पक्षाघात को ठीक करता है. इसमें औषधि भी अधिक प्रभावशाली की जाती है.
२. ५५° एवं ७०° कोण तथा १० प्रतिशत कम ऊंचाई का पिरामिड शब्द और ध्यान के लिए उत्तम है.
३. ७५° एर्वं ६०° कोण तथा ३० प्रतिशत अधिक ऊंचा पिरामिड मंदिरो, गुम्बदों के लिए होता है. इसमे शीर्ष से वस्तुए ऊर्जामिरित करने के लिए लटकाई जा सकती है.

शोधकर्ताओ द्वारा किये गये दावे:

दिल्ली के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी श्री चन्द्रभान सतथी ने अपने पिरामिड संबंधी प्रयोगो द्वारा दावा किया है कि पिरामिड के अन्दर रखने पर सेब चार महिने तक खराब नही होती, ताजा बनी रहती है.

बैंगलोर की सोफिया टेनबीएक अपने परिक्षणों द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुॅची कि पिरामिड के अन्दर रखकर कच्चे केले या अन्य फल जल्दी पकाये जा सकते है.

मणिपाल इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलाजी, मणिपाल के श्री कृष्णमूर्ति ने एक प्रयोग के दौरान एक ही दही के दो नमूने लिये. एक नमूना पिरामिड के बाहर और दूसरा पिरामिड के अन्दर रखा. एक दिन के पश्चात दोनो नमूनो की खटास मापने पर पाया कि पिरामिड के बाहर रखे नमूने मे अधिक खटास थी. बी बी कृष्णमूर्ति ने यह भी पाया कि दूध को पिरामिड में रखने पर उस पर वैसी ही मलाई जम जाती है जो फ्रिज में रखने पर जमती है.

एक अमेरिकन विज्ञान जर्नल में प्रकाशित एक रिर्पोट के अनुसार एक प्रयोग में मांस का तुकडा ४८ दिन तक पिरामिड में रखा गया तो भी उसमे ताजे मांस का स्वाद था. यही हाल अण्डे, मछलिओं तथा सब्जिओं का हुआ. वे सब लम्बे समय तक सुरक्षित रहते है.

उपर्युक्त परिक्षणो से प्राप्त परिणामों द्वारा हम सहज ही निष्कर्ष पर पहुॅचते है कि खाद्य पदार्थो को परिक्षित रखने के लिए पिरामिड का काम फ्रिज के तौर पर भी किया जा सकता है.

पिरामिड यंत्र

पिरामिड यंत्र आपका निजी उपकरण है, जो असंख्य तरीको से मदद करता है. पिरामिड कई प्रकार से जीवन के हर छोटे छोटे कार्य व क्षेत्र में सहायक सिध्द हो सकता है.

१. **पिरामिड और रेकी** – रेकी में इच्छापूर्ति बॉक्स का प्रावधान है. यदि आप अपनी इच्छापूर्ति के लिए साधारण डिब्बे के स्थान पर पिरामिड बॉक्स का प्रयोग करें तो आपको द्विगुणी शक्ति (रेकी + पिरामिड) का लाभ प्राप्त होगा.

२. **कृषि में लाभप्रद** – आप अपने फार्म हाऊस में बीजो को पिरामिड में रखे. जब बुबाई का समय आये तो इन्ही बीजो को बोने से बीच शीघ्र अंकुरित होते है. खेत में चार दिवारी या पौधो के पास जगह जगह छोटे बडे पिरामिड रख दे जिससे कॉस्मिक ऊर्जा पौधों को मिलती रहेगी व उनकी उपज एवं गुणवत्ता बढ जाती है.

३. **उपचार** – दवाई पिरामिड के अन्दर रखें. दवाई के डिब्बे के ऊपर पिरामिड रखें. इससे उसकी प्रभाव शक्ति बढती है. पिरामिड यंत्र चिंताओ, उदासी, भय, गलत आदतो, नकारात्मक रवैया, ईर्ष्या, द्वेष और कई प्रकार के अन्य मनोवेग जिनका दवाईयों के माध्यम से कोई उपचार उपलब्ध नहीं है, इनमे भी चमत्कारिक लाभ देता है. यह आत्मविश्वास को बढाने में भी मदद करता है.

४. **ज्योतिष** – ज्योतिष में श्री यंत्र सुख–समृध्दि का द्योतक है. श्री यंत्र की रचना का आधार पिरामिड आकृति ही है.

५. **वास्तु** – पिरामिड प्रदूषण को हटाता है. वैज्ञानिकों ने पिरामिड अध्ययन के दौरान यह पाया है कि पिरामिड जल, वायु व मिट्‌टी को शुध्द रखता है.

भवन ठेकेदार एवं वास्तुकार इमारतों का निर्माण करते समय ऊपरी हिस्से को पिरामिड आकृति का रूप दे तो आवास करने वाले लोगो को दीर्घायु प्राप्त होगी एवं बौधिक, आध्यत्मिक व मानसिक शक्ति का विकास होगा. यह शारीरिक दर्द में भी राहत प्रदान करेगा.

अस्पतालों में पिरामिड आकार की छतें बनाकर एवं मरीजों के बिस्तरों पर पिरामिड लगाकर उन्हे शीघ्र स्वस्थ किया जा सकता है.

६. **आध्यात्म के क्षेत्र** – देवालयों के ऊपर बनाये जानेवाले गुंबज पिरामिड का ही दूसरा रूप है. विश्वास किया जाता है कि इससे पूजा व इश्वरिय प्रकिया में वृध्दि होती है.

पाठ क्र. ५

विचार – विमर्श

कोई त्रिकोना वर्गाकार या बहुभुज आधार से बना ढांचा पिरामिड कहलाता है. पिरामिड की यह परिभाषा उसके ढांचे के विषय मे तो बताती है, परंतु इससे पिरामिड की चिकित्सकीय शक्ति का पता नही चलता.

पिरामिड यह शब्द सुनते ही रेत में विशाल सागर मे खड़ी तीन विशालकाय आकृतियॉ दिमाग में आती है जो आधी मानव तथा आधी पशु जान पडती है जो तपते सूर्य और कठोर हवाओं के कारण धीरे धीरे नष्ट हो रही है.

पंरतु अब भी विद्वानों, वैज्ञानिकों तथा रहस्यवादियो के लिए पिरामिड किसी अबूझ पहेली से कम नही है. इन पिरामिडो को देखते ही कुछ प्रश्न दिमाग मे कौंध जाते है.

यह मिश्र के पिरामिड है जो संसार के दूसरे पिरामिडों की तरह आज भी समय, स्मृति, इतिहास व वृध्दि से कहीं परे है. ये विशालकाय ढांचे सदियों से पुरातत्तवेताओं, इतिहासकारो तथा रहस्यवादियो के लिए अंतहीन गाथाओं, सिध्दांतो, चर्चाओ व साधनाओं का विषय रहे है.

१. इन पिरामिडो को बनाने का क्या उद्देश था?
२. इन्हे किन लोगो ने बनाया? क्या वे साधारण मनुष्य थे या उन्हे आध्यत्मिक शक्तियों का वरदान प्राप्त था?

३. क्या इन पिरामिडो की संरचना में खगोल विद्या, ज्योतिष, विज्ञान तथा स्थापत्य कला का प्रयोग किया था? उन्हे यह ज्ञान तथा जानकारी कहॉ से प्राप्त हुई?

४. पिरामिड के ढांचे खडे करने की तकनीको, योग्यता व उपकरण कहॉ से आये?

ये सभी ऐसे प्रश्न है जिनका उत्तर आज तक नहीं मिला. विद्वान अभी किसी एक उत्तर पर एकमत नहीं है.

विरोधाभास अभी भी बना हुआ है परंतु वास्तविकता तो यही है कि पूरे ग्लोब में दुसरे स्थानो पर भी पिरामिड मौजूद है, आकार तथा ढांचे में थोडा अंतर होने पर भी उनकी आधारभूत संरचना एकसी है.

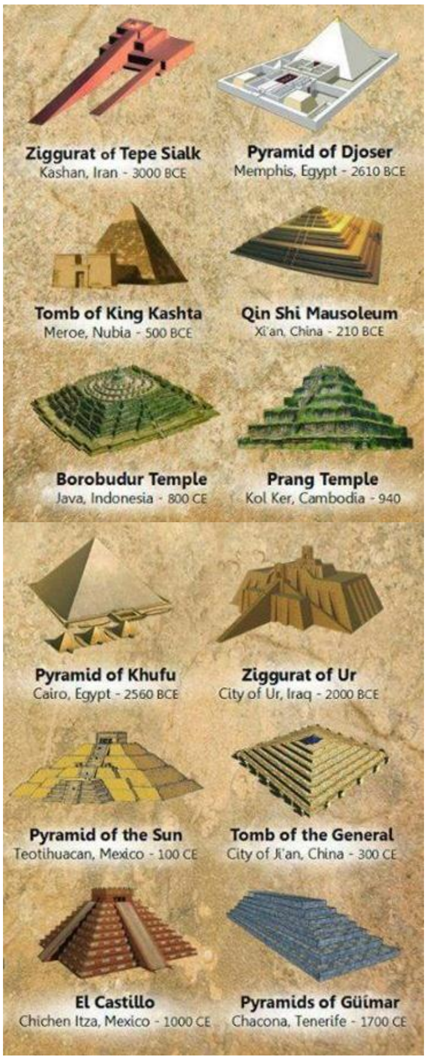

अनेक देशों में पिरामिड!!:

१. हिमालय पर्वतमालाए
२. चीन
३. कंबोडिया
४. साइबेरियन उच्च भूमि
५. फ्रांस – दक्षिणी
६. सिल्बरी की पहाड़ियॉ
७. गैला बैंड – ॲरिजोना
८. कोलिसविले
९. अलास्का – फ्लोरिडा
१०. आस्ट्रेलिया
११. अंटार्कटिका महासागर

सार और निष्कर्श

अनेक विद्वानो ने पिरामिड के मुल स्त्रोत तथा उनकी व्याख्यात्मक परिभाषा देने का प्रयास किया है.

उनके अनुसार पृथ्वी तथा ब्रम्हांडीय विवरण पिरामिड के ढांचे मे मिश्रित होकर बीट फ्रीक्वेंसी बनती है. ठीक उसी तरह किसी पियानो को दो कीज एक साथ बजाई जाए तो तीसरी धुन निकलती है.

यही बीट फ्रीक्वेंसि ऊर्जा उत्पन्न करने में समर्थ होती है.

कोई भी पूछ सकता है कि क्या पिरामिड केवल ऊर्जा उत्पादन के लिए बनाए गए थे? या स्थापत्यकारों ने इस विद्या को कैसा जाना?

परंतु पत्थरों की इन आकृतियों से जुडी गणितीय व खगोलीय गणनाए देखकर इस विषय मे कोई संदेह नही रह जाता.

वर्षो से भवनो के निर्माण में पत्थरों का प्रयोग होता रहा है.

भारत के अनेक मंदिरों में भी आप पाषाण काल के नमूने देख सकते है. अनेक सभ्यताओं ने पिरामिड, मंदिर, मस्जिद, तथा मठ बनाने के लिए पाषाण कला का प्रयोग किया.

वैसे पिरामिड शब्द का एक अर्थ होता है – जो ऊंचा उठा हो. यनान में इसे वीटन केके भी कहा जाता है.

अनावश्यक वर्णनों से ऊपर उठकर इतना जान लेना ही काफी है कि मिश्र के पिरामिड अपने आकार तथा ढांचे के आधार पर दूसरे भवनों से कहीं अलग है.

पिरामिड के रंग, ढांचे व आकार पर सदियों की धूल अवश्य जम गई है, परंतु आज भी वे अपने उद्देश मे पूरी तरह सफल है.

अनेक पिरामिड लगभग नष्ट होने की स्थिति में है. अत: केवल उनके अवशेष ही देखे जा सकते है.

वास्तु उपचारों में पिरामिड का स्थान

वास्तुदोष संबंधी उपचारों में पिरामिड का महत्वपूर्ण स्थान है.

पिरामिड का संबंध आकाश तत्व से है. पिरामिड का घर मकान, फैक्टरी, इमारत, होटल, व्यवसायिक प्रतिष्ठान में लगाया जा सकता है.

विश्व का स्थापत्य कला का अनुपम उदाहरण भारत के आगरा शहर में स्थित ताजमहल आज भी विश्व के सात आश्चर्यो में से एक है.

भवन का ब्रम्हस्थान एवं पिरामिड

वास्तुशास्त्र में कहा गया है कि एक कुशल वास्तुशास्त्री का प्रयत्नपूर्वक अपने घर के ब्रम्हस्थान की रक्षा करनी चाहिए. यह ब्रम्हस्थान किसी भी भुखण्ड या भवन का केंद्र बिन्दु होता है.

ब्रम्हस्थान की सुरक्षा– पहली तो सुरक्षा यह है कि भवन का ब्रम्हस्थान खुला होना चाहिए. यहीं से सम्पूर्ण भवन को स्वच्छ प्रकाश एवं स्वच्छ वायु मिलती है. प्राण उर्जा मिलती है जो भवन स्वामी एवं भवन दोनो को दीघार्यु प्रदान करती है. पुराने जमाने में बने सभी भवनों को आप देखेंगे की आंगन खुला होता था और उसके चारो तरफ से कमरे बने होते थे. दूसरी सुरक्षा ब्रम्हस्थान में गन्दगी का न होना. वहां भारी वस्तु का न होना. बम्हस्थान में जुठे बर्तन, कचरा या गन्दे पानी का नाला नहीं होना चाहिए.

प्रत्येक भवन की तरह, पिरामिड का भी ब्रम्हस्थान होता है. इसे विदेशो में पावर पॉइन्ट कहते है. यहीं से पिरामिड सारी उर्जा ग्रहण करके वितरित करता है.

संसार के पुरातत्व वेत्ताओं भूगर्भ शास्त्रियों, खगोलज्ञों, इतिहासकारों तथा वस्तु इंजिनियर्स ने परिश्रमपूर्वक शोध करके यह निष्कर्ष निकाला है कि विश्व में जितने भी चौकोर भवन है, वे शीघ्र क्षतिग्रस्त होकर वृध्ता को प्राप्त हो हुए है. पर जिन भवनों पर गुंबज है, त्रिकोण है एवं पिरामिडशेप है, वे आज दिन तक क्षतिग्रस्त नही हुई है. इस सन्दर्भ में गिजा के पिरामिड विश्व का अनुपम उदाहरण है. संसार में छह हजार वर्ष पुरानी भी बिल्डिंग अविकृत अवस्था में कहीं भी खडी नही है.

विकसीत बहुआयामी पिरामिड यंत्र

सभी उद्देशों के लिए उन्नत बहुस्तरीय पिरामिड यंत्र संसार के कल्याण के लिए प्रबध्द वैदिक गुरूओं द्वारा की गई सर्वाधिक शक्तिशाली खोज है – यंत्र.

यंत्र का सरल अर्थ होता है एक उपकरण उपस्कर पिभाषा के अनुसार चले तो आधुनिक युग में अनंत ज्ञान को समझने या निकालने के लिए कंम्प्यूटर भी एक उपकरण है. इसी तरह यंत्र भी अंतहीन वैश्विक नेटवर्क से समर्थन पाने का उपकरण होता है. यह नेटवर्क प्रत्येक के लिए निःशुल्क उपलब्ध रहता है. इसके प्रयोग का तरीका जानना अधिक महत्वपूर्ण है.

प्रकृति का रहस्यमय अनुपात

मानव शरीर अनुपात ए/बी = १.६१८; अर्थात पिरामिड जैसा अनुपात.

प्राणीमात्र की एक विशिष्ट कम्पन्न शक्ति होती है. जो ब्रम्हांड में द्वि ध्रुवीय रहस्यमय अनुपात के द्वारा नियंत्रित होती है. प्रकृति में दृष्ट कुछ उदाहरण देखें – पृथ्वी पर जीवन की शुरूआत सॉफ्ट बॉडिज के रूप में पानी में हुई थी. वो सॉफ्ट बॉडीज कठोर सीपि द्वारा अनुरक्षित थे जो इसके विकास के लिए प्रकृति में जादुई अनुपात द्वारा निर्मित होते थे. आकाश गंगाए पेड–पौधे, ध्रुव तथा प्रकृति की हर चीज उसी रहस्यमय / जादुई अनुपात को ही विकासित होती है. ब्रम्हांड में जीवन शरीर सर्वधिक जटिल इकाई है. यह आकाशीय ऊर्जा के विकास के जादुई सूत्र का प्रतिनिधित्व करता है. सभी धर्म कहते है कि मनुष्य विश्व की सम्पूर्ण रचना है और वह ईश्वर की श्रेष्ट कृति है. अनुपात या १.६१८ के रूप मे जाना जाता है. अतः जीवन में इस जादुई अनुपात का उपयोग करके आप प्राकृतिक रूप से अपने उद्देश्यों को हासिल कर सकते है.

पिरामिड की रचना का मूल कारण

विभिन्न उदेश्यों के लिए अनेक आकारों के पिरामिड बनाना कठिन नही है. पिरामिड का आकार तथा आकृति चाहे कोई भी हो, उसका मूल ढांचा गीजा के पिरामिड की तरह होनी चहिए.

हम जो भी पिरामिड बनाए, वह उसी विशाल पिरामिड की अनुकृति होनी चाहिए. किसी भी वस्तु के निर्माण में कोई न कोई उद्देश छिपा होता है.

एडगर सैसे के अनुसार, वास्तव में गिजा के पिरामिड आज से १०,००० वर्ष पूर्व ऐसे व्यक्तियों द्वारा बनाए गये थे जो मिश्रवासी नहीं थे. इन पिरामिडों में आरंभ से लेकर आज तक मानव जाति का इतिहास छिपा है. यह इतिहास गणित और खगोल भाषा में लिखा है.

मैनले पी. हाल प्राचिन धर्मिक अनुष्ठानों के ज्ञानी थे. वे अपनी पुस्तक 'सीक्रेट टीचिंग्स ऑफ एजेस' में लिखते है – खोये हुए महाद्वीप अटलांटिका के उत्तरजीवीयों ने पिरामिडों की रचना की. अटलांटिक सभ्यता के वैज्ञानिकों को आने वाले तुफान का अनुमान हो गया था, इसलिए अपने युग के ज्ञान व कोश को बचाने के लिए उन्होने ऐसा किया.

उन्होने मिश्र में ज्ञान के केंद्र स्थापित किए तथा पिरामिड शैली के मंदिर बनवाए. इन केंद्रो मे उन्होने अपने रहस्यों को प्रतीकात्मक भाषा मे खुदवाया. जिन्हे केवल वही जान सकता है जो इसके योग्य है.

आगे यह भी लिखते है – पिरामिडों की रचना मिश्र ने की ऐसी कल्पना इसलिए की जाती है क्योंकि इसकी बाहर की दीवारों पर चित्रों की खुदाई की गई है, शाही सजावट के प्रतिक इस्तेमाल किए गये है.

वे कहते है – पिरामिड का अनंत बुध्दि व संसार से गहरा नाता है. दोनों पिरामिड तथा माइंड, पवित्र पर्वक माग हे. इसके वर्गाकार आधार का अर्थ है कि पिरामिड बुध्दि का घर है, जो प्रकृति और इसके नियमों पर टिका है, जो की शांति, सत्य तथा बुध्दि का प्रतिनिधित्व करते है.

पिरामिड की दक्षिणी भुजा शांति, उत्तरी भुजा ऊष्णता, पश्चिमी भुजा अंधकार तथा पूर्वी भुजा दिशा आलोक का सूचक है.

त्रिकोणीय भुजाए त्रिकोणी आध्यात्मिक शक्ति का सुचक है.

वे कहते है कि पिरामिड रहस्यों से भरपूर मंदिर है जो सभी कलाओं तथा विज्ञान का आधार है.

विशाल पिरामिड तथा ज्यामितिक.

संसार में ज्यामितिक के दो प्रकार है जिन्हे आप निम्न रूपों में जान सकते है.

१. स्टेटिक ज्यामितीक

   स्टेटिक ज्यामितीक में माप गणना के लिए अंको की जरूरत नही होती परंतु डायनिमीक ज्यामितीक में अंको की जरूरत पड़ती है. स्टेटिक ज्यामिती में क्यूब

सबसे संतुलित आकार है तथा डायनामिक ज्यामितीक में शुन्य सबसे संतुलित आकार है. स्टेटिक ज्यामितिक में निम्न आकृतियां पाई जाती है.

२. डॉयनामिक ज्यामितीक

माना जाता है कि पिरामिड का संबंध दोनो प्रकार की ज्यामितीक से है. नीचे दी गई आकृतियों के अनुसार एक क्युब को ६ पिरामिड में बांटा जा सकता है जिसमें से प्रत्येक की ऊॅचाई एक क्युब के बराबर होगी. विशाल पिरामिड की लंबाई डायनिमिक ज्यामितीक तथा आकृति स्टेटिक ज्यामितीक की सुचक है.

पाठ क्र. ६

सार और निष्कर्ष

पिरामिड पृथ्वी पर नए आध्यात्मिक वैज्ञानिक युग का प्रतिक है. पिरामिड स्थिरता और धर्मनिरपेक्षता का महान प्रतिक है. यह ध्यानसाधना का परम युक्त साधन है और सभी आकाशगंगा संबंधी सभ्यताओं को जोड़ने वाला कॉमन ऊर्जा कुंजी है.

इस शोध प्रबंध के अध्यन से उजागर होने वाले कुछ प्रमुख बिंदु:

- **मिश्र वासीयों का विज्ञान:** मिश्र की प्राचिन संस्कृति ने यह सिध्द किया कि 'पिरामिड' के निचे रखी हुई वस्तुएं विकृत नहीं होती. वह ज्यो कि त्यों बनी रहती है.

- **हिंदु मंदीर वास्तु:** हिन्दुओं के मंदिर के गुम्बज की व्यवस्था पिरामिड जैसी ही है. अपितु गुम्बज में ध्वनि विज्ञान की मान्यताएं ज्यादा मुखरित होती है. उसके

- **किंग्स चैंबर:** पिरामिड के केंन्द्र स्थान पर ऊर्जा की विकिरणें एकत्रित होती है और अंत में तीव्रतम समाप्त संतप्त ऊर्जा उत्पन्न होती है. इसी प्रकार मंदिर में रखी हुई प्राण प्रतिष्ठिता मूर्ति सदैव जाग्रत रहती है. अन्य रूप में इसे इस प्रकार समझा जा सकता है कि इस आकार मे पॉचो कोनों से एक विशिष्ठ प्रकार की ऊर्जा प्रवाहित होती है जो पिरामिड की एक तिहाई ऊचाई पर आकर इकट्ठी होती है.

- **आकाशतत्व:** चूंकि हम सूक्ष्म स्थर पर ही कार्य कर रहे है, अत: आकाशतत्व अधिक महत्वपूर्ण है बजाय इसके कि किस वस्तु का उपयोग किया गया है. पिरामिड के लिए सबसे उपयुक्त वह है जो प्राकृतिक हो जैसे महान पिरामिड के

पत्थर, परंतु हमें वास्तु के विभिन्न ९१ खण्डों की आवश्यक्ता है, उन्हे पत्थर से बनाना व्यावहारिक रूप से संभव नहीं है. इसलिए न्यूट्रोन पोलीमर का उपयोग किया जाता है.

- **पिरमिड—वास्तु का संबंध:** वास्तु और कुछ नहीं बल्कि जीवन की सभी अनुकुल और प्रतिकुल परिस्थितीयों में अपना सर्वश्रेष्ठ करने की कला और विज्ञान है.

- **पिरामिड—एक अबुझ रहस्य:** सतत् शोध कार्यो एंव वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों के बावजूद पिरामिड विषय पर रहस्य की एक पर्त बरकरार है. हम आज भी अनभिज्ञ है कि इनका निर्माण कैसे संभव हुआ. यह भी आश्चर्य का विषय है कि मिश्रवासियों ने अपनी तकनीक और विधि का कोई अवशेष नहीं छोड़ा. हमारे पास उपलब्ध जानकारी सिर्फ कल्पना आधारित है.

- **पिरामिड का प्रभाव:** विभिन्न परिस्थियों और विभिन्न उपकरणों से परिक्षण करने पर, पिरामिड के प्रयोग से मानसिक और भावनात्मक रूप से अच्छे परिणाम मिलते है. इसकी पुष्टि लोगों के अनुभवो तथा प्रयोग द्वारा हुई है. विभिन्न लोगों तथा अनुसंधान तत्वों के साथ कई प्रकार की प्रविधियों द्वारा जॉच की गयी.

- **जीवन एक प्रयोगशाला:** हमारा संपूर्ण जीवन ही प्रयोग है. जीवन सीखने और विकासित करने के लिये है. प्रत्येक व्यक्ति को नई समस्याओं का सामना करा पड़ता है और नए समाधान निकालने पड़ते है. संभवत: सारे प्रयोग सफल नही, लेकिन जो एक सफल हो जाता है, वह हमारा जीवन बदल सकता है. वैज्ञानिक प्रयोग हमारे शारीरिक आराम और विलासिता को बढाता है. लेकिन जीवन के लिये किये गये ''पिरामिड वास्तु'' प्रयोग हमारी खुशियां और कल्याण में वृध्दि करता है.

- **वैज्ञानिक अनुसंधान**: आजकल हमारा विश्वास वैदिक ज्ञान में कम और विज्ञान में ज्यादा हो गया हे. लेकिन ३०० वर्षो का वैज्ञानिक अनुसंधान और उसकी धारणा अनंत काल के सार्वभोमिक ज्ञान के महासागर के सामने सिर्फ एक छोटी बूंद जैसी है. वैज्ञानिक अनुसंधान के पहले एक सार्वभौमिक ज्ञान अस्तिव में था और आज भी यह सार्वभोमिक व्यवस्था को नियंत्रित करता है.

- **मानव निर्मित करिश्मा**: ऐसी ही इस संसार में एक मानव निर्मित करिश्मा है ‘‘मिश्र के पिरामिड’’. आज इनकी गणना विश्व के सात महान आश्चर्यो मे की जाती है. ये पिरामिड हजारों वर्षो पहले बनाये गये थे. पिरामिड सदैव से इन लोगों के लिए रहस्यमयी एवं आकर्षण का केंद्र रहे है, जिन्होने इस पर शोध करना चाहा है.

- **पिरामिड का वैज्ञानिक आधार**: पिरामिड पर शोध करने वाले वैज्ञानिक का कहना है कि सभी पिरामिड उत्तर दक्षिण एक्सिस पर बने है अर्थात उन सभी को उत्तरी और दक्षिणी गोलार्घ के प्रभाव का जानकार बनाया गया है. इसका भूचुम्बकत्व व ब्रम्हांडिय तरंगो से विशिष्ट प्रबंध है. उत्तर और दक्षिण गोलार्धो की मिलने वाली रेखा पृथ्वी कि चुम्बक रखा है. चुम्बकिय शक्तियां विधुत तरंगो से सीधी जुडी हुई है. जो की ब्रम्हांड में बिखरी मैगनेटोस्पीयर में विद्यमान चुंबकीय किरणो के करने की क्षमता पिरामिड में है. यही किरणे एकत्रित होकर अपना प्रभाव अंदर विद्यमान वस्तुओ या जीवधारियो पर डालनी है.

- **पिरामिड का आकार**: पिरामिड के आकार कि विवेचना करने पर पता चलता है कि इसके आधार को ऊँचाई के आधे भाग से भाजित करने पर फलित पूर्ण इकाई नहीं

होता है बल्कि ३.१४२५ आता है जो कि (π) पाई में मान के बराबर है, इससे यह पता चलता है कि पिरामिड बनाने वालो को पता था कि पृथ्वी गोल है.

- **पिरामिड और पंचतत्व**: इन पंच महातत्वों के अनुपातिक सही सम्मिश्रण से ''बायो इलेक्ट्रिक एनर्जी'' की उत्पति होती है, जिससे मनुष्य को उत्तम स्वास्थ्य, धन एवं एश्वर्य की प्राप्ती होती है.

- **मिश्र का अंक विज्ञान:** प्राचिन मिश्र के अंक अत्यंत महत्व के है. उनमें गुप्त अर्थ छिपे हुए है. मिश्र के लोगो को वजन और दूरी नापने की कुशल विधि ज्ञात थी. आधुनिक गणित में भी उसकी कुछ गणताएँ प्रयुक्त की जाती है. जैसे ३६०°, ६० सेकंद का एक मिनट, ६० मिनट का एक घंटा आदि. धरती के घुमने की भी उनके पास विकसित जानकारी थी.

- **मूल आकार**: भिन्न भिन्न आकारों से प्राणी जीवन प्रभावित होता रहा है. प्रचिन काल से विद्वानो ने विभिन्न आकारों के प्रभावों के बारे में जानकारियां दी है. ज्यामितिय आकार की रचना के लिए कम से कम तीन सीधी रेखाएँ खिचना अनिवार्य है. जिसमे त्रिकोण का निर्माण होता है. ज्यामिति में इसे एक मूल आकार मानते है. दूसरा मूल आकार वृत है तो अनंत कोण बनता है. त्रिकोण को शक्ति, उर्जा संपन्नता का प्रतिक माना जाता है. जबकि वृत्त शांति एवं सुंदरता का प्रतिक होता है.

- **वास्तु दोष निवारण हेतु पिरामिड के उपयोग**: क्षेत्र को ऊजावान बनाने के लिए सही दिशा तथा सही क्रम से पिरामिड का उपयोग करना चाहिए. वास्तु शास्त्र का मूल उद्देश्य ब्रम्हाण्ड स्थित सकारात्मक ऊर्जा को अपने जीवन एवं आसपास के वातावरण में संचार कर अपने जीवन को स्वस्थ, संपन्न एंव खुशहाल बनाता है.

- **पिरामिड का प्रभाव**: आकाशीय ऊर्जा इसकी चोटी पर एकत्र होकर सभी ओर दिवारों पर समतल रूप से फैल जाती है. ऐसा पिरामिड के आधार के उचित स्थिति में बने होने पर होता है. पिरामिड में उपस्थित तरंगों, जड एवं चैतन दोनो पर समान रूप से प्रभाव डालती है.

- **पिरामिड पावर**: वैज्ञानिक प्रयोगों से यह प्रमाणित हो गया है कि पिरामिड के अंदर विलक्षण किस्म की ऊर्जा तरंगे लगातार काम करती रहती है और पिरामिड के इस गुण को ''पिरामिड पावर'' की संज्ञा दी जा सकती है.

- **पिरामिड के प्रकार**: पिरामिड अनेक चमत्कारी शक्तियों से युक्त होता है. इसके द्वारा आप अपना जीवन सुखमय बना सकते है. पिरामिड पॉच प्रकार के होते है और इन पिरामिडों का अलग अलग उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयुक्त किया जाता है–

  १. पत्थर का पिरामिड

  २. लकड़ी का पिरामिड

  ३. कांच का पिरामिड

  ४. प्लास्टिक का पिरामिड

  ५. तांबे का पिरामिड

निष्कर्ष

पिरामिड की रहस्यमयी ऊर्जाओं को जानने का बहुत प्रयास किया गया है. जिसके अनेक सिध्दांत और एक महत्वपूर्ण आकृति वाला यंत्र है. जो सूर्य और बाह्य अंतरिक्ष से पृथ्वी तक पहुॅचने वाली ब्रम्हाण्डीय ऊर्जा से संपादित होता है.

हमारे ऋषिमुनियों एवं वैज्ञानिकों द्वारा ये प्रमाणित सत्य है की हमें सबसे ज्यादा सकारात्मक ऊर्जा उत्तर–पूर्व एवं पूर्व दिशा से मिलती है.

पिरामिड यंत्र की अधिकतम सकारात्मक ऊर्जा का लाभ पाने के लिए हम इसे अपने घर, ऑफिस अथवा फैक्ट्री के उत्तर–पूर्व अथवा पूर्व दिशा में स्थापित कर सकते है.

इसकी सत्यता की पुष्टि के लिए हमने पिरामिड को कई घरों एवं ऑफिसों के उत्तर–पूर्व भाग में स्थापित किया और इसके कई महीनों के निरिक्षण पश्चात उपरोक्त निष्कर्ष के हमने सकारात्मक परिणाम के अनुभव किये.

पाठ क्र. ७

ग्रन्थसूची

१. विश्व प्रसिध्द मिथक एंव पुराण कथाएं द नेमिशरण मिततल प्राकाशन, दिल्ली

२. पिरामिड शक्ति के चमत्कार – डॉ विजय ठाकुर, डॉ राज उपाध्याय प्रकाशक, श्री गजानन पुस्तकालय, सूरत

३. विज्ञान भारती– पिरामिड वास्तु विशेषांक, जबलपुर.

४. फेंगशुई एर्न्सस– विजयलक्ष्मी मिनोचा, प्रकाश सृष्टि पब्लिर्शस एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली.

५. पिरामिड यंत्र – डॉ धारा भट्, प्रकाशक फ्यूचर फोस्र पब्लिकेशन, वडोदरा.

६. पिरामिड शक्ति– डॉ रविकान्त, प्रकाशक आरोग्य मंदिर जोधपूर

७. द कम्पलीट पिरामिड्स– मार्क लेहनर, प्रकाशक द अमेरिकन यूनिवर्सिटी इन केरो प्रेस, केरो, इजिप्त.

८. द पिरामिड पावर कीट– पामेला बाल, प्रकाशक – आर्कटूरस, लंदन.

९. आर्ट एण्ड हिस्ट्री ऑफ इजिप्त– बॉन्ची, फ्लोरेंस इटली.

१०. पिरामिड एनर्जी द फिलॉसाफी ऑफ गॉड, द साइन्स ऑफ केन. प्रकाशन– डी. सी. शर्मा, नई दिल्ली.

११. इजिप्त–उलबेटो सिलीओटी, प्रकाशक थॉमस एण्ड हुडसन

१२. द ओरियन मिस्ट्री–रोबर्ट बाउबल एण्ड एडरिअन गिल्बर्ट प्रकाशक –क्राउन ट्रेड पेपर्स बेक्स, न्युयार्क.

१३. पिरामिड एंव मन्दिर वास्तु– डॉ भोजराज द्विवेदी. प्रकाशक– डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा. लि.

१४. वास्तु ३६०— डॉ धारा भट्ट, प्रकाश परकेअर इन्डस्ट्रीझ.

१५. वास्तु एंवं काया वास्तु — डॉ. के. सी. अग्रवाल प्रकाशक, मंजुल पब्लीशिंग हाउस प्रा. लि.

१६. पिरामिड यंत्र— डॉ. बी. आर. चौधरी, प्रकाशक एक्युप्रेशर हेल्थ केअर सिस्टम.

१७. वास्तु फॉर हारमनी — नरेश सिंगल, प्रकाशक— स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि.

१८. पिरामिड शक्ति एंव वास्तु— पं. गोपाल शर्मा, प्रकाशक डायमंड पॅकिट बुक्स प्रा.लि.

१९. पिरामिड वास्तु— प्रो. डॉ. धारा भट्ट प्रकाशक परकेअर इंडस्ट्रीज.

२०. पिरामिड एंव मंदिर वास्तु, डॉ भोजराज द्विवेदि

२१. वास्तु उर्जा का प्रकाश, श्री ई. रामेश्वर प्रभाद

२२. पिरामिड अपनाए, सुख समृध्दि पॉए, पं. कमल राधाकृष्ण व श्रीमाली

२३. वास्तु में बदलते जीवन, श्री संजीव अग्रवाल और श्री अश्विनी कुमार, प्रा. डॉ. धारा भट्ट

२४. संकेतस्थल — www.ayramidsanywhere.com संस्थापक श्री ब्रम्हश्री परतजी

२५. संकेतस्थल — www.shubhurja.com संस्थापक श्री रविन्द्र शर्मा.

26- संकेतस्थल — www.vastuinternational.com

27- संकेतस्थल — www.vatsuanywhere.com

28- संकेतस्थल — www.wikipedia.com

29- संकेतस्थल — www.trypyramid.com

30- संकेतस्थल — www.history.com

31- संकेतस्थल — www.webdunia.com

पाठ क्र. ८

अनुबंध – शब्दावली

मिश्र की सभ्यता और संस्कृति पूरे विश्व में चर्चा का विषय है. उस समय अंकित चित्रावली के गूढ रहस्य को समझने के लिए शब्दावली का ज्ञान परम आवश्यक है.

- **अमुलेट्स:** मृत्यु के पश्चात शव को सुरक्षित रखने से पहले उसे कई तांत्रिक आभुषणो से अलंकृत किया जाता है. वे सभी अमुलेट्स कहलाते है.
- **अमुन:** अमुन को राजाओं का देवता माना गया है. इनका सम्बंध सूर्य देवता से अधिक है, इसलिए इन्हे अमन–रे भी पुकारा जाता है.
- **अनुबिस:** अनुबिस रहस्य के देवता कहलाते है. जब मनुष्य इहलोक को भोगकर परलोक जाता है तो वहॉ मृत लोगो का मार्गदर्शन तथा रक्षा अनुबिस करते है.
- **अतुम:** अतुम देवता सिर पर मुकुट धारण किए रहते है, जो अस्त होते सूर्य को दर्शाते है.
- **बास्टेट:** बास्टेट प्रसन्नता की देवी है. ये सम्पूर्ण मानव समाज की रक्षा का कार्य करती है. इनकी शरीराकृति स्त्री की ओर सिर बिल्ली के समान होता है.
- **बेस**: एक दैत्य है, लेकिन यह स्त्री, पुरूष एवं बच्चो को नुकसान पहॅुचाने के बजाय उनकी रक्षा करता है.
- **फील्ड ऑफ इरू:** बुक ऑफ गेट्स– एक पवित्र धार्मिक ग्रंथ है. मृत्यु से पहले सभी लोग को यह किताब पढनी अनिवार्य है, ताकि परलोक में उनका प्रवेश सरल हो सके.

- **बुसिरिस**: बुसिरिस मिश्र का एक प्राचिन नगर है. इस नगर में राजा ओसिरिस ने कई वर्षो तक शासन किया था. आसिरिस राजा के नाम पर ही नगर का नाम पडा है.
- **कोनोपिक जार्स:** कोनोपिक जार्स के अंतर्गत चार जारों की आकृति भिन्न होती है. मनुष्याकृति, गरूडाकृति, सियाराकृति और वानाकृति. मृत शरीर को सुरक्षित रखते समय उसके आंतरिक भागों– हृदय, गुर्दे, आमाशय और आतों को इन जारों में रखा जाता है.
- **कारटौचे:** कारटौचे धातु से निर्मित एक शक्तिशाली फंदा है जिससे अपराधी राजाओं को दंडित किया जाता था.
- **हारमेसिज**: हारमेसिज सूर्य देवता के मानव रूप है. इन्हे उदित सूर्य का प्रतिक माना जाता है, जो स्फिगस की तरह दिखते है.
- **हाराखटी**: हाराखटी मिश्र के लिए एक वरदान देवता है.
- **होरोयरीज:** होरोयरीज बाज के रूप में है. ये होरस के बुध्दत्व का प्रतिनिधित्व करते है. इदफ स्थान पर इनका अधिक प्रसार माना गया है.
- **होपोक्रेटीज**: होपोक्रटीज हारस देवता के बचपन का प्रतिक है. किसी भी जहरीले जानवर जैसे सांप, बिच्छु आदि के काटने पर इन देवता की आराधना की जाती है. य विषैले जानवरों का जहर नष्ट कर देते है.
- **हेडजेट:** सफेद रंग के एक लम्बे मुकुट को हेडजेट कहते है. यह सामान्यत: मिश्र के बडे बडे अधिकारियों के सिर पर सुशोभीत होता है.
- **हेका:** हेका छडी के आकार का होता है. राजा ओसिरिस राजदंड एवं राजिन्ह के रूप में प्राय: प्रयोग करते थे.

- **हेसः** शुध्द जल को पवित्र रखने के पात्र को हेस कहते है. यह अंडकार होता है.
- **होरसः** होरस ओसिरिस एवं रानी आईसिस के पुत्र है. इनका मुख बाज की तरह है, इसलिए इन्हे बाजमुख भी कहते है.
- **आईसिसः** आईसिस मिश्र की प्रधान तथा प्रसिध्द पौराणिक चरित्र है. ये आकाश के देवता होरस की माता और राजा ओसिरिस की पत्नी है.
- **काः** का चिन्ह मानव शरीर की आत्मा का प्रतिक है इस चिन्ह का तात्पर्य यह है दोनों हाथो को ऊपर करने से जीवन में नई चेतना एवं शक्ति का संचार होता है.
- **खेपरीः** मिश्री संस्कृति में मकडी को खेपरी कहते है. इसे बहुत शुभ माना जाता है. यह उगते सूर्य का प्रतिक है. इससे समस्त पृथ्वी ऊर्जा युक्त होती है.
- **खोनसूः** यह आकृति चंद्रदेव के बाल्यावस्था की है. शीतलता प्रदान करने वाले खोनसू देवता थेबीज, खोनस, अमन एवं नट के सुयोग्य पुत्र माने जाते है.
- **लोटसः** लोटस शब्द का अर्थ कमल का फुल होता है, जो ऐश्वर्य खुशहाली तथा उत्साह का प्रतिक है.
- **मेनेटः** मेनेट गले मे पहना जाने वाला एक हार होता है. यह तांत्रिक शक्तियों से युक्त एक विशिष्ट आभूषण है.
- **हेलियो पोलिसः** हेलियो पोलिस एक सुंदर प्राचिन शहर है. जो लोवर इजिप्ट में बसा हुआ था.
- **इम्होटपः** इम्होटप मिश्र के एक प्राचिन वास्तुशास्त्री हो इनकी उपस्थिति तृतीय रावंश काल में मानी जाती है.
- **कुशः** यह एक पौराणिक इजिप्सियन शब्द है जिसके नाम पर कुश राष्ट्र की स्थापना की गई थी.

- **निलोमीटर:** यह नील नदी में आने वाली बाढ मापने का एक यंत्र है. निलोमीटर का निर्माण किसी धार्मिक स्थल में बैठकर किया जाता है.
- **मेम्फिस:** मेम्फिस लोवर इजिप्त का एक प्राचीन शहर है, अब इसका नाम परिवर्तित कर के नेष रख दिया गया है.
- **नन:** नन नामक देवी सृष्टि की उत्पत्ति के समय से अस्तित्व में थी. विभिन्न द्वीपो में पूजा जाने के कारण ये वहॅा का प्रतिनिधित्व करती है.
- **ओसिरिस:** ओसिरिस मिश्र के प्रमुख देवता माने जाते है. इन्हे परलोक का सम्राट भी कहते है.
- **पापेरूस:** पापेरूस एक पौधा है. इससे कागज बनाया जाता है. इसके पत्ते और तने लेखनकार्य में उपयोगी है.
- **पताह:** पताह देवता पुरूषो के ममीकरण का कार्य करते है. इन्हे मेम्फिस का निर्माता भी कहते है.
- **पिरामिड:** यह एक चतुष्कोणीय विशेष आकृति है. इसका निर्माण मृत राजा महाराजाओं का शव रखने के लिए किया जाता है.
- **रे:** रे सूर्य देवता का मानवीकरण है.
- **ऑक्सिडेंट:** ऑक्सिडेंट सूर्यास्त का प्रतिक है, इसलिए इसे पश्चिम दिशा कहते है.
- **फेरोज:** फेरोज मिश्र का एक प्राचिन शब्द है, जिसका अर्थ बहुत बडा महल होता है.
- **प्रोनेज:** प्राचिन और विशाल मंदिर या मकबरा प्रोनेज कहलाते है.

- **पिरामिडिओनः** पिरामिडिओन याने वास्तविक पिरामिड के सबसे ऊपरी भाग मे एंटिना के रूप में लगाया जाता है. यह सूर्य से मिलने वाली ऊर्जा को एकत्रित करके पिरामिड शक्ति निर्मीत करता है.
- **पिरामिड टेक्स्टः** पिरामिड टेक्स्ट् एक धार्मिक पुस्तक है. इसमे कई शक्तिशाली मंत्रो का वर्णन किया गया है. इसे मृत शरीर पर किए जाने वाले संस्कारो के समय पढा जाता है, जिससे मृतात्मा को शांति मिलती है.
- **वेयिंग ऑफ द हार्टः** मिश्रवासियो का मानना है कि आत्मा हृदय मे परिवर्तित हो जाती है. इसी हृदय को ईश्वर के समक्ष एक पवित्र भाव द्वारा तोला जाता है. यह क्रिया वेयिंग आफ द हार्ट कहलाती है.
- **सन ऑफ होरसः** ये प्रसिध्द योध्दा होरस के चार पुत्र है. चारो की आकृति भिन्न भिन्न होती है. एक मनुष्य के शिर वाला, दुसरा गरूड के सिरवाला, तिसरा सियार के सिर वाला और चौथा वानर के सिर वाला है.
- **बुक ऑफ डेडः** बुक ऑफ डेड मिश्र की एक प्राचिन धार्मिक पुस्तक है. इसमे स्वर्ग प्राप्ति के विभिन्न मार्गो का सचित्र वर्णन किया गया है.
- **विजयरः** विजयर राजाओं को दी जाने वाली एक उपाधि है.
- **सेरडेबः** मृत व्यक्ति का शव रखने के लिए बनाए गए विशेष कक्ष को सेरडेब कहते है.

पाठ क्र. ९

छात्र परिचय

- नाम: **राकेश सी. केजरीवाल**
- जन्मदिनांक: ०९/०५/१९७३
- पता: ए/१०१, सेफीविला, जे. पी. ठाकुर मार्ग,
  गणेश मंदिर के सामने, भायंदर (पश्चिम),
  ठाणे—मुंबई ४०११०१
- ई—मेल: rkejriwal1973@gmail.com
- मोबाईल: 99877 54312
- शिक्षण: बी.कॉम.— चेन्नई कॉलेज ऑफ कामर्स,
  मुंबई विश्वविद्यालय
  एस.एम.सी.व्ही.ए. — वेदिक वास्तु
- व्यवसाय: वेदिक वास्तु एवं नक्षत्र ज्योतिश कंसलटंट
  शेअर ब्रोकर व समाज सेवा
- अनुभव: वास्तु व नक्षत्र शास्त्र — पॉच से अधिक वर्ष
- रूचि: समाज सेवा, शोध कार्य
- परिचय: मेरा जन्म मुंबई में हुआ और अब तक कि सारी परवरिश यहॉ ही हुई है. मैने मेरे जिवन में काफी उतार चढाव अनुभव किये है. हमेशा से मेरी यही इच्छा रही की अपने जिवन काल में मै समाज के लिए कुछ नया कर सकू, जिससे उनका जिवन और कुशल और बेहतर बन सके. इस कार्य को मंजिल तक पहुॅचाने के लिए वास्तु जैसे विषय का ज्ञान प्राप्त किया और अब मै चाहता हुॅ कि इस वास्तु विज्ञान का हर जन मानस तक पहुॅचाऊ.